कृष्णदास संस्कृत सीरीज १४९

उड्डामरेश्वरतन्त्रम्

'शान्तीश्वरी' हिन्दी-टीकासंवलितम्

टीकाकार

डा० बृजेशकुमार शुक्ल

कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

कृष्णदास संस्कृत सीरीज
१४९

उड्डामरेश्वरतन्त्रम्

'शान्तीश्वरी' हिन्दी-टीकासंवलितम्

सम्पादक तथा टीकाकार
डॉ० बृजेशकुमार शुक्ल
प्रवक्ता : संस्कृत-विभाग
लक्ष्मणपुर विश्वविद्यालय, लखनऊ



कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
१९९६

प्रकाशक : कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : प्रथम, वि० सं० २०५३
मूल्य : रू० ४०·००

के० ३७/११८, गोपाल मंदिर लेन
पो० बा० नं० १११८, वाराणसी–२२१००१
(भारत)

अपरं च प्राप्तिस्थानम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

के० ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
पो० बा० नं० १००८, वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन { आफिस : ३३३४५८
निवास : ३३४०३२

KRISHNADAS SANSKRIT SERIES
149
****

UDDAMARESHWAR TANTRA

WITH

'SHANTISHWARI' HINDI COMMENTARY

By
DR. BRIJESH KUMAR SHUKLA
Lecturer : Department of Sanskrit
Lucknow University, Lucknow.



KRISHNADAS ACADEMY
VARANASI–221001
1996

Publisher : Krishnadas Academy, Varanasi
Printer : Chowkhamba Press, Varanasi
Edition : First, 1996

Oriental Publishers & Distributors
K. 37/118, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 1118, Varanasi–221001
(INDIA)



Also can be had from :
Chowkhamba Sanskrit Series Office
K. 37/99, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 1008, Varanasi–221001 (India)
Phone { Office : 333458
Resi. : 334032

समर्पणम्

डॉ० भानुकृष्णप्रतापनारायणसिंह

को

सादर समर्पित

—बृजेशकुमार शुक्ल

प्रकाशकीय

तनोति विपुलानर्थान् तत्त्वमन्त्रसमन्वितान् ।
त्राणञ्च कुरुते यस्मात् तन्त्रमित्यभिधीयते ॥

तत्त्व (ज्ञान) एवं मन्त्र (रहस्य) से समन्वित विपुल अर्थों का जो विस्तार करता है तथा जिसके द्वारा सर्वतोभावेन हमारा त्राण (रक्षा) होता है, उसे सुविज्ञ मनीषी 'तन्त्र' नाम से अभिहित करते हैं ।

आज :तन्त्र' अथवा 'तान्त्रिक' शब्द सुनते ही जनसामान्य के मानसपटल पर सहसा एक कुत्सितभाव-सा उदित होता है । परञ्च 'तन्त्र' की उपर्युक्त परिभाषा से वस्तुतः ऐसा कुछ है नहीं । पुनः यह हुआ कैसे ? और कब से ?

भारतीय संस्कृति की सर्वोपरि धुरि है—'निगम' एवं 'आगम' । निगम का अर्थ है 'वेद' और आगम का 'शास्त्र' । 'शास्त्र' को तन्त्र भी कहते हैं । इसीसे 'तन्त्र' शब्द प्रायः शास्त्र, संहिता, सिद्धान्त, नियम, विधान, ज्ञान, विज्ञान, अनुष्ठान, आगम आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है ।

अज्ञानतावश 'तन्त्र' एवं 'तान्त्रिक' कालक्रम से लोक में गर्हित होते गये । इसमें अनेक प्रकार के अनेकानेक मौलिक कारण हैं ।

(१) सर्वप्रथम तो सम्प्रति पारम्परिक पद्धति से समुचित शास्त्राध्ययन का अभाव है । पुनः वैदेशिक विपरीत संस्कृति के अन्धानुकरण के कारण अपने शास्त्रों व संस्कृति के प्रति मन्दमति समुदाय की आस्था व विश्वास का अभाव । साथ ही तथ्यतः अन्वय-व्यतिरेक बुद्धि से वस्तुविवेचन, चिन्तन, मनन, अन्वेषण प्रवृत्ति का अभाव । तथा आज के विषम विषाक्त सामयिक चाकचक्य से भुग्ननेत्र विक्षिप्त मानव का उपरि-उपरि हल्की-फुल्की, सस्ती, श्रमरहित, मिथ्या सुख-सुविधाओं के प्रति धन-प्रमाद के बल पर विमोह एवं मूढ़ आकर्षण । इस पर भी दूरगामी दुष्परिणामों की ओर अनभिज्ञता, अदूरदर्शिता, उदासीनता, उपेक्षा आदि अनेकानेक समसामयिक मुख्य कारण हैं ।

(२) विदेशी आक्रमण तथा उन-उन शासकों प्रशासकों द्वारा भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रों को समूल नष्ट करने का घृणित प्रयास ऐतिहासिक प्रधान कारण हैं । इसके परिणामस्वरूप शास्त्रों का, शास्त्रीय ग्रन्थों का नष्ट होना, संस्कृति का प्रभावित होना, परम्पराओं का छिन्न-भिन्न होना, सामाजिक मान्यताओं का बाधित होना, पूर्वापर सम्बन्धों का विच्छेद होना, भयवश, बाध्यता से अपनत्व से विमुख होना आदि प्रबल मौलिक कारण हैं ।

(३) शाक्तसम्प्रदाय की वाममार्गी शाखा 'कौलाचार' के द्वितीय मतानुयायी उत्तरकौलों द्वारा भ्रमवश प्रत्यक्ष योनि की उपासना तथा पञ्चमकारों

का उन्मुक्त प्रयोग करना, जबकि यह एक रहस्यात्मक विषय है। और इसी शाखा के प्रथम मतावलम्बी पूर्वकौल 'श्रीचक्रस्थ' योनि के उपासक हैं।

(४) साधना उपासना के बिना ही गुरुपरम्पराविहीन अदीक्षित 'तन्त्र-मन्त्र-यन्त्रों' का प्रयोग व प्रदर्शन आदि, मात्र जीविकोपार्जन के निमित्त बड़े धड़ल्ले से करना, स्वयं को बड़ा ओझा, सिद्ध-बुद्ध आदि प्रमाणित करना, दर-दर भटक-भटक कर खूब स्वार्थसिद्धि करना, जनसामान्य को भ्रमित करना, आदि महान् अनर्थकारी, शास्त्रविरोधी, प्रमादी, भयङ्कर प्रत्यक्ष कारण हैं।

वस्तुतः देवता के स्वरूप, गुण, कर्म आदि का जिनमें चिन्तन मनन किया गया हो, तथा पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम और स्तोत्र—इन पाँच अङ्गों वाली पूजा का जिनमें सविधि विधान हो; उन ग्रन्थों को 'तन्त्रग्रन्थ' कहते हैं।

(क) देवताभेद से तन्त्र प्रथमतः तीन प्रकार के माने जाते हैं—१. वैष्णवतन्त्र, २. शैवतन्त्र, ३. शाक्ततन्त्र। इन तीन तन्त्रों के भी सम्प्रदाय अथवा आचार्य भेद से विविध भेद-प्रभेद होते गये।

(ख) पुरुषार्थचतुष्टय का साधक समग्र तन्त्रवाङ्मय प्रारम्भिक त्रिवर्ग-फल प्राप्त्यर्थ प्रथम १. क्रियात्मक भाग तथा चरममोक्षफल प्राप्त्यर्थ द्वितीय—२. ज्ञानात्मक भाग के रूप में विद्वानों द्वारा द्विधा विभक्त किया गया।

(ग) सात्विक-राजस-तामस त्रिगुण भेद से प्रथम १. सात्त्विक अधिकारियों के लिए जिन आगमों का प्रयोग किया जाता है उन्हें केवल 'तन्त्र' कहते हैं। द्वितीय २. जो राजस प्रवृत्तिवालों के लिए हैं उन्हें 'यामल' कहा जाता है। और तृतीय ३. तामस-प्रवृत्तिवालों के लिए जो हैं उन्हें 'डामर' कहा गया है।

(घ) व्यावहारिक दृष्टि से एवं विषयवस्तुभेद से मर्मज्ञ-मनीषियों ने इसे चार भागों में विभक्त किया १. सैद्धान्तिक भाग, २. मन्त्रप्रयोगात्मक भाग, ३. यन्त्राधृत भाग तथा ४. मन्त्रौषधियोगात्मक भाग। इनका पृथक्-पृथक् पूर्ण विवेचन ग्रन्थ के भूमिका-भाग में विद्वान् लेखक द्वारा स्पष्ट रूप में कर दिया गया है।

एतावता, संस्कृत वाङ्मय के प्रकाशक '**कृष्णदास अकादमी**' अपने आदर्शों के अनुरूप दुर्लभ तन्त्र-ग्रन्थों का प्रकाशन भी करती है। इसी शृङ्खला में प्रस्तुत ग्रंथ उड्डामरेश्वरतन्त्र तथा गुरुपरम्परागतप्राप्त तन्त्रज्ञान के धनी प्रख्यात विद्वान् श्री बृजेशकुमार जी शुक्ल भी हैं। विद्वानों के ग्रंथ ज्ञान-वर्धक होते हैं, अतः यह समस्त विद्यानुरागियों, तन्त्रजिज्ञासुओं एवं ग्रन्थागारों के लिए समान रूप से उपादेय है, संग्रहणीय है।

—प्रकाशक

आत्मनिवेदन

तान्त्रिक वाङ्मय इतना विशाल तथा रहस्यपूर्ण है कि इसका सर्वान्त प्राप्त करना कठिन ही नहीं असम्भव है। परन्तु अनेक विद्वानों तथा तान्त्रिकों से परामर्श करके 'उड्डामरेश्वरतन्त्रम्' को हिन्दी भाषा में सर्वप्रथम प्रस्तुत करने के लिए पुनः सम्पादन के साथ-साथ 'शान्तीश्वरी' टीका का निर्माण मेरे द्वारा सम्भव हुआ है। इस तन्त्र के अन्तर्गत प्रयुक्त वनस्पतियों तथा खनिज-पदार्थों के यथासम्भव अंग्रेजी नाम भी दे दिये गये हैं, जिससे इस तन्त्र पर कुछ वैज्ञानिक प्रयोग भी किये जा सकते हैं। हिन्दी-भाषा में प्रस्तुत यह तन्त्र-ग्रन्थ अवश्य ही लोकप्रिय बनेगा, क्योंकि अनेक प्रयोग तथा मन्त्र मानव-जीवन के कल्याण में विहित किये गये हैं।

'उड्डामरेश्वरतन्त्रम्' के इस कार्य में प्रेरणादायक गुरुप्रवर डॉ० अशोक कुमार कालिया, रीडर संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्व-विद्यालय, लखनऊ धन्यवाद के पात्र हैं। महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज जी की पुस्तकों से मुझे नितान्त सहायता प्राप्त हुई है, अतः मैं श्री कविराज जी के चरणों में श्रद्धावनत हूँ। इसके अतिरिक्त तन्त्रविज्ञान के पुरोधा स्व० उपेन्द्रनारायणाचारी का मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूँ जिनसे एतद्विषयक ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ। इस तन्त्र के सर्वप्रथम सम्पादक पं० जगद्धर जाडू शास्त्री की भी कृतज्ञता वहन करता हूँ। अन्त में अपने पूज्य पिता श्री प्यारेलाल शुक्ल तथा पूजनीया माता श्रीमती चन्द्रकला शुक्ला के चरण-पङ्कज-रज ग्रहण करता हुआ मैं सुधीजनों से सविनम्र अनुरोध करता हूँ कि प्रस्तुत टीका में हुई त्रुटियों तथा दुरूहार्थों से मुझे अवगत करायें, जिससे अगले संस्करण में उनका परिमार्जन किया जा सके। डॉ० बी० के० पी० एन० सिंह, रीडर भौतिक विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ का हृदय से आभारी हूँ जिनकी कृपा के बिना यह कार्य सम्भव ही नहीं था। अन्त में प्रकाशक महोदय श्री विट्ठलदास जी गुप्त, जो गोलोकवासी हो चुके हैं, को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इसका प्रकाशन सहर्ष स्वीकार किया।

विदुषां वशंवद

लखनऊ,

महानवमी, २०४९ वि०

डॉ० बृजेशकुमार शुक्ल

आमुख

भारतीय धर्मंपरम्परा में श्रुति, स्मृति, पुराण तथा तन्त्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कदाचित् इसी आधार से सम्पृक्त चार युगों की कल्पना भी मनीषियों द्वारा की गयी, जिसमें चारों में से एक-एक की प्रधानता रही। सत्ययुग में श्रुति (वेद), त्रेतायुग में स्मृति, द्वापरयुग में पुराण तथा कलियुग में तन्त्र की प्रधानता का प्रत्याख्यान नहीं किया जा सकता है। इसी प्रकार श्रुति केवल ब्राह्मण के लिए, स्मृति ब्राह्मण तथा क्षत्रिय के लिए, पुराण ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के लिए एवं तन्त्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सबके लिए उपयोगी है। जिस प्रकार स्मृति-पुराणों की सृष्टि वेदों से ही हुई है उसी प्रकार तन्त्र भी वेद से निर्गत हुए हैं। अथर्ववेद में तान्त्रिक अनुष्ठानों की चर्चा की गयी है। तन्त्र का विशेष सम्बन्ध साधारण जन-जीवन से रहा है, लौकिक परम्पराओं, विश्वास की मान्यताओं तथा अलौकिक शक्ति के प्रादुर्भाव पर तन्त्र के चरण सर्वदा स्थापित रहे हैं। तन्त्र केवल लौकिक त्रिवर्ग धर्म, अर्थ एवं काम के फल की ही प्राप्ति नहीं कराता है वह मोक्ष का भी साधन है। इसी आधार पर सम्पूर्ण तन्त्र-वाङ्मय को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—(१) ज्ञानात्मक भाग तथा (२) क्रियात्मक भाग। ज्ञानात्मक भाग में किसी देवता-विशेष की आराधना और तत्सम्बन्धी ज्ञान की प्राप्ति करके साधक मुक्त हो जाता है। इस भाग में आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा यौगिक विषयों का विवरण उपलब्ध होता है। तन्त्र के प्रारम्भिक ज्ञान हेतु क्रियात्मक भाग का अनुष्ठान करना होता है किन्तु साधक उनकी सिद्धियों और विकृतियों में लिप्त नहीं होता तब उसे ज्ञानात्मक भाग की सम्प्राप्ति होती है। जो साधक केवल क्रियात्मक भाग में आसक्त होकर मन्त्र की सिद्धियों और विकृतियों का समाज में प्रदर्शन करते है, वे कभी मुक्त नहीं होते। तान्त्रिक सिद्धियों का सत्कार्यों में प्रयोग करने से अवश्य पुण्य और स्वर्ग की प्राप्ति सम्भव है। अतएव तान्त्रिक अनुष्ठानों का प्रयोग सत्कार्यों में ही करना चाहिए।

तान्त्रिक वाङ्मय अत्यन्त समृद्ध है। यद्यपि तन्त्र-साहित्य का अति प्राचीन रूप क्या रहा होगा ? यह तथ्य स्पष्ट नहीं है तथापि आथर्वण विद्या के रूप में तन्त्रसाहित्य वैदिककाल में भी उन्नतिशील था, इस कथन में विप्रतिपत्ति का प्रश्न ही नहीं है। तन्त्र, आगम तथा संहिता प्रायः एक अर्थ में व्यवहृत किये जाते हैं। आज प्रकाशित रूप में अनेक तन्त्र, आगम तथा संहिता ग्रन्थों का अवलोकन किया जा सकता है परन्तु तन्त्र-साहित्य का एक बड़ा भाग अभी भी पाण्डुलिपि के रूप में विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थागारों में अमुद्रित ही सुरक्षित है। अनेक तन्त्र-ग्रन्थों के नाम विभिन्न सूचियों तथा उद्धरणों के द्वारा ज्ञात होते हैं जो आज अनुपलब्ध हैं। तन्त्र-साहित्य को चार भागों में विषय की दृष्टि से रखा जा सकता है—

(क) सैद्धान्तिक तन्त्र-साहित्य।
(ख) मन्त्रप्रयोगात्मक तन्त्र-साहित्य।
(ग) यन्त्राधृत तन्त्र-साहित्य।
(घ) मन्त्रौषधियोगात्मक तन्त्र-साहित्य।

(क) सैद्धान्तिक तन्त्र-साहित्य—में तन्त्र के वे ग्रन्थ आते हैं जिनमें तान्त्रिक-रहस्य, सिद्धान्त, मन्त्रोद्धार, यन्त्रोद्धार, देवताओं के मन्त्र आदि का सांगोपांग निरूपण रहता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न देवताओं की पूजा-विधि का भी विवेचन समुपलब्ध रहता है। उदाहरणार्थ—अभिनवगुप्त का तन्त्रालोक सात्वत-संहिता, ज्ञानार्णवतन्त्र आदि। इस तान्त्रिक साहित्य का विस्तार विभिन्न सम्प्रदायों में देखा जाता है। यथा—शैव, शाक्त, वैष्णव, कौल आदि।

(ख) मन्त्रप्रयोगात्मक तन्त्र-साहित्य—में मन्त्रों के प्रयोग से देवता की सिद्धि, काम्यप्रयोग, षट्कर्मनिरूपण आदि का वर्णन पाया जाता है। जैसे—मन्त्रमहोदधि।

(ग) यन्त्राधृत तन्त्र-साहित्य—में विभिन्न देवताओं के यन्त्रों का उद्धार, पूजन तथा मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, वन्ध्या-पुत्रप्राप्ति आदि के यन्त्रों का वर्णन पाया जाता है जिन्हें यथाविधि धारण करने से उक्त

काम्य की सिद्धि होती है। इन यन्त्रों में बीजमन्त्र, आकृति अथवा अङ्क (सङ्ख्या) का विशेष महत्त्व होता है। जैसे--'यन्त्रचिन्तामणि' आदि ग्रन्थ इसी कोटि में आते हैं।

(घ) मन्त्रौषधियोगात्मक तन्त्र-साहित्य--में मन्त्रों के साथ अनेक दिव्य ओषधियों का काम्य प्रयोग वर्णित होता है। मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित अथवा विना मन्त्र के ही ऐसी ओषधियाँ वशीकरण, मारण, उच्चाटन, विद्वेषण मोहन आदि कर्म-सिद्धि में सफल होती हैं। इन ओषधियों का प्रयोग यथा-विधि दिन, नक्षत्र के अनुसार करने पर अभीष्ट फल अवश्य मिलता है। विना मन्त्र के ओषधि अथवा क्रिया का प्रयोग टोटके के रूप में भी जाना जाता है। 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' इसी कोटि में आता है। इसके अतिरिक्त 'कामरत्नतन्त्र', 'दत्तात्रेयतन्त्र' तथा 'उड्डीशतन्त्र' ऐसे ही तान्त्रिक ग्रन्थ हैं।

'उड्डामरेश्वर तन्त्र'—मन्त्रौषधियोगात्मक तन्त्र-साहित्य के अन्तर्गत आता है। अतः यहाँ मन्त्रौषधियोगात्मक तन्त्र-साहित्य के कतिपय ग्रन्थों का परिचय अभीष्ट है—

१. आकाशभैरवकल्प :--यह तन्त्र उमा-महेश्वर के संवाद रूप में वर्णित है। इसके ७८ अध्यायों में उत्साह प्रक्रम, पूजनविधि, उत्साहाभिषेक, वशीकरण, आकर्षण, मोहन, विद्वेषण, उच्चाटन, स्तम्भन द्रावण प्रयोग, मातृकावर्णन, दुर्गाकल्प, भैरवविधि, चामुण्डाविधि, धूमावति प्रयोग, महालक्ष्मी, महासरस्वती प्रयोग, ओषधि-मन्त्रविधि, त्वरिताविधि, नारसिंहीविधि तथा शरभहृदय आदि मुख्य विषय वर्णित हैं। इस तन्त्र में लगभग २००० श्लोक हैं। इस तन्त्र का विषय सैद्धान्तिक, मन्त्रप्रयोगात्मक तथा मन्त्रौषधियोगात्मक है। नेपाल-दरवार की पाण्डुलिपियों के सूचीपत्र सं० ३।२४६ (ग) में इस तन्त्र की मातृका सुरक्षित है।

२. आसुरीकल्प :--इसमें लगभग ८० श्लोक प्राप्त होते हैं। आसुरी देवी के मन्त्रों द्वारा मारण, मोहन, स्तम्भन, वशीकरण आदि क्रियाएँ वर्णित हैं। यह ग्रंथ वाराणसी से प्रकाशित भी है। आसुरीकल्प के नाम से कई पाण्डुलिपियाँ विभिन्न पुस्तकालयों में पायी जाती है जिनमें श्लोक-संख्या १५०,

३०, ४२०, ५१०, २२० आदि है। सम्भवतः ये ग्रन्थ विभिन्न तन्त्रों से उद्धृतश्लोकों के द्वारा संकलित हैं।

३. आचार्य-योगमाला :--इस ग्रन्थ का रचनाकाल १२४० ई० माना जाता है। इसकी रचना नागार्जुन ने की थी। इसे 'योगरत्नावली' अथवा 'योगरत्नमाला' नाम से भी पुकारा जाता है। इसमें वशीकरण, मारण, स्त्री-आकर्षण, स्तम्भन तथा अन्य आश्चर्यपूर्ण विषयों की सिद्धि का उपाय प्रतिपादित है। इस ग्रन्थ का भी प्रकाशन हो चुका है। इसमें श्लोकों की संख्या ४०० अथवा ४५० प्राप्त होती है।

४. उड्डामरतन्त्र :—इसमें १५ पटल हैं तथा ५५० श्लोक प्राप्त होते हैं। उड्डामरतन्त्र में अञ्जनाधिकार, पुरुषवश्याधिकार, भूतभैरवसाधना तथा मन्त्रकोष आदि मुख्य विषय निरूपित हैं। इसकी पाण्डुलिपि 'एशियाटिक सोसाइटी आफ बङ्गाल' के सूचीपत्र सं० ५८४८ के अनुसार सुरक्षित है।

५. उड्डीशतन्त्र :--उड्डीशतन्त्र के नाम से कई तन्त्रग्रन्थ प्राप्त होते हैं, जिनमें श्लोकों तथा विषय की भिन्नता प्राप्त होती है। कई स्थानों से इस तन्त्र का प्रकाशन भी हो चुका है। गौरीशंकर के संवाद के रूप में वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, शान्तिक, पौष्टिक, स्तम्भन, कर्णनाश, नेत्रनाश, शोषण आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है। बीकानेर महाराजा के ग्रन्थागार सं० १३६२ में उड्डीशतन्त्र की एक पाण्डुलिपि विद्यमान है जिसमें वशीकरण, मोहन, स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण, शान्तिक, चक्षुहानि, मनोहानि, कर्णनाश, अन्धीकरण, जलस्तम्भन, वधिरीकरण, भूतज्वरकरण, उन्मत्तीकरण, सर्वाकर्षण, वृक्ष, फसल आदि नष्ट करना, गर्भ धारण आदि विषय वर्णित हैं। 'नोटिसेज आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्टस' बाई, राजेन्द्रलाल मित्र के सूचीपत्र सं० ९८९ में भी इसी तन्त्र की एक प्रति है। इसमें लगभग ४९६ श्लोक हैं तथा ११ पटलों में यह समाप्त हुआ है। इसमें देवी-देवताओं के मन्त्रों का अतिरिक्त से उल्लेख है।

'एशियाटिक सोसाइटी आफ बङ्गाल' की लाइब्रेरी में एक उड्डीशतन्त्र की प्रति सुरक्षत है, जिसमें चिन्तामणिमन्त्र का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त

अञ्जनाधिकार, भूतवाद, मन्त्रपटल, वशीकरण, स्त्रीभगसंकोचन, लिंगपाटव, स्वरपटल तथा चाण्डालीपटल का वर्णन है। (द्रष्टव्य ग्रन्थ सं० ५८३०)।

इस तन्त्र के अन्य नाम 'उड्डीशशास्त्र', रावणोड्डीश, रावणोड्डीशडामर, तन्त्रसार अथवा उड्डामरतन्त्र, वीरभद्रतन्त्र, उड्डीशवीरतन्त्र आदि हैं।

६. **उलूककल्प या उलूकतन्त्र** :—'एशियाटिक सोसायटी आफ बङ्गाल' के कैटालाग (सं० ६१५७) में उलूककल्प की पाण्डुलिपि मिली है। इसमें ७२ श्लोक हैं। भैरव तथा पार्वती के संवाद के रूप में उल्लू पक्षी के विभिन्न अङ्गों के प्रयोग बताये गये हैं जिनसे वशीकरण, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि षट्कर्म किये जा सकते हैं। इसमें उल्लू के अङ्गो का मिश्रण कई दिव्य ओषधियों के साथ किये जाने का उल्लेख है। इसका अपर नाम उलूकतन्त्र भी है। इसकी पाण्डुलिपियाँ अन्यत्र भी सुलभ हैं।

७ **कक्षपुटतन्त्र** :—इसकी मातृकाएँ विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थागारों में उपलब्ध होती हैं। इसके विषय में कहा है कि शाम्भव शक्ति, यामल, डामर तथा कौलतन्त्रों का दर्शन करके और अन्यान्य लोगों के द्वारा सुनकर सिद्धनागार्जुन ने साधकों के हितार्थ २० पटलों में इस तन्त्र की रचना की। इसमें वशीकरण, स्तम्भन, मोहन, आकर्षण, रोग उत्पन्न करना, मारण, विद्वेषण, पशु फसल तथा धन का नाश करना, यक्षिणी-साधन, चेटक-मन्त्र, अञ्जन अदृश्य करना, गुटिका-साधन, खेचरीसिद्धि, मृतकोत्थापन, निधिदर्शन होना, स्तम्भन आदि विषय सङ्ग्रहीत हैं। यह 'मातृका इण्डिया आफिस लन्दन' में सुरक्षित है। राजेन्द्रलाल मित्र के सूचीपत्र ग्रन्थ सं० २५६ में एक २१ पटल वाले तन्त्र का उल्लेख प्राप्त होता है जिसमें १८०० श्लोक हैं।

'एशियाटिक सोसायटी आफ बङ्गाल' के सूचीपत्र ग्रन्थ सं० ६०७४ में इस तन्त्र की पाण्डुलिपि में २० पटल तथा २००० श्लोक सङ्कलित हैं। इसके अतिरिक्त अनेक पाण्डुलिपि-संग्रहों में 'कक्षपुटतन्त्र' की पाण्डुलिपि प्राप्त होती है। इसे सिद्धचामुण्डा, सिद्धनागार्जुनीय, कक्षपुटी आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

८. **कनककल्प** :—भगवान् महादेव के द्वारा कथित इस तन्त्र में २५ श्लोक प्राप्त होते हैं। इसमें तान्त्रिक षट्कर्म यथा वशीकरण, मोहन मारण, उच्चाटन, स्तम्भन, आकर्षण तथा शान्तिक कर्म प्रतिपादित हैं। ग्रन्थ में कनक (धतूरा) का कल्प, सर्वोच्चाटन तथा रजत-करण की विधि कही गयी है। इसकी प्रति 'मातृका एशियाटिक सोसायटी आफ बङ्गाल' में सुरक्षित है। —(दृष्टव्य एशि० सो० बं० कै० सं० ६०६९)

९. **काकचण्डेश्वरीतन्त्र** :—'कैटालाग आफ पामलिफ एण्ड सेलेक्टेड पेपर मैन्युस्क्रिप्टस् इन दरबार लाइब्रेरी नेपाल' के अनुसार यह तन्त्र ७०० श्लोकों में विरचित है। इसमें श्री भैरवदेव तथा काकचण्डेश्वरी देवी का संवाद है। तन्त्र का विषय ओषधियों पर आधारित रसायनशास्त्र है, जिसमें पारद का प्रभाव विशेषरूपेण वर्णित है। इस तन्त्र की अपूर्ण प्रति 'इण्डिया आफिस लाइब्रेरी' (इण्डिया आफिस कैटालाग ग्रन्थ सं० २५/८७) में भी सुरक्षित है, जिसमें त्रैलोक्यसुन्दरी गुटिका, जारणपटल, शाल्मलिकल्प, ब्रह्मदण्डीकल्प, हरीतकीकल्प, काकचण्डेश्वरीकल्प, पौटलीपादरसेन्द्र तथा जलकापाद, तालकेश्वर आदि विषय संगृहीत हैं। इसे 'काकचण्डेश्वरीकल्प' नाम से भी अभिहित किया गया है।

१०. **कामरत्नतन्त्र** :—इस तन्त्रग्रन्थ का प्रकाशन 'प्राच्य प्रकाशन' वाराणसी से हो गया है। इसके रचयिता नित्यनाथ माने जाते हैं। यह श्री शिव-पार्वती संवाद के रूप में लिखा गया है। इस तन्त्र में विविध विषय यथा—ओषधि-उत्पादन, वशीकरण, आकर्षण, राजवशीकरण, स्त्रीवशीकरण, सङ्ग्रामजय, व्याघ्रादिनिवारण, स्तम्भन, शुक्रस्तम्भन, मोहन, मारण, उच्चाटन, रञ्जन, वीर्यवर्धन, लिङ्गवर्धन, गाढीकरण, लोमशातन, विद्वेषण, अरिष्टनाशन, गोमहिषीदुग्धवर्धन, नानाकौतुक, विषनिवारण, निधिदर्शन, मृतसञ्जीविनीविद्या, वाजीकरण, भगबन्धन, भगमोचन, गर्भधारण, यक्षणी-साधन तथा रसादिशोधन आदि प्रमुख हैं। विभिन्न रूपों में इसकी पाण्डुलिपियाँ अनेक हस्तलिखत ग्रन्थागारों में सुरक्षित हैं। डॉ० रामकुमार राय ने इस तन्त्र का हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया है।

११. कुक्कुटकल्प (तन्त्र) :—'एड्रिस्क्रिप्टिव कैटालाग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स इन क्यूरेटर्स आफिस लाइब्रेरी आफ त्रिवेन्द्रम्' के अनुसार इस तन्त्र में २०० श्लोक हैं। इसमें वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन, स्तम्भन, मोहन, ताडन, ज्वरबन्धन, जलस्तम्भन, सेनास्तम्भन आदि विषय वर्णित हैं। षट्कर्मों की सिद्धि हेतु मन्त्रों का प्रयोग किया गया है।

[द्रष्टव्य त्रिवेन्द्रम् कैटालाग ग्रन्थ सं १०२५ (ख)]

१२. कौतुकचिन्तामणि :—'डिस्क्रिप्टिव कैटालाग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल' के ग्रन्थ सं० ६५६४ के अनुसार इसमें १०२५ श्लोक हैं। विषयरीक्षा के प्रकार सर्वप्रथम इसमें वर्णित हैं। इसके अतिरिक्त स्तम्भन, वशीकरण, वाजीकरण, कृत्रिम वस्त्रोत्पादन, वृक्षदोहन, परसेनास्तम्भन, अङ्गारभक्षण, गृहदाहस्तम्भन, खड्गस्तम्भन, अग्निस्तम्भन, जलस्तम्भन, बीर्यस्तम्भन, स्त्रीवशीकरण, पतिवशीकरण, आकर्षण, अञ्जनकरण, अदृश्यविद्या, पाषाणचर्वण, मत्स्य-सर्पकरण आदि विषय संग्रहीत हैं।

१३. कौतूहल विद्या :—इसमें श्लोक-सङ्ख्या १४९ है। 'नोटिसेज आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स, बाई राजेन्द्रलाल मित्र' के कैटालाग ग्रन्थ सं० ६१४ के अनुसार इसमें इन्द्रजाल का वर्णन है। यह पार्वतीपुत्र नित्यनाथ के द्वारा रचित है। इसमें बकरी, मोर, कबूतर आदि बनाने की विविध ओषधियों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त वशीकरण के मन्त्र भी कहे गये हैं।

१४. गौरीकञ्चुलिका :—इस ग्रन्थ में ३३० श्लोक-सङ्ख्या पायी जाती है। 'नोटिसेज आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स, बाई राजेन्द्रलाल मित्र' के कैटालाग ग्रन्थ सं० ४७६ के अनुसार इसमें ओषधियों के खोदने तथा उत्पाटन की तिथि, वार, नक्षत्र आदि का नियम, नक्षत्रों में रोग होने पर उसके भोग, काल तथा साध्यासाध्य का विचार, दाद, प्रमेह आदि रोगों को दूर करने की चिकित्सा आदि विषय हैं। इसके अतिरिक्त 'एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल' की लाइब्रेरी में 'गौरीडामरतन्त्र' की भी एक प्रति प्राप्त होती है, जिसमें पार्वती-ईश्वर संवाद के रूप में आकर्षण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, मारण आदि का वर्णन है।

१५. दत्तात्रेयतन्त्र :—यह तन्त्र अनेक स्थानों से प्रकाशित हो चुका है तथा हिन्दी में अनूदित भी है। इस तन्त्र की अनेक पाण्डुलिपियाँ विभिन्न ग्रन्थागारों में सुरक्षित हैं, जिनमें विषय-भेद कुछ अन्तर से जरूर दिखायी देता है परन्तु प्रायः समानता है। इसमें २२ या २० पटल प्राप्त होते हैं। श्लोक-सङ्ख्या ६०० अथवा इससे कम और कहीं अधिक भी है। ईश्वर तथा दत्तात्रेय के संवाद के रूप में मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, वशीकरण, आकर्षण, इन्द्रजाल कौतुक, यक्षिणीसाधन, रसायन, कालज्ञान, निधिदर्शन, वन्ध्यागर्भधारण आदि विषय इसमें प्रतिपादित हैं। कहीं-कहीं इस तन्त्र में ३० अथवा २६ या २५ पटल भी मिलते हैं।

१६. प्रयोगसार :—'एडिस्क्रिप्टिव कैटालाग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स इन क्यूरेटर्स आफिस लाइब्रेरी आफ त्रिवेन्द्रम्' (ग्रन्थ सं० ९९६ से १००१) में इस तन्त्र की कई पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। यह गोविन्द चिरचित है तथा पूर्व और उत्तर दो भागों में विभक्त है। इसके दोनों भागों में २७-२७ पटल हैं। श्लोक-सङ्ख्या किसी प्रति में ३७५०, किसी में ४००० किसी में ३५०० तथा किसी में १४०० या १३०० भी मिल जाती है। इसमें वशीकरण, स्वप्नविचार, वन्ध्यादोषनिवारण तथा विषविचारण आदि कृत्य वर्णित हैं।

१७ बृहद्भूतडामरतन्त्र :—'एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल' की लाइब्रेरी (कैटालाग ग्रन्थ सं० ५८६०) में इसकी एक पाण्डुलिपि सुरक्षित है। इसमें २५ पटल हैं तथा उन्मत्तभैरवी और उन्मत्तभैरव का संवाद वर्णित है। इसमें इन्द्रजाल, सुन्दरीध्यान, भूतिनीसाधन, महाभूत-चेटिकासाधन आदि विषय संगृहीत हैं।

१८. ब्रह्माण्डकल्प :—'ए कैटालाग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स इन दि लाइब्रेरी आफ महाराजा बीकानेर' (२५५१) के अनुसार इसमें ऐन्द्रजालिक प्रयोग, पारे से अनेक ओषधियों का निर्माण, रजत-निर्माण तथा अनेक अद्भुत, क्रियाओं का वर्णन है।

१९. **महोड्डीशतन्त्र** :—'नोटिसेज आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स सेकेण्ड सीरिज, बाई म० म० हरप्रसाद शास्त्री' (१/२८३) के अनुसार इसमें ५०० श्लोक हैं। पार्वती-परमेश्वर के संवाद के रूप में उन्मादन, विद्वेषण, अन्धीकरण, मूकीकरण, शरीरसङ्कोचन, स्तब्धीकरण, भूतज्वरोत्पादन, शस्त्र-स्तम्भन, शास्त्र-दूषण, जल-शोषण, दधिमधुनाशन, हस्त्यश्वोन्मत्तीकरण, सर्वविषनाशन, बेतालसिद्धि, पादुकासिद्धि आदि विषय प्रतिपादित हैं।

२० **माहेश्वरीविद्या (महेश्वरतन्त्र)** :—'एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल' की लाइब्रेरी में इसकी एक पाण्डुलिपि है। इसमें ऐन्द्रजालिक मन्त्र, वशीकरण, मारण तथा उच्चाटन आदि षट्कर्म भी वर्णित हैं। 'माहेश्वर तन्त्र' के नाम से एक लघुकाय पुस्तक भी प्रकाशित हुई है, जिसमें अधिकांश श्लोक 'दत्तात्रेयतन्त्र' से गृहीत हैं।

२१. **मृडानीतन्त्र** :—'एडिस्क्रिप्टिव कैटालाग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स इन क्यूरेटर्स आफिस लाइब्रेरी त्रिवेन्द्रम्' (कैटालाग-१०१९ (क)) के अनुसार इसमें ३८० श्लोक हैं और शिव-पार्वती के संवाद रूप से रसायन प्रक्रिया का उल्लेख है, जिससे स्वर्ण का निर्माण किया जा सकता है। इस पाण्डुलिपि में द्वादश पटल ही हैं। यह अनुमान लगाया जाता है कि यह तन्त्र और अधिक परिमाण में रहा होगा।

२२. **रसरत्नाकर** :—पार्वती तथा शङ्खगुप्त के पुत्र नित्यनाथ सिद्ध के संवाद के रूप में रचित यह ग्रन्थ पाँच खण्डों में पूर्ण हुआ है। जिसमें रसखण्ड, रसेन्द्रखण्ड, सिद्धखण्ड आदि प्रमुख हैं। इसमें मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, पारदगुटिका-साधन आदि अनेक प्रयोग वर्णित हैं। इसकी दो प्रतियाँ 'एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल' (६५४६,६५४९) की लाइब्रेरी में सुरक्षित हैं।

२३. **साधनमुक्तावली** :—'नोटिसेज आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स, बाई राजेन्द्रलाल मित्र' के कैटलाग (३१८४) के अनुसार यह ग्रन्थ नवकविशेखर रचित कहा जाता है तथा इसमें ११३२ श्लोक हैं। इसके अन्तर्गत

षट्कर्म में प्रयुक्त ऋतु, तिथि, वार, नक्षत्र तथा योग का वर्णन, ओषधि-मूलोत्पाटन, वशीकरण तथा उसके चक्र, विजयलाभ, सौभाग्यहरण, हस्त्युन्मादद्दूरीकरण, स्तम्भन, वाजीकरण, वन्ध्यागर्भधारण, शत्रुवंशोत्पाटन, स्त्री-सौभाग्यकरण तथा अनेक चक्रों का प्रतिपादन है।

२४ **हरमेखला** :—इसकी पाण्डुलिपियाँ त्रिवेन्द्रम् लाइब्रेरी (९९९-ख) 'एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल' (६५५५) लाइब्रेरी तथा नेपाल दरवार (२।१६) लाइब्रेरी में सुरक्षित हैं। इस ग्रन्थ में लगभग ४०० श्लोक तथा १३ पटल हैं। इसमें मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, वशीकरण, विद्वेषण आदि तान्त्रिक क्रियाएँ प्रतिपादित हैं। इस ग्रन्थका प्रकाशन भी हो चुका है। कुछ लोगों के अनुसार 'उड्डीशतन्त्र' ही 'हरमेखला' है। परन्तु यह कथन औचित्यपूर्ण नहीं है।

इस प्रकार तन्त्र के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अथवा अप्रकाशित अनुपलब्ध रूप में जाने जाते हैं। मन्त्र तथा ओषधि के प्रयोग से अनेक दिव्य कार्यों का सम्पादन तथा कौतुक उत्पन्न करना प्रायः ऐसे तन्त्र ग्रन्थों का उद्देश्य रहा होगा। यह कहना बहुत कठिन है कि ये तान्त्रिक ग्रन्थ अपने उद्देश्य में कहाँ तक सफल हो पाये हैं, परन्तु लोक में तन्त्र के प्रति श्रद्धा तथा विश्वास के लिए अवश्य उपादेय रहे हैं। इसके अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन ग्रन्थों में लोक-जीवन तथा प्रचलित तत्कालीन लौकिक तन्त्र का शास्त्रीय सम्मिश्रण अवश्य हुआ है। निश्चित रूपेण ऐसे ग्रन्थ वैज्ञानिक शोध के भी विषय हो सकते हैं क्योंकि इनमें अनेक वनस्पतियों, जैविक पदार्थों तथा खनिजों का प्रयोग अत्यधिक किया गया है। संक्षेप में ये तन्त्र बहुत महत्त्वपूर्ण, ध्यान और गवेषणा के विषय हैं।

उड्डामरेश्वर-तन्त्र

'उड्डामरेश्वरतन्त्रम्' का सर्वप्रथम सम्पादन तथा प्रकाशन 'कश्मीर संस्कृत ग्रन्थावली' में किया गया, जिसके सम्पादक पं० जगद्धर जाडू शास्त्री थे, जिसमें अनेक स्थलों पर अशुद्धियों का परिमार्जन आवश्यक था और इसके

अर्थ के बोध हेतु कोई हिन्दी टीका भी नहीं थी। इस संस्करण में १५ पटल हैं। प्रायः अन्य पाण्डुलिपियों में भी इतने ही पटल प्राप्त होते हैं। 'डिस्क्रिप्टिव कैटालाग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट इन द प्राइवेट लाइब्रेरी आफ महाराजा जम्मू एण्ड कश्मीर' के अनुसार इस 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' में १६ पटल हैं। यही बात महामहोपाध्याय श्री गोपीनाथ कविराज जी ने भी 'तान्त्रिक साहित्य' (पृष्ठ ६९-७०) में कही है परन्तु ऐसी कोई पाण्डुलिपि मुझे प्राप्त नहीं हुई।

'उड्डामरेश्वरतन्त्रम्' में किसी वामाचार अथवा दक्षिणाचार तन्त्र के सिद्धान्तों का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है और न इसमें तन्त्र के किसी विषय की आध्यात्मिक या दार्शनिक व्याख्या ही की गई है, अपितु तन्त्र के शुद्ध क्रियात्मक भाग का वर्णन 'उड्डामरेश्वरतन्त्रम्' में उपलब्ध होता है। सम्पूर्ण तन्त्र १५ पटलों में विभक्त है. जिसमें मन्त्रों के साथ ओषधियों का प्रयोग अथवा केवल मन्त्र जप और हवन से अनेक सिद्धियों का उल्लेख किया गया है। विषयों का विभाजन क्रमबद्ध नहीं है। तन्त्र में शान्तिकर्म, वशीकरण, मोहन, उच्चाटन मारण, स्तम्भन, विद्वेषण आदि षट्कर्मों का वर्णन, शत्रुसैन्य-पलायन, अदृश्यकरण, निपातीकरण, यक्षिणी तथा चेटक साधन, कार्यसिद्धि, धनलाभ, सुवर्णलाभ आदि के उपयोगी मन्त्रों का विशद निरूपण किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक रोगों की शान्ति, विषापहरण, कौतुकप्रदर्शन, लिङ्गसंवर्द्धन, योनिसंकोचन आदि क्रियाओं में ओषधि और मन्त्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। इस तन्त्र की विशेषता यह है कि शत्रु इत्यादि के उपद्रव हेतु जहाँ मन्त्रौषधियों का प्रयोग बतलाया गया है वहीं उनकी शान्ति हेतु भी प्रयोग कहे गये हैं। 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' में वन्ध्यागर्भधारण, ज्वरहरण, ज्वरकरण, पिशाचनिवारण, ग्रहनिवारण, अभिषेक आदि का वर्णन भी प्राप्त होता है, जो जन-सामान्य के लिए अतीव उपयोगी है। छठे पटल में शरीर तत्त्वज्ञान निरूपण तथा पञ्चदश पटल में कौतुकादि के प्रयोग नितान्त अस्पष्ट हैं, किन्तु अनेक तन्त्र-ग्रन्थों के अनुसार तथा बुद्धि के द्वारा यथासम्भव अर्थ-सङ्गति लाने का प्रयास किया गया है।

'उड्डामरेश्वरतन्त्र' का आरम्भ ईश्वर तथा देवी (शिव-पार्वती) के संवाद के रूप में हुआ है। यह तन्त्र वीरभद्रेश्वरतन्त्र से समुद्धृत बतलाया गया है, पटलान्त में कहा गया है—'इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्र' तन्त्र का तन्त्र का उल्लेख 'उत्तरसूत्र' के 'निवासतत्त्वसंहिता' भाग में तथा 'ब्रह्मयामलतन्त्र' में १८ शिव शास्त्रों में आता है—

विजयं प्रथमं ह्येषां निवासं तदनन्तरम्।
स्वायम्भुवमतश्चैव वाशुलं तदनन्तरम्॥
वीरभद्रमिति ख्यातम्...... ... .॥—(निवासतत्त्वसंहिता)
"विजयं चैव निवासं स्वायम्भुवमतः परम्।
वाशुलं वीरभद्रं च.................................॥"—(ब्रह्मयामलतन्त्र)

यह 'वीरभद्रतन्त्र' या 'वीरभद्रेश्वरतन्त्र' आज उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' में 'करङ्किणी-तन्त्र' का उल्लेख एक स्थान पर किया गया है—

"करङ्किणीमते तन्त्रे महादेवेन विस्तरात्।"—(उड्डामरेश्वरतन्त्र)

कामशास्त्र के आचार्य वात्सायन मुनि का भी कथन प्रस्तुत तन्त्र में उपलब्ध होता है—

"वात्सायनेन मुनिना प्रोक्तं योगमनुत्तमम्॥"—(उड्डामरेश्वरतन्त्र)

तन्त्र में कामशास्त्र के विषयों यथा योनिसंकोचन, लिङ्गवर्धन, वीर्यस्तम्भन तथा गजहस्तप्रयोग आदि का वर्णन किया गया है। इस तन्त्र के अतिरिक्त एक 'उड्डीशतन्त्र' भी है जिसके कई प्रयोग 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' के सर्वथा अनुकूल हैं। इस प्रकार 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' का स्रोत क्या है? इसका ज्ञान अतीव सन्दिग्ध है। क्योंकि 'वीर भद्रेश्वरतन्त्र' तथा 'करंकिणी तन्त्र' आज प्राप्त नहीं होते हैं। संरचना-काल के अभाव से यह भी कहना असङ्गत है कि प्रस्तुत तन्त्र का विषय 'उड्डीशतन्त्र' से लिया गया है। यह भी हो सकता है कि 'उड्डीशतन्त्र' का विषय 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' से समुद्धृत किया गया हो। भाषा को छोड़ कर 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' की समता 'क्रियो-

ड्डीशतन्त्र' तथा 'दत्तात्रेयतन्त्र' से भी प्राप्त होती है। 'उड्डीशतन्त्र' तथा 'दत्तात्रेयतन्त्र' केवल पद्य में ही लिखे गये हैं जबकि 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' गद्य-पद्य दोनों में लिखा गया है। स्मरणीय है कि 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' के कुछ प्रयोग 'कामरत्नतन्त्र' में भी प्राप्त होते हैं। अतः प्रस्तुत तन्त्र का स्रोत सर्वथा सन्दिग्ध है।

'उड्डामरेश्वरतन्त्र' किस सम्प्रदाय का ग्रन्थ है? इस सन्दर्भ में अन्तः-साक्ष्यों के आधार पर यह दृष्टिगत होता है कि प्रस्तुत तन्त्र में उड्डामरेश्वर (शिव), कंकाली (काली), चामुण्डा तथा गणेश के मन्त्रों की अधिकता है। इसके अतिरिक्त यक्षिणी, चेटक आदि के मन्त्र भी आये हैं। इस प्रकार शैव तथा शाक्त मत से मिश्रित सम्प्रदाय के रूप में इस तन्त्र की स्थिति समझी जा सकती है। सुरसुन्दरी यक्षिणी के साधन-प्रसङ्ग में "वज्रपाणिगृहं गत्वा··" कहकर 'वज्रपाणि' का उल्लेख किया गया है तथा दशम पटल में 'मणिभद्र सिद्धि' का कथन है। ये दोनों तथ्य बौद्ध धर्म के वज्रयान सम्प्रदाय को इंगित करते हैं। किन्तु 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति' इस नियम से 'उड्डामरेश्वरतन्त्र' को शैव-शाक्त मिश्रित सम्प्रदाय का ग्रन्थ मान सकते हैं।

इस प्रकार 'उड्डामरेश्वर तन्त्र' तान्त्रिक प्रयोगों, षट्कर्मों तथा औषधि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस तन्त्र के नवम पटल में यक्षिणियों के अनेक भेद और मन्त्र बतलाये गये हैं, वे अन्यत्र दुर्लभ है। इस तन्त्र में कहीं मन्त्र के संयोग से और कहीं औषधि-प्रयोग से अनेक ऐन्द्रजालिक क्रियाओं का वर्णन है जो कौतूहलपूर्ण और रोचक है। वन्ध्यागर्भधारणादि अनेक प्रयोग मानव-जीवन के लिए उपयोगी हैं। अतः यह तन्त्र मानव के ऐहिक जीवन को सुखमय बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है। इति शम्।



विषयानुक्रमणिका

॥ प्रथमः पटलः ॥

॥ द्वितीयः पटलः ॥

॥ तृतीयः पटलः ॥

॥ चतुर्थः पटलः ॥

॥ पञ्चमः पटलः ॥

॥ षष्ठः पटलः ॥

॥ सप्तमः पटलः ॥

॥ अष्टमः पटलः ॥

॥ नवमः पटलः ॥

॥ पञ्चदशः पटलः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथोड्डामरेश्वरतन्त्रम्

'शान्तीश्वरी' हिन्दीटीकासंवलितम्

प्रथमः पटलः

उड्डीशेन समाकीर्णा योगिवृन्दसमाकुला ।
प्रणम्य शिरसा देवी गौरी पृच्छति शङ्करम् ॥१॥
ईश्वर ! श्रोतुमिच्छामि लोकनाथ ! जगत्प्रभो !
प्रसादं कुरु देवेश ! ब्रूहि धर्मार्थसाधनम् ॥२॥

मङ्गलाचरणम्

श्रीगणेशमहं वन्दे देवीं सरस्वतीं तथा ।
उड्डामरेश्वरं गौरीं नत्वा त्रिपुरसुन्दरीम् ॥
अर्थानां गोपितानामुड्डामरेश्वरस्य च ।
प्रकाशनाय 'शान्तीश्वरीं' बृजेशः कुरुते मुदा ॥

शिवासक्ता मत्ता सुरतविपरीता त्रिनयना
घनाङ्गी तन्वङ्गी कृतभृकुटिभङ्गी स्मितमुखी ।
सखड्गा दिग्वस्त्रा धृतकरनृमुण्डा ह्यभयदा
ललज्जिह्वा काली हसितनृकपाली विजयते ॥

हिन्दी—भगवान् शिव से घिरी हुई तथा योगियों के समूह से परिव्याप्त देवी पार्वती ने सिर से प्रणाम करके अपनी पृच्छा प्रकट करती हुई बोलीं—हे ईश्वर ! लोकनाथ ! संसार के स्वामी ! मुझे सुनने की जिज्ञासा है, अतः मुझ पर प्रसन्नता करें और हे देवेश ! धर्म तथा अर्थ के साधनभूत तन्त्र का वर्णन करें ॥१-२॥

वशीकरणमुच्चाटं मोहनं स्तम्भनं तथा ।
शान्तिकं पौष्टिकं वाऽथ करणानि बहूनि च ॥३॥

चराचर प्राणियों को वश में करना (वशीकरण), प्राणियों की मनःस्थिति का उच्चाटन (उच्चाटन कर्म), संसार को मोहित करना (मोहन), चराचर की गति को रोकना (स्तम्भन), रोगादि की शान्ति (शान्तिक), तथा शरीरादि की पुष्टि (पौष्टिक कर्म) अथवा अन्य बहुत-से कर्म-यथा विद्वेषण, मारण आदि का वर्णन करने की कृपा करें ॥३॥

चक्षुर्हानिं महेशान ! श्रुतिहानिं तथैव च ।
ज्ञानहानिं क्रियाहानिं कीलकञ्च तथापरम् ॥४॥
कार्यस्तम्भं सुरेशान ! शोषणं पूरणं तथा ।
मन्त्रध्यानं विशेषेण तत्सर्वं वद मे प्रभो ॥५॥

हे महेश ! दृष्टि का नाश (नजरबन्दी), श्रवणशक्ति का नाश, ज्ञान (बुद्धि) की हानि (स्तम्भन), कार्य का नाश तथा सर्प आदि का कीलन (कीलक), कार्य का स्तम्भन, किसी वृक्ष आदि का शोषण (सुखाना), पूर्ण करना (पूरण) तथा हे सुरेश ! हे प्रभो ! विशेषरूपेण मन्त्रों के ध्यान का तथा पूर्वोक्त विषयों का कथन करें ॥४-५॥

अन्यच्च विविधं कार्यं प्रसादाद् ब्रूहि भैरव ! ।
यस्य विज्ञानमात्रेण मनुष्यो भुवि दुर्लभः ॥६॥

हे भैरव ! इसके अतिरिक्त अन्य जो विविध तन्त्र के यक्षिणी-साधन आदि कार्य हैं उनका भी प्रसन्नतापूर्वक वर्णन करें, जिसके विशिष्ट (साधन-परक) ज्ञान से मनुष्य इस भूलोक पर दुर्लभ हो जाता है ॥ ६ ॥

ईश्वर उवाच

शृणु त्वं हि वरारोहे ! सिद्धयर्थं यदि पृच्छसि ।
तद् वदिष्यामि ते देवि तत्सर्वं समुदाहृतम् ॥७॥

भगवान् शिव बोले – हे सुन्दरि पार्वति ! यदि सिद्धि की प्राप्ति हेतु यह सब पूछ रही हो तो सुनो, मैं सब-कुछ उद्धृत करके बताऊँगा ॥ ७ ॥

औषधैर्मन्त्रजापैश्च रिपुं हन्यान्न संशयः ।
उड्डीशात् सारमाकृष्य मयोक्तं तव भक्तितः ॥८॥

तुम्हारी भक्ति से मैं उड्डीश तन्त्र से सारवस्तु को निकाल कर कह रहा हूँ जिसके द्वारा औषधि-प्रयोग एवं मन्त्र-जाप से निःसन्देह शत्रु को मारा जा सकता है ॥ ८ ॥

उड्डीशं च नमस्कृत्य रुद्रं चैव सुदुर्लभम् ।
कपर्दिनं विरूपाक्षं सर्वभूतभयापहम् ॥९॥
वक्ष्ये रुद्रोद्भवान् योगान् सर्वशत्रुविनाशकान् ।
तैस्तु प्रयोजितैः सद्यः प्राणान् हन्ति न संशयः ॥१०॥

उड्डीश (शिव), अति दुर्लभ रुद्र (शिव), कपर्दी (शिव), विरूपाक्ष (विषम तीन नेत्रों वाले) तथा सभी प्राणियों के भय को दूर करने वाले शिव को नमस्कार करके भगवान् रुद्र से उत्पन्न शर्वशत्रु-विनाशक योगों का वर्णन कर रहा हूँ । इन योगों का सम्यक् प्रयोग शीघ्र ही निःसन्देह शत्रु के प्राणों का हरण कर देता ही है ॥ ९-१० ॥

॥ अथ तन्त्रविषयाः ॥

प्रथमं भूतकरणं द्वितीयोन्मादनं तथा ।
तृतीयं द्वेषणं चाऽत्र तुर्णमुच्चाटनं तथा ॥११॥
ग्रामोच्चाटं पञ्चमं च जलस्तम्भं च षष्ठकम् ।
वह्नेः स्तम्भकरं चाथ वशीकरणमुत्तमम् ॥१२॥

अन्यानपि प्रयोगांश्च बहून् शृणु वरानने ।
शिवेन कथिता योगा उड्डीशे शास्त्रनिश्चये ॥१३॥

तन्त्र में उल्लिखित विषय—प्रथम भूत-पिशाचादि का मनुष्य में आवेश करना, द्वितीय उन्माद (पागल) बनाना, तृतीय विद्वेषण (झगड़ा) कराना तथा चतुर्थ उच्चाटन (शत्रु का पुत्र, स्त्री आदि से पृथक् दूर प्रस्थान), पञ्चम ग्राम का उच्चाटन तथा षष्ठ जल का स्तम्भन (निरोध), इसी प्रकार अग्नि का स्तम्भन, उत्तम वशीकरण और इसके अतिरिक्त अन्य बहुत-से प्रयोगों को हे वरानने ! तुम श्रवण करो। ये प्रयोग शिव ने उड्डीश नामक शास्त्र (तन्त्र) में निश्चित किये हैं ॥ ११-१३ ॥

अन्धीकरणं मूकीकरणं बधिरीकरणं तथा ॥
भूतज्वरस्य करणमस्त्रशस्त्रस्य दूषणम् ॥१४॥
जलदोषप्रशमनं दध्नो मधुविनाशनम् ।
विनाशं मत्तकरणं गजवाजिप्रकोपनम् ॥१५॥
आकर्षणं भुजङ्गानां मानवानां तथा ध्रुवम् ।
वह्नेर्विनाशनं कुर्यात् पर्णानां हि विनाशनम् ॥१६॥
गर्दभस्यात्मकरणं परकायप्रवेशनम् ।
वेतालपादुकासिद्धिमुल्वकाज्ज्वलनं तथा ॥१७॥
अन्यान् बहुप्रयोगांश्च रौद्रान् रोमप्रहर्षणान् ।
विद्यामन्त्रप्रयोगादीन् औषधांश्चाभिचारिकान् ॥१८॥

शत्रु को अन्धा करना, मूक बनाना तथा बहरा करना, भूतज्वर उत्पन्न करना, अस्त्र-शस्त्र को दूषित करना (स्तम्भित करना), जल के दोष को दूर करना, दही, मधु (मदिरा) को बिगाड़ना (नष्ट करना), हाथी, घोड़ों को नष्ट करना, मदमत्त बनाना तथा प्रकुपित करना, सर्पों तथा मनुष्यों का निश्चितरूपेण आकर्षण करना, अग्नि एवं पेड़ों की पत्तियों का विनाश, गधे का आत्मकरण, दूसरे के शरीर में प्रवेश, वेताल, पादुका (खड़ाऊँ) की सिद्धि, मशाल जलाना आदि अन्य बहुत-से रोमाञ्चित करने वाले रौद्र प्रयोगों का मैं वर्णन करूँगा। विद्या, मन्त्र के प्रयोग आदि तथा आभिचारिक (षट्कर्म में प्रयुक्त) औषधियाँ भी बताऊँगा ॥ १४-१८ ॥

गुप्तागुप्ततराः कार्या रक्षितव्याः प्रयत्नतः ।
उड्डीशं यो न जानाति स रुष्टः किं करिष्यति ॥१९॥
सुमेरुं चालयेत्स्थानात्सागरैः प्लावयेन्महीम् ।
सूर्यं च पातयेद् भूमौ नेदं मिथ्या भविष्यति ॥२०॥

औषधियाँ सर्वदा गुप्त रखनी चाहिए तथा प्रयत्नपूर्वक इनकी रक्षा करनी चाहिए। उड्डीश (उड्डामरेश्वर) तन्त्र को जो व्यक्ति नहीं जानता, वह रुष्ट (अप्रसन्न) होकर क्या करेगा ? अर्थात् वह कुछ भी करने में समर्थ नहीं है। उड्डीश तन्त्र को जानने वाला साधक सुमेरु पर्वत को अपने स्थान से विचलित कर सकता है, समुद्रों के द्वारा पृथ्वी को बहा सकता है और सूर्य को आकाश से पृथ्वी पर गिरा सकता है; यह कुछ भी मिथ्या नहीं है ॥ १९-२० ॥

यथैवेन्द्रस्य वज्रं च पाशं हि वरुणस्य च ।
यमस्य च यथा दण्डं कुबेरस्य गदा यथा ॥२१॥
वह्नेः शक्तिर्यथा प्रोक्ता खड्गस्तु निर्ऋतेर्यथा ।
यथा वायोश्चांकुशं हि त्रिशूलं शूलपाणिनः ॥२२॥
स्कन्दस्य च यथा शक्तिर्विष्णोश्चक्रं सुदर्शनम् ।
तथैते च महायोगाः प्रयुक्ताः शत्रुमारणे ॥२३॥

जिस प्रकार इन्द्र का वज्र, वरुण का पाश, यमराज का दण्ड, कुबेर की गदा, अग्नि की शक्ति, निर्ऋति का खड्ग, वायु का अंकुश, शिव का त्रिशूल, स्कन्द की शक्ति तथा भगवान् विष्णु का सुदर्शन-चक्र सर्वथा शत्रुघाती हैं, वैसे ही ये तन्त्रोक्त प्रयोजित योग भी शत्रु-मारण में फलदायी हैं ॥ २१-२३ ॥

अनिवृत्ते निवर्तन्ते अमोघा नात्र संशयः ।
सन्तुष्टेन प्रयुक्तेन सिद्ध्यन्ति सुविचारतः ॥२४॥

ये प्रयोग अमोघ हैं, इसमें कोई संशय नहीं है, किन्तु असन्तुष्टता-पूर्वक इनका प्रयोग फलों का निवर्त्तन कर देता है अर्थात् फलों को लौटा देता है। स्वच्छ विचार से सन्तुष्ट व्यक्ति के द्वारा प्रयुक्त ये महायोग सिद्धि प्रदान करते हैं ॥ २४ ॥

रतानां करणं वक्ष्ये शत्रुसाधनमुत्तमम् ।
येनैव कृतमात्रेण भूतो गृह्णाति मानवम् ॥२५॥

सुरत (मैथुन) करण तथा उत्तम शत्रु-साधन (वशीकरण, उच्चाटन, मारण के द्वारा शत्रु को अपने अनुकूल करना) को भी मैं बताऊँगा। एक ऐसे प्रयोग का वर्णन करूँगा, जिसके करने मात्र से मनुष्य को भूत ग्रहण कर लेता है ॥ २५ ॥

॥ अथ भूतावेशकरणम् ॥

निम्बकाष्ठं समादाय चतुरंगुलमानतः ।
शत्रुविष्ठासमालिप्तं तथा नाम समालिखेत् ॥२६॥
चिताङ्गारेण तन्नाम्ना धूपं दद्यान्महेश्वरि !
चितान्तःसंस्थितो भूत्वा यस्य गात्रमुदाहरेत् ॥२७॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यामष्टोत्तरशतं जपेत् !
भूतो गृह्णाति तं शीघ्रं मन्त्रेणानेन मन्त्रितः ॥२८॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते सर्वभूताधिपतये विरूपाक्षाय नित्यं क्रूराय दंष्ट्रिणे विकरालिने ग्रहयक्षभूतवेतालेन सह शङ्कर मनुष्यं दह दह पच पच गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय हुं फट् स्वाहा ।

शत्रु पर भूताविष्ट प्रयोग—चार अंगुल परिमाण की नीम (Azadirachta Indica) की लकड़ी लेकर चिता के कोयले से उस पर शत्रु का नाम लिखे और शत्रु की विष्ठा (मल) से लिप्त करके ऊपरलिखित 'ॐ नमो भगवते............हुँ फट् स्वाहा' मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हुआ चिता के अङ्गारों में धूप दे, पुनः चिता के मध्य में रख कर उस शत्रु के नाम को लेता हुआ कृष्ण पक्ष की अष्टमी से चतुर्दशी तक नित्य उक्त कर्म करता हुआ १०८ बार मन्त्र का जप करे तो शीघ्र ही मन्त्र से मन्त्रित योग शत्रु को भूताविष्ट कर देता है ॥ २६-२८ ॥

॥ अथ स्वस्थीकरणम् ॥

प्रत्यानयं यदीच्छेत् तस्यैषा क्रियते क्रिया ।
दापयेद् देवमीशानं घृतेन वचया सह ॥२९॥
गुग्गुलुं प्रददेद् धूपं घृतमिश्रं समन्ततः ।
मन्त्रेण मन्त्रयित्वा तु ततः स्वास्थ्यं भवेत्किल ॥३०॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमः शिवाय शान्ताय प्रभाय मुक्ताय देवाधिदेवाय शुभ्रबाहवे व्याधिं शमय शमय अमुकः स्वस्थो भवतु नमोऽस्तु ते । इति स्वास्थ्य मन्त्रः ॥

शत्रु का भूतावेश दूर करना—यदि शत्रु के भूतावेश का प्रत्यानयन दूर करना हो तो उसकी यह क्रिया करनी चाहिए। सर्वप्रथम भगवान् शिव को घृत-मिश्रित वच (Acozeao calamus) का धूप देना चाहिए तत्पश्चात् लिखित मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय..........नमोऽस्तु ते' से अभिमन्त्रित घृतमिश्रित गुग्गुलु का धूप भूताविष्ट शरीर के चारों ओर देना चाहिए। इससे निश्चित स्वास्थ्य लाभ होगा ॥ २९-३० ॥

॥ अथ ज्वरकरणम् ॥

अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं भुवि दुर्लभम् ।
येनैव कृतमात्रेण ज्वरो गृह्णाति मानवम् ॥३१॥

अब मैं पृथ्वी पर दुर्लभ एक अन्य प्रयोग को बतला रहा हूँ, जिसके करने से मनुष्य ज्वरग्रस्त हो जाता है ॥ ३१ ॥

निम्बकाष्ठाकृतिं कृत्वा चतुरंगुलमानतः ।
तस्या हृदि विषोन्मत्तराजिकालवणैस्तथा ॥३२॥
नाम संलिख्य प्रकृतौ पाच्यमानायां ततः परम् ।
ततस्तु शत्रुनाम्ना च अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥३३॥
ततः स प्रहरार्धेन ज्वरभूतेन गृह्यते ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ बकामुखा चामुण्डा अमुकस्य क्षीरमांसशोणितभोजिनी अमुकं खः खः ज्वरेण गृह्ण गृह्ण गृह्लापय गृह्लापय हुं फट् स्वाहा ।

चार अंगुल परिमाण की नीम (Azadirachta Indica) की लकड़ी की आकृति (शत्रु की आकृति) बनाकर उसके हृदय में वत्सनाभ विष (Aconitum Ferox), धत्तूरा (Datura Stramonium), राई (Eruca Sativa) तथा सेंधा नमक (Sodii Cleridum) से शत्रु का

नाम लिखकर पुतली को अग्नि में तपावे अर्थात् गर्म करें तथा शत्रु के नाम से निर्दिष्ट मन्त्र 'ॐ बकामुखा..................फट् स्वाहा' को १०८ बार जपे तो वह शत्रु आधे पहर के अन्तर्गत ज्वरभूत से ग्रस्त हो जाता है। मन्त्र में 'अमुक' के स्थान पर उसी विभक्ति, वचन में शत्रु का नाम लेना चाहिए ॥ ३२-३३ ॥

प्रत्यानयं यदीच्छेत तस्यैषा क्रियते क्रिया ॥३४॥
दुग्धस्नातनामाक्षराणि तदा स्वस्थो भवेदिति ।

यदि उक्त प्रयोग को शान्त करना चाहे तो यह क्रिया करनी चाहिए। शत्रु के नामाक्षरों को भूर्जपत्र आदि पर कुङ्कुम से अङ्कित करके गाय के दूध से स्नान करायें, तो वह शत्रु स्वस्थ हो जाता है ॥३४॥

॥ अथोच्चाटनम् ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं भुवि दुर्लभम् ॥३५॥
येन विज्ञानमन्त्रेण शत्रोरुच्चाटनं भवेत् ।

अथ उच्चाटन प्रयोग--अब पृथ्वी पर दुर्लभ एक अन्य प्रयोग का कथन कर रहा हूँ जिसके ज्ञान से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है ॥३५॥

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म गोमयस्य तथैव च ॥३६॥
क्षारञ्चापि समादाय काकजङ्घासमन्वितम् ।
क्षिपेच्छिरसि शत्रूणां तूर्णमुच्चाटयेद्रिपुम् ॥३७॥

ब्रह्मदण्डी (Tricholepsis Glaberrima), चिताभस्म तथा गोबर (Cow-dung) का क्षार (Salt) लेकर काकजंघा (Leea Hirta) को मिलायें। यह चूर्ण शत्रुओं के सिर पर डालें तो शीघ्र ही शत्रुओं का उच्चाटन हो जाता है ॥ ३६-३७ ॥

ततः संस्नापयेदेनं गोक्षीरेण समन्वितम् ।
मुण्डनं चाथ केशानां ततः स्वस्थो भवेद् ध्रुवम् ॥३८॥

शत्रु को गाय के दूध (Cow-milk) से स्नान करायें तथा बालों का मुण्डन करायें तो वह स्वस्थ हो जायेगा ॥ ३८ ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि शत्रोरुच्चाटनं वरम् ।
धूपं निर्भेदकं नाम स्वयं रुद्रेण भाषितम् ॥३९॥

शत्रु के उच्चाटन की श्रेष्ठ विधि जो स्वयं रुद्र के द्वारा निर्भेदक धूप के रूप में कही गयी है, उसे मैं कह रहा हूँ ॥ ३९ ॥

ब्रह्मदण्डी समूला च काकजङ्घासमन्विता ।
निर्मोकं सर्पराजस्य धूपमुच्चाटयेद् रिपुम् ॥४०॥

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी (Tricholepsis Glaberrima) को लेकर काकजङ्घा (Leea Hirta) में मिलावें तथा इसी में साँप की केंचुल भी पीसकर मिला दें। इसकी धूप देने से शत्रु शीघ्र उच्चाटित होते हैं ॥ ४० ॥

सर्पकञ्चुकमादाय कृष्णोरगशिरस्तथा ।
निखनेद् यस्य च द्वारे तमुच्चाटयते हठात् ॥४१॥

सर्प की केंचुल तथा काले साँप का सिर लेकर जिस शत्रु के दरवाजे पर गाड़े तो हठपूर्वक उसका उच्चाटन हो जाता है ॥४१॥

ब्रह्मदण्डी सुरामांसी कच्छपस्य शिरस्तथा ।
श्मशानभस्मसंयुक्तं कपाले मानुषे न्यसेत् ॥४२॥
शत्रोर्द्वारे निखातेन तूर्णमुच्चाटयेद् रिपून् ।
सप्तरात्रेण देवेशि समूलं नश्यते गृहम् ॥४३॥

ब्रह्मदण्डी (Tricholepsis Glaberrima), बालछड़ (जटामांसी) (Nardosta chys Jatamansi), कछुए का सिर तथा श्मशान (चिता) का भस्म लेकर मिलाकर मनुष्य की खोपड़ी में रखें, इस खोपड़ी को शत्रु के दरवाजे (द्वार) पर गाड़ने से शीघ्र शत्रुओं का उच्चाटन हो जाता है। हे देवेशि ! सात रात्रि के अन्तर्गत सम्पूर्ण शत्रु का घर ही नष्ट हो जाता है ॥ ४२-४३ ॥

॥ अथ विद्वेषणम् ॥

अथ विद्वेषणं वक्ष्ये शत्रूणां शृणु शङ्करि ।
येनैव कृतमात्रेण विद्वेषो जायते नृणाम् ॥४४॥

अथ शत्रु का विद्वेषण प्रयोग – हे पार्वति ! शत्रुओं के विद्वेषण की विधि बता रहा हूँ, कृपया सुनें। जिसके प्रयोग करने से मनुष्यों का शत्रुओं से विद्वेष (झगड़ा) होता है ॥ ४४ ॥

ब्रह्मदण्डी समूला च काकमांसेन संयुता ।
जातीपुष्परसैर्भाव्या सप्तरात्रं पुनः पुनः ॥४५॥
ततो मार्जारमूत्रेण सप्ताहं भावयेत् ततः ।
एष धूपः प्रदातव्या शत्रुगोत्रस्य मध्यतः ॥४६॥
यथा गन्धं समाघ्राति पितापुत्रैः समं कलिः ।
विद्वेषणं परं तेषां सुहृद्भिर्बान्धवैः सह ॥४७॥

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी (Tricholepsis Glaberrima) को कौए के मांस में मिलावें तथा सात रात्रियों तक जायफल के फूलों (Myristica Fragrous) के रस से भावित करें, फिर सात दिनों तक बिल्ली के मूत्र से भावित करें, तत्पश्चात् शत्रु-कुल के मध्य में यह धूप देना चाहिए, जैसे ही पिता आदि इसकी गन्ध सूंघता है, तुरन्त पुत्रों, मित्रों तथा भाइयों के साथ उसका विद्वेष हो जाता है ॥ ४५-४७ ॥

स्वस्थीकरणकं प्रोक्तं घृतगुग्गुलुधूपतः ।

यदि उक्त कलह को शान्त करना चाहें तो घृत तथा गुग्गुलु (Commiphoro Mukul) का धूप देना चाहिए ।

॥ अथ मारणम् ॥

सुरां मानुषमांसं च समादाय विचक्षणः ॥४८॥
गृध्रास्थि शत्रुविष्ठां च द्वारमध्ये निखातयेत् ।
सप्ताहेन भवेन्मारो यथा रुद्रेण भाषितम् ॥४९॥

अथ मारण प्रयोग—मदिरा, मनुष्य का मांस, गृध्र की हड्डी तथा शत्रु के विष्ठा को लेकर बुद्धिमान् तान्त्रिक शत्रु के दरवाजे के मध्य में गाड़े तो रुद्र के कथनानुसार एक सप्ताह में शत्रु का मरण होता है ॥ ४८-४९ ॥

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म सुरामांसीसमायुतम् ।
अरिष्टस्य च पत्राणि विषं रुधिरमेव च ॥५०॥
मोहाय च प्रयोक्तव्यः शत्रूणां नामयोगतः ।
सप्तरात्रप्रयोगेन सर्वशत्रुप्रणाशनम् ॥५१॥
एतेषां दुष्टयोगानां शत्रवे तदुदाहृतम् ।
शतमष्टोत्तरेणैव मन्त्रयित्वा विचक्षणः ॥५२॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते श्री-उड्डामरेश्वराय अमुक मुच्चाटय उच्चाटय विद्वेषय विद्वेषय स्वाहा ।

ब्रह्मदण्डी (Tricholepsis Glaberrima), चिताभस्म, जटामांसी (Nardostachys), रीठा (Sapindus Trifoliatus) के पत्र, वत्सनाभ विष (Aconitum Ferox) तथा रक्त शत्रु के द्वार पर गाड़ने से मोहित होकर शत्रु सात रात्रियों में नष्ट हो जाता है। इसे शत्रुओं के नाम से प्रयुक्त करना चाहिए। विचक्षण पुरुष उपर्युक्त कहे गये शत्रुओं के लिए दुष्ट योगों की सिद्धि हेतु ऊपरलिखित मन्त्र 'ॐ नमो भगवते"" ......विद्वेषय स्वाहा' से १०८ बार अभिमन्त्रित करे ॥ ५०-५२ ॥

एकरात्रोषितो भूत्वा कृष्णाष्टम्यां समाहितः ।
देवमभ्यर्च्य चेशानं शतमष्टाधिकं जपेत् ॥५३॥
मन्त्रमेतत्प्रयोक्तव्यं सिद्धये सिद्धिकाम्यया ।
शत्रुसैन्ये प्रयोक्तव्यं राज्ञश्च विजयार्थिनः ॥५४॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं यमाय शत्रुनाशनाय स्वाहा ।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी की रात्रि में व्रत रखकर एकाग्रचित्त से भगवान् शिव की पूजा करके सिद्धि की इच्छा से उक्त मन्त्र 'ॐ ह्रीं यमाय शत्रुनाशाय स्वाहा' को १०८ बार जपे। यह प्रयोग विजयाकाङ्क्षी राजा की शत्रुसेना पर करना चाहिए ॥ ५३-५४ ॥

लाङ्गूलं गृहगोधायाः कृकलासस्य मस्तकम् ।
इन्द्रगोपकसंयुक्तं जम्बूकस्य शिरस्तथा ॥५५॥
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
अभुक्ते हि प्रयोक्तव्यं सर्वं जनशतं हरेत् ॥५६॥

काली छिपकली की पूँछ, गिरगिट का मस्तक, सियार का सिर तथा वीरबहूटी—सभी को सम भाग लेकर महीन चूर्ण बनाये तथा शत्रु की सेना या शत्रु के बिना भोजन किये हुए ही खान-पान में दे-दे तो इससे सैकड़ों लोग मारे जा सकते हैं ॥ ५५-५६ ॥

नृकपालं समूलं च पेचकस्य शिरस्तथा ।
वृश्चिकस्य तु लाङ्गूलं हालाहलकमेव च ॥५७॥
श्वेतमण्डूकमांसञ्च मूत्रं चैव गजोष्ट्रयोः ।
गृहीत्वा समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥५८॥
एतानि शोषयित्वा तु कल्कं कृत्वा पुनः पुनः ।
अन्ने पाने प्रदातव्यं रिपुसैन्यविनाशनम् ॥५९॥

मनुष्य के मूत्र से भरी हुई मनुष्य की खोपड़ी, उल्लू का सिर, बिच्छू की पूँछ, वत्सनाभ विष, सफेद मेढक का मांस, हाथी तथा ऊँट का मूत्र, ये सब समान भाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण बनावें तथा द्रव द्रव्य (मूत्र आदि) में चूर्ण को बारम्बार कल्क करके शोषित करें। इसे अन्न (खाने) अथवा पानी में देने से शत्रु की सेना का नाश हो जाता है ॥५७-५९॥

स्पृष्टमात्रेण तेनैव विस्फोटास्तु समन्ततः ॥

तस्य देहे ज्वरस्तीव्रो भवेत्तीव्रा च वेदना ॥६०॥

म्रियते सप्तरात्रेण प्रत्यानयनवर्जितः ।

उपर्युक्त चूर्ण को शत्रु के शरीर से स्पर्श करा देने से उसके शरीर में फोड़े हो जाते हैं तथा तीव्र ज्वर-पीड़ा होती है। यदि इसका प्रतीकार (रोक-थाम) न किया गया तो सात रात्रियों में शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥ ६० ॥

॥ अथासिधाराङ्गदालेपः ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि यस्य यानेन साधनम् ॥६१॥

कथितं चैव रुद्रेण त्रिदशेभ्यः प्रसादतः ।

असिधाराङ्गदा लेप का कथन—अब मैं दूसरा प्रयोग कहता हूँ, जिसको ध्यानपूर्वक साधन करना चाहिए। यह प्रयोग देवताओं से प्रसन्न होकर रुद्र ने कहा था ॥ ६१ ॥

रुधिरं कृष्णसर्पस्य कुक्कुटस्य तु कस्यचित् ॥६२॥

कच्छपस्य मयूराणां रोचनं जात्यञ्जनं तथा ।

कुङ्कुमं भद्रमुस्तं च तगरं कृष्णमेव च ॥६३॥

एतानि समभागानि पुष्यार्के च समाहरेत् ।

आश्लेषायां तु पिष्टानि कृत्वा पात्रे च राजते ॥६४॥

दशाहं स्थापयेद् भूम्यां पश्चादुद्धृत्य लेपयेत् ।

असिधाराङ्गदा नाम स्वयं रुद्रेण भाषिता ॥६५॥

काले साँप का खून, किसी मुर्गे का रक्त, कछुआ तथा मयूर का रक्त, गोरोचन (Bostanrus), जायफल (Myristica Fragrans); अञ्जन (Memecylon Edule), केशर (Crocus Sativas), नागरमोथा (Cyperus Rotundus) तथा काला तगर (Valiriana), सब समान भाग लेकर पुष्यार्क योग में संग्रह करे तथा दूसरे दिन आश्लेषा नक्षत्र में चाँदी के पात्र में पीस कर रखे। तत्पश्चात् दश दिन तक पृथ्वी में पात्र को गाड़ दे; फिर खोद कर शरीर पर लेप करे। यह असिधाराङ्गदा नामक लेप स्वयं भगवान् शिव ने कहा है ॥ ६२-६५ ॥

अथालिम्पेत्तु गात्राणि स कृत्वाऽस्थीन्यथापि वा ।

फलपुष्पे तथा पत्रे धूपसप्तैस्तथैव च ॥६६॥

अगदोऽयं महामन्त्रो भूतानां च भयावहः ।

अन्ने पाने मन्त्रयित्वा प्रयुञ्जीत विधानतः ॥६७॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय शान्ताय दिव्ययोगाय दिव्यरूपाय जटिलब्रह्मचारिणे अगदोक्षि त्रिदशैव महाबलशतं मनोहं ठः ठः स्वाहा ।

इसे गात्रों में लेप करे तथा अस्थि-संधियों पर लगावे तो शत्रु से युद्ध करने में विजय प्राप्त होती है। इस कार्य में फल, फूल, पत्र आदि जो भी प्रयुक्त करे उन्हें धूप से धूपित तथा ऊपर लिखित 'ॐ नमो भगवते ...... हं ठः ठः स्वाहा' इस अगद मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। यह अगद नामक महामन्त्र प्राणियों के लिए भयावह है। इससे अभिमन्त्रित करके उक्त लेप द्रव्य खाने-पीने में शत्रु को देने से वह युद्ध में हार जाता है। इसे विधिपूर्वक प्रयुक्त करना चाहिए ॥६६-६७॥

पीड्यमानं जपेन्मन्त्रं शुचिर्भूत्वा समाहितः।
अष्टोत्तरसहस्रं तु ततो मन्त्रमिमं जपेत् ॥६८॥
कन्यया पेषयच्चैव गोष्ठमध्ये प्रयत्नतः।
तदशक्तौ चितायां तु यथाशक्ति पुनः पुनः ॥६९॥

लेप के द्रव्यों को उखाड़ते तथा पीसते हुए भी इस मन्त्र का पाठ करना चाहिए, फिर दश दिन तक उसी स्थल पर १००८ बार मन्त्र का जप करना चाहिए। कुमारी कन्या के हाथ से द्रव्य पवित्र होकर प्रयत्नपूर्वक गोशाला में पिसवाना चाहिए अथवा चिता की भूमि पर उक्त द्रव्य दश दिन तक गाड़ना चाहिए ॥ ६८-६९ ॥

स्वयं रुद्रेण संप्रोक्तं सर्वकार्यप्रसाधकम्।
सर्वं चैव प्रयोक्तव्याः सर्वशत्रुविनाशकाः ॥७०॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन रक्षितव्याः प्रयोगवान्।
अभक्ते नैव प्रोक्तव्यं क्रूरे पापजने तथा ॥७१॥
दातव्यं भक्तियुक्ताय शास्त्रज्ञायाऽमरेश्वरि ! ॥७२॥

इतिपार्वती-शिवसंवादेवीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वरमहातन्त्रे प्रथमः पटलः ॥१॥

सर्वकार्यप्रसाधक लेप को स्वयं रुद्र ने कहा है। ये सभी शत्रु-विनाशक प्रयोग करने चाहिए तथा प्रयत्नपूर्वक प्रयोगकर्त्ता को इसे गुप्त रखना चाहिए। भक्ति-रहित, क्रूर तथा पापियों के लिए यह प्रयोग नहीं कहे गये हैं। हे अमरेश्वरि ! भक्तियुक्त, शास्त्रज्ञ को ही ये प्रयोग बतलाने चाहिए ॥ ७०-७२ ॥

श्री पार्वती शिव संवाद में वीर भद्रेश्वरतन्त्र से उद्धृत उड्डामरेश्वर महातन्त्र में प्रथम पटल पूर्ण हुआ ॥ १ ॥

द्वितीयः पटलः

॥ अथ जलस्तम्भनम् ॥

श्रीपार्वत्युवाच

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि जलस्तम्भनमुत्तमम्।
कुम्भीरवेल्वदंष्ट्रानि रुधिरं मांसमेव च ॥१॥
हृदयं कच्छपस्यैव शिशुमारं पुनः पुनः।
विभीतकस्य तैलेन सर्वानिकत्र कारयेत् ॥२॥

जलस्तम्भन प्रयोग—श्री पार्वती बोलीं—अब मैं उत्तम जल-स्तम्भन का प्रयोग कह रही हूँ। घड़ियाल की दाढें, रुधिर तथा मांस, कछुए का हृदय एवं सूँस नामक जन्तु का हृदय और बहेड़े (Terminalia Bellerica) के तेल से सबको एक में मिलावें ॥ १-२ ॥

न्यासकर्म ततः कृत्वा जले तिष्ठेद् यथासुखम्।
भद्रकस्य रसं ग्राह्यं लक्षणस्य मकरस्य च ॥३॥
डुण्डुभस्य शिरो ग्राह्यं सर्वानिकत्र कारयेत्।
विभीतकस्य तैले तु पच्यमाने च दापयेत् ॥४॥
न्यासकर्म प्रकुर्वीत सप्ताहं तिष्ठते जले।
तत्तैलं पाचयेल्लौहे कृष्णाष्टम्यां समाहितः ॥५॥

जल पर इसका न्यास (छिड़काव) कर्म करें, फिर जलस्तम्भित हो जाता है और सुखपूर्वक जल पर खड़ा हुआ जा सकता है। विधारा (Gmalina Asiatica) का रस तथा सुन्दर मगरमच्छ का रक्त एवं

डुण्डुभ नामक सर्प का सिर लेकर बहेड़े (Terminalia Bellerica) के तेल में पकायें, फिर जल पर न्यास-कर्म के द्वारा एक सप्ताह तक खड़ा हुआ जा सकता है। तेल में पकाने का कार्य कृष्ण पक्ष की अष्टमी को एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए ॥ ३-५ ॥

चतुर्मासोषितो भूत्वा देवमभ्यर्च्य शङ्करम् ।
अभिमन्त्र्य च मन्त्रेण मृत्तिकास्नानदक्षिणम् ॥६॥
अष्टाधिकसहस्रं तु जपित्वा होममाचरेत् ।
अनेन मन्त्रयित्वा तु ततः सिद्धयति नान्यथा ॥७॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय जलं स्तम्भय स्तम्भय हुँ फट् स्वाहा ।

इस कर्म की सिद्धि हेतु चातुर्मास व्रत रहकर भगवान् शिव की पूजा करनी चाहिए। द्रव्यों को ऊपर लिखित मन्त्र 'ॐ नमो .... फट् स्वाहा' से अभिमन्त्रित करना चाहिए और मिट्टी से स्नान करके पवित्र रहना चाहिए। मन्त्र का १००८ बार जप करके हवन (दशांश) करने पर अवश्य उक्त प्रयोग की सिद्धि होती है। इसे अन्यथा नहीं समझना चाहिए ॥ ६-७ ॥

॥ अथ लूताकरणम् ॥

वक्ष्येऽथ लूताकरणं तं शृणुष्व समासतः ।
भल्लातकरसं गुञ्जा विषं चित्रकमेव च ॥८॥
कपिकच्छूपरोमाणि चूर्णं कृत्वा प्रदापयेत् ।
एतत्सर्वं समायुक्तो लूताकरणमुत्तमम् ॥९॥
तस्य रूपं प्रवक्ष्यामि जायते यस्तु लक्षणः ।

अङ्गानि धूममायान्ति मूर्च्छयन्ति मुहुर्मुहुः ॥१०॥
एतद्रूपं भवेत्तस्य लूताविकृतलक्षणम् ।

शत्रु के शरीर में मकड़ी (व्रण) उत्पन्न करना--अब मैं लूताकरण (मकड़ी उत्पन्न करना) कह रही हूँ, संक्षेप में सुनें। भिलावा (Semicarpus Anacardium) का रस, घुँघची (Abrus Precatorius), वत्सनाभ विष, चित्रक (Plumbago Zeylomica) तथा केंवाच के रोम लेकर चूर्ण करे। इस चूर्ण के स्पर्श कराने से शरीर में लूता उत्पन्न हो जाती है। इसका रूप तथा लक्षण यह है कि शरीर के अंग धूम्र वर्ण के हो जाते हैं और बारम्बार मूर्च्छा होती है। लूता से विकृत शरीर के यही लक्षण हैं ॥८-१०½॥

॥ अथ लूताविनाशनम् ॥

चिकित्सां तस्य वक्ष्यामि येन सम्पद्यते सुखम् ॥११॥
उशीरं चन्दनं चैव प्रियङ्गुतगरं तथा ।
रक्तचन्दनकुष्ठं च लेपो लूताविनाशनः ॥१२॥
मन्त्राभिमन्त्रितं कृत्वा ततः स्वस्थो भविष्यति ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहलीकुर्वनी स्वाहा ।

लूता का विनाशन—लूता-विकार की चिकित्सा का वर्णन कर रही हूँ—जिससे सुख की प्राप्ति होती है। खस (Root of Andropogon Muricatus), सफेद चन्दन (Santalem Album), प्रियङ्गु (Selastrus Panicalta), तगर (Valiriana), लालचन्दन (Pterocarpus Santalinus) तथा कूठ (Sussurealappa)—सब बराबर मिलाकर पीस कर लूता के स्थानों पर लेप करे और इसे उक्त मन्त्र 'ॐ नमो .... स्वाहा' से अभिमन्त्रित करें तो लूता विनष्ट हो जाती है और व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है ॥११-१२½॥

॥ अथ पुनः लूताकरणम् ॥

कृष्णसर्पशिरो ग्राह्यं मुखे निःक्षिप्तसर्षपात् ॥१३॥

भल्लातकेन संयुक्तं कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् ।
वल्मीकस्य मृदःकोशे अन्तर्धूमेन पाचयेत् ॥१४॥

कपिकच्छुपरोमाणि संयुक्तं षोडशांशकैः ।
विषस्य चूर्णं कृत्वा तु शत्रूणां मूर्ध्नि निःक्षिपेत् ॥१५॥

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु लूताकरणमुत्तमम् ।
प्रस्विन्ने च ततो गात्रे लग्नास्तस्मिंस्तु सर्षपाः ॥१६॥

लूतां च सविषां कुर्यान्नात्र कार्या विचारणा ।

वेदनाजातमात्रेण मन्त्रजाप्यं तु पूर्ववत् ॥१७॥
पूर्वोक्तेन विधानेन स्वस्थो भवति पूर्ववत् ।

पुनः लूताकरण विधान-काले सर्प के सिर को लेकर उसके मुख में सरसों (Eruca Sativa) डालकर भिलावाँ (Semicarpus Anacardium) भी डालें और काले तागे से उसे वेष्टित करें। बाँबी की मिट्टी चारों ओर खूब लपेटकर अन्दर ही अन्दर धुएँ से पकावे। १६ भाग केंवाच के रोएँ से युक्त करके विष के चूर्ण के साथ मिलाकर शत्रुओं के सिर पर डालें। शरद्, ग्रीष्म तथा वसन्त ऋतुओं में यह उत्तम लूताकरण विधान है। पसीने से युक्त शरीर में जहाँ-जहाँ ये सरसों लग जायेंगी, वहीं विष से युक्त लूता उत्पन्न हो जायेंगी। इसमें विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस लूताकरण विधान को मन्त्र जप के द्वारा पूर्ववत् विधि से स्वस्थ किया जा सकता है ॥१३-१७½॥

॥ अथ सस्यविनाशनम् ॥

अथ सस्यविनाशं च कथयामि समासतः ॥१८॥
येनैव कृतमात्रेण वज्रं कृत्वा विचक्षणः ।
क्षेत्रे सम्पातयेद्यस्मिंस्तस्मिन् सस्यविनाशनम् ॥१९॥

फसल को नष्ट करना—अब मैं संक्षेप में सस्य-विनाश की विधि कह रही हूँ, जिसके द्वारा विचक्षण पुरुष वज्र का निर्माण करके खेत में गाड़ देता है और फसल नष्ट हो जाती है ॥१८-१९॥

माहेन्द्रेण क्षिपेत्तत्र प्रयोगेण तु मन्त्रवित् ।
अथ मन्त्रं पुनर्वक्ष्ये प्रयोगेषु प्रयोजकम् ॥२०॥
अष्टोत्तरशतेनैव मन्त्रेणाऽनेन मन्त्रयेत् ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय वज्रं विनाशय वज्रं सुरपतिराज्ञापय हुं फट् स्वाहा ।

जहाँ पर बिजली गिरी हो वहाँ की मिट्टी लेकर वज्र बनाये और एक सौ आठ बार 'ॐ नमो भगवते ···· हुं फट् स्वाहा' इस मन्त्र से मन्त्रित करें तथा खेत में गाड़ दें तो सम्पूर्ण सस्य का विनाश हो हो जाता है ॥२०½॥

इमं योगं प्रयुञ्जातो विधिपूर्वेण कर्मणा ।
पर्णानां चैव योगेन क्षिपेत्पर्णं विनश्यति ॥२१॥

इस योग को प्रयुक्त करता हुआ विधिपूर्वक वज्र में वहाँ की पत्तियों को मिलावे तो फसल की पत्तियाँ विनष्ट हो जाती हैं ॥२१॥

॥ अथ ग्रामोच्चाटनम् ॥

पुनरुच्चाटनं वक्ष्ये शृणु अत्र यथातथा ।
येनैव कृतमात्रेण ग्रामस्योच्चाटनं भवेत् ॥२२॥

ग्राम के उच्चाटन की विधि—मैं पुनः उच्चाटन की विधि बता रही हूँ, जिसके करने मात्र से गाँव का उच्चाटन हो जाता है ॥२२॥

ग्रामे चतुर्णां च पथां मृदमादाय बुद्धिमान् ।
गोमयेनाकृतिं कृत्वा ग्रामस्य च चतुर्दिशः ॥२३॥
चिताकाष्ठानलं कृत्वा कोकिलाकाकपक्षकैः ।
हुत्वा चाहुतिसाहस्रं ततो भस्म समाहरेत् ॥२४॥
अभेदेन समुत्सार्य कृत्वा मुष्टिं सभस्मकम् ।
शतवाराभिजप्तेन अनेनैव तु मन्त्रितः ॥२५॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते महाकालरुद्राय त्रिपुरविनाशनकारणाय दह दह धम धम पच पच मथ मथ मोहय मोहय उन्मादय उन्मादय उच्छेदय उच्छेदय श्रीमहारुद्र आज्ञापयति शब्दकरी मोहिनी भगवती खें खें हुं फट् स्वाहा ।

बुद्धिमान् व्यक्ति चौराहे की मिट्टी तथा गोबर लेकर गाँव की चारों दिशाओं में आकार (चौकोर पीठ) बनाकर चिता की लकड़ियों तथा अग्नि की स्थापना करके कोयल तथा कौए के पंखों से हजार-हजार बार हवन करे तथा सात मुट्ठी भस्म लेकर 'ॐ नमो भगवते ········· फट् स्वाहा' इस मन्त्र से १०० १०० बार अभिमन्त्रित करें ॥ २३-२५ ॥

ग्रामे वा नगरे वापि भस्मप्रक्षेपणेन च ।
उच्छेदनं भवत्येव रिपूणां नात्र संशयः ॥२६॥

ग्राम अथवा नगर में इस अभिमन्त्रित भस्म का प्रक्षेपण करें इससे ग्राम आदि में रहने वाले शत्रुओं का उच्छेद हो जाता है ॥ २६ ॥

॥ अथ स्वस्थीकरणम् ॥

दूरीकृतं पुनर्भस्म नगरे वसते पुनः ।
कुल्वीकारं प्रवक्ष्यामि शृणु योगं समासतः ॥२७॥

यदि यह भस्म हटा दी जाय तो नगर में उच्चाटित लोगों का पुनः निवास हो जाता है । अब मैं कुल्वीकार योग का संक्षिप्त वर्णन करूँगा, कृपया आप सुनें ॥२७॥

॥ अथ कुल्वीकरणम् ॥

येन योजितमात्रेण पुनः कुल्वो भविष्यति ।
पादपांशुसमायुक्तैरन्तरा घृतगोमयैः ॥२८॥
वृषभस्य पुनः शत्रोः कृत्वा चैवाकृतिं बुधः ।
एकविंशतिवारं हि मन्त्रेणानेन मन्त्रिताम् ॥२९॥
छेदयेत्तीव्रशस्त्रेण ततः कुल्वो भविष्यति ।
प्रस्थितानां च करणे मन्त्रेणाऽनेन मन्त्रवित् ॥३०॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कामप्रभञ्जनाय अमुकं च्छः च्छः स्वाहा ।

कुल्वीकार योग—जिस प्रयोग की योजना करने पर मनुष्य कुल्व हो जाता है उसे कह रहा हूँ । शत्रु के पैरों के नीचे की धूल, घृत तथा गोबर में मिलाकर एक बैल की आकृति बनावे जिसमें शत्रु की आकृति भी बनी हुई हो । 'ॐ नमो भगवते ···स्वाहा' इस मंत्र से २१ बार अभिमन्त्रित करे तथा तीव्र शस्त्र से उसे काट दे तो शत्रु कुल्व हो जाता है । अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लेना चाहिए ॥२८-३०॥

॥ अथ स्वस्थीकरणम् ॥

कृत्वा मधु घृतावर्त्तं च स्थाने ह्यत्र प्रयोजयेत् ॥

स्नात्वा च गव्यदुग्धेन ततः स्वस्थो भविष्यति ॥३१॥

स्वस्थीकरण – यदि स्वस्थ करना हो तो पूर्वोक्त द्रव्यों में घृत के स्थान पर मधु (शहद) का प्रयोग करना चाहिए तथा उस बैल को गाय के दूध से स्नान कराना चाहिए ॥३१॥

॥ अथोन्मत्तीकरणम् ॥

मूलं कनकबीजस्य घृतचूर्णं समन्ततः ।

गृहचाटकस्य बिष्ठा च तथा करञ्जबीजकम् ॥३२॥

एतदुन्मत्तकरं चूर्णं भक्षणात्तत्करं व्रजेत् ।

एकविंशतिवारञ्च मन्त्रेणानेन मन्त्रितम् ॥३३॥

भोजे पाने प्रदातव्यमुन्मत्तः स्यान्न संशयः ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय अमुकं उन्मादय उन्मादय च्छः च्छः स्वाहा ।

उन्मत्तकरण योग—धत्तूर (Datura Stramonium) की जड़ का चूर्ण, घृत (घी), चटक (गौरैया) नामक पक्षी की विष्ठा तथा कंजा (Pongamia Gilabra) के बीजों का चूर्ण एक में मिलावें। यह उन्मत्तकारी चूर्ण है, जिसे खाने से व्यक्ति उन्मत्त हो जाता है। इसे २१ बार 'ॐ नमो भगवते ·····स्वाहा' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करना चाहिए तथा खान-पान में देने से निश्चय ही मनुष्य उन्मत्त हो जाता है ॥ ३२–३३½ ॥

॥ अथ स्वस्थीकरणम् ॥

अजाक्षीरेण शोणितेन पिबेत्तु शतपुष्पिकाम् ॥३४॥

घृतेन सह वा पीत्वा ततः सम्पद्यते सुखम् ।

स्वस्थीकरण—सौंफ के चूर्ण को बकरी के दूध अथवा रक्त या घृत के साथ पीये तो उससे सुख की प्राप्ति होती है अर्थात् उन्माद नष्ट हो जाता है ॥३४½॥

॥ अथान्धीकरणम् ॥

एकविंशतिवारं हि मन्त्रितं लवणं खरम् ॥३५॥

करवीरककाष्ठाग्नौ मन्त्रैर्धूमेन पाचयेत् ।

लवणं तत्तु सङ्गृह्य चूर्णं कृत्वा विचक्षणः ॥३६॥

भक्षे पाने प्रदातव्यं मन्त्रेणानेन मन्त्रितम् ।

मन्त्रितं शतवारञ्च शत्रोर्वा यस्य कस्यचित् ॥३७॥

भक्षणाच्च भवेदन्धो नात्र कार्या विचारणा ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो उड्डामरेश्वराय शरीरमन्धं कुरु ठः ठः स्वाहा ।

अन्धीकरण प्रयोग – तीक्ष्ण लवण (Sodic leridum) को २१ बार अधोलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कनेर (Nerium Odorum) की लकड़ियों की आग में मन्त्र पढ़ते हुए धूएँ से पकावें, फिर इस लवण (नमक) को ग्रहण करके चूर्ण कर दें। और 'ॐ नमो·········स्वाहा' इस मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु अथवा किसी को खान-पान में देने से निश्चितरूपेण वह मनुष्य अन्धा हो जाता है ॥३५–३७½॥

॥ अथ कुष्ठीकरणम् ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि कुष्ठीकरणमुत्तमम् ॥३८॥

येन सम्पीतमात्रेण कुष्ठी भवति मानवः ।

कुष्ठीकरण विधान—अब मैं उत्तम कुष्ठीकरण विधान कह रही हूँ, जिन ओषधियों के पी लेने से मनुष्य कुष्ठ रोग से ग्रस्त हो जाता है ॥ ३८½ ॥

भल्लातकरसं गुञ्जा तथा मण्डलकारिका ॥३९॥
गृहगोधासमायुक्ता भक्षे पाने प्रदापयेत् ।
सप्ताहाज्जायते कुष्ठं तत्पीतं च समेधितम् ॥४०॥

भिलावाँ (Semicarpus Anacardium) का रस, घुँवुची (Abrus Precatorius) तथा रक्त पुनर्नवा को लेकर काली छिपकली से युक्त करे। इसे भोजन अथवा पान में देने से एक सप्ताह में कुष्ठ रोग उत्पन्न हो जाता है तथा यदि स्वल्प कुष्ठ रोग हो तो वह बढ़ जाता है ॥३९-४०॥

॥ अथ कुष्ठशमनम् ॥

एतस्य शमनं कुर्याद् यथा रुद्रेण भाषितम् ।
धात्रीबदिरनिम्बानि शर्करासहितानि च ॥४१॥
विचूर्ण्य मधुसर्पिर्भ्यां जीर्णानि दापयेद्भिषक् ।
शालिभक्तं पटोलश्च घृतयुक्तं च पायसम् ॥४२॥
सोष्णं वा मुद्गचूर्णं तु शालियुक्तमथापि बा ।
एतेन दत्तमात्रेण नरः सम्पद्यते सुखम् ॥४३॥

कुष्ठशमन विधान—रुद्र के वचनानुसार इस कुष्ठ का निम्नलिखित प्रकारेण शमन करना चाहिए। तालीस पत्र (Taxas Baccata), खैर (Acacia Catechu) तथा नीम (Azadirachta Indica) के पत्रों को शक्कर मिलाकर घृत तथा शहद के साथ कुछ दिन रखकर वैद्य कुष्ठ रोग के रोगी को दे तथा चावल (Oryza Sativa) का भात, घृतयुक्त खीर तथा परवल (Trichoranthes Diocca) का जूस पथ्य में देना चाहिए। इसके अतिरिक्त गरम मूँग (Phascshus Trilobus) का चूर्ण अथवा चावल का चूर्ण भी पथ्य में

देना चाहिए। इस प्रकार औषधियों के सेवन कराने से व्यक्ति कुष्ठ रोग से मुक्त होकर सुख प्राप्त करता है ॥४१-४३॥

जलजीवं तु सङ्गृह्य शोषयेदातपे नरः ।
तस्य संदापयेद्धीमान् यस्य इच्छेत्तु जीवितम् ॥४४॥
अङ्गदाहेन तीव्रेण धमेत्तं नष्टचेतसम् ।
यदीच्छेज्जीवितं तस्य अङ्गं प्रक्षालयेद् ध्रुवम् ॥४५॥
पद्ममूलस्य चूर्णं तु क्षालयेत्काञ्जिकेन तु ।
तैलेनोद्वर्तयेल्लिङ्गं क्षालयेच्छीतवारिणा ॥४६॥
अनेन क्रियमाणेन नरः सम्पद्यते सुखम् ।

जोंक को ग्रहण करके आतप में सुखाकर तीव्र अंगदाह वाले स्थान पर लगाकर वहाँ का रक्त चुसावे। जब तक वह जोंक मृत न हो जाय, तब तक ऐसा ही करें, फिर कमल की जड़ का चूर्ण काञ्जी मिला कर तैयार करे और उससे अंगों का प्रक्षालन करे, लिंग आदि मर्म स्थानों पर तैल का उबटन करें तथा शीतल जल से प्रक्षालित करें। ऐसा करने से मनुष्य कुष्ठ रोग से मुक्त होकर सुख प्राप्त करता है ॥ ४४-४६½ ॥

॥ अथ वशीकरणविधानम् ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि वश्यादिकरणं परम् ॥४७॥
येन विज्ञानमात्रेण लोको भवति किङ्करः ।

वशीकरण विधान—अब मैं परम वशीकरण विधान का कथन कर रही हूँ जिसके ज्ञान मात्र से संसार दास बन जाता है ॥४७॥

पुराणिकस्य हृदयं तथा कुष्ठेन भावितम् ॥४८॥
शिवनिर्माल्यं सञ्चूर्णं यस्य मूर्ध्नि विनिक्षिपेत् ।
नियतं किङ्करो भूत्वा यावज्जीवं स तिष्ठति ॥४९॥
सप्तवारं मन्त्रयित्वा मन्त्रेणाऽनेन मन्त्रवित् ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय स्वाधिकारं साधय साधय स्वाहा ।

पुराणिका (Cyperus) का मध्य भाग, कूठ (Sussurea lappa) के रस में भावित करें, उसमें शिवनिर्माल्य का चूर्ण मिलाकर 'ॐ नमो…… …स्वाहा' इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके जिसके सिर पर डाल दें वह जीवन पर्यन्त दास होकर रहता है ॥४८ ४९½॥

चन्दनं तगरं कुष्ठं प्रियङ्गुनागकेसरम् ॥५०॥
कृष्णधत्तूरपञ्चाङ्गं समभागं तु कारयेत् ।
छायायां वटिका कार्या प्रदेया भक्षपानतः ॥५१॥
पुरुषं चाथ वा नारीं यावज्जीवं वशं नयेत् ।
सप्ताहं मन्त्रितं कृत्वा मन्त्रेणाऽनेन मन्त्रवित् ॥५२॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते मोहमालिने ठः ठः स्वाहा ।

चन्दन (Sandal wood), तगर (Valiriana), कूठ (Sussurea lappa), प्रियंगु (Selas'rus Panicalta); नागकेसर (Messua Ferrea) तथा काले धत्तूर के पञ्चाङ्ग (जड़, तना, पत्ते, फूल, फल) सम भाग लेकर छाया में सुखा कर गुटिका बनायें और एक सप्ताह तक 'ॐ नमो…… …स्वाहा' मंत्र से अभिमंत्रित करे । इसे खान-पान में पुरुष अथवा नारी को देने से वह जीवन पर्यन्त वश्य होता है ॥५०-५२॥

शङ्खपुष्पी ह्यधःपुष्पी तथा सङ्कोचपुष्पिका ।
श्वेता च गिरिकर्णी च समं सप्ताहभाविताः ॥५३॥

स्वशुक्रेण समायुक्ता भक्षे पाने प्रदापयेत् ।
तं वशीकरणं प्रोक्तं यावज्जीवं न संशयः ॥५४॥

शङ्खाहुली (Canscora Decussatea), अन्धाहुली (Tricoderma Indicum), लज्जालु (Mimosa Pudica), फिटकरी (Argilla Vitriolutum) तथा काला जीरा (Clitoria Ternatea) समान भाग लेकर एक सप्ताह तक भावित करें । इस चूर्ण को अपने वीर्य से युक्त करके खान-पान में देने से जीवन पर्यन्त मनुष्य वशीभूत रहता है ॥ ५३-५४ ॥

॥ अथ विषहरणप्रयोगः ॥

वज्रं वाथाऽभया लोध्रं मञ्जिष्ठा हिङ्गुपत्रिका ।
दिव्यं वचा विशालाक्षा कम्बुग्रीवा सुशोभना ॥५५॥
कुमारीत्वचाङ्गलेपेन सप्तहस्तप्रमाणतः ।
ददाति दशमीना च मन्त्रः कश्चित् प्रगृह्यते ॥५६॥
विषसुप्तपतित्वेन नात्र कार्या विचारणा ।
जलमध्ये सहाचौरं कुरुते वर्त्तको मम ॥५७॥

विषहरण प्रयोग—थूहर (Euphorbia Nerifolia), हरड़ (Terminalia Chebula), लोध्र (Symplocos Racemosa), मँजीठ (Rubia Manjishta), हींगपत्री (Asafoetida), दिव्या (Tiaridium Indicum), वच (Acorao calamus), विशालाक्षी (Tiaridium Indicum), कम्बुग्रीवी (Andropogon Aciculatus), गोरोचन (Bostanrus) तथा कुमारी (Jasminum Sambac) का गूदा मिलाकर सात हाथ प्रमाण का लेप करें । इसमें कुछ लोग मन्त्र का विधान करते हैं । यह 'दशमीना' नामक लेप है, जिससे विष का काटा हुआ व्यक्ति उठ पड़ता है, इसमें कोई संशय नहीं है । जल के मध्य में उस विषयुक्त व्यक्ति को रखे । यह लेप विष को दूर कर देता है ॥ ५५-५७ ॥

दधि मधु नवनीतं पिप्पली शृङ्गवेरम्,
मरिचमपि तु दद्यात् सत्तमं सैन्धवेन ॥
यदि भवति सरोषं तक्षकेणाऽपि दंष्टम्,
गदमिह खलु पीत्वा निर्विषं तत्क्षणं स्यात् ॥५८॥

दही, शहद, मक्खन या घृत, पिपरी (Piper Longum), अदरख (Zingiber Officinale), कालीमिर्च (Piper Nigrum) तथा सेंधा नमक। (Rock Salt) सब मिलाकर यदि पान करावे तो तक्षक नाग के द्वारा भी सरोष काटे जाने पर मनुष्य तत्क्षण विष-रहित हो जाता है ॥५८॥

कुष्ठामृता चातिविषा हरिद्राया विलेपनम् ।
गरुडोक्तं विषहरमौषधं प्राणिजीवनम् ॥५९॥

कूठ (Sussurea lappa), कांगनी (Selastrus Panicalta), अतीस (Aconitum Heterophyllum) तथा दारु हल्दी (Berberis Aristata) का लेप करने से विष दूर होता है। यह गरुड़ द्वारा कहा गया प्राणिजीवन औषधियों का सङ्घटक है ॥५९॥

॥ अथ रात्रिदर्शनाञ्जनसिद्धिः ॥

उलूकस्य जम्बुकस्य गृध्रस्य महिषस्य च ।
बिडालस्य वराहस्य काकभेकस्य च त्वचः ॥६०॥
मूषकस्य तु नेत्रं च सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
अनेनाञ्जितनेत्रो हि रात्रौ पश्येद् यथा दिवा ॥६१॥
एतेषां योगमन्त्रोऽयं मनुहीनो न सिद्धयति ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय शिवाय ज्योतिषां पतये देहि ज्योतींषि मतिवीर्यकरणाय स्वाहा ।

रात्रि में देखने वाले अञ्जन की सिद्धि—उल्लू, सियार, गृध्र, भैंसा, बिल्ली, सुअर, कौआ तथा मेढ़क की त्वचा का चूर्ण एवं चूहे के नेत्रों का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर यदि नेत्रों में अञ्जन की भाँति आँजे तो रात्रि में भी दिन के समान मनुष्य देख सकता है। इस योग में 'ॐ नमो भगवते ...... स्वाहा'' मन्त्र का जप करे अन्यथा सिद्धि की प्राप्ति नहीं होती है ॥६०–६१½॥

एकरात्रोषितो भूत्वा कृष्णाष्टम्यां समाहितः ॥६२॥
लिङ्गसम्पूजनं कृत्वा जलं चैवाऽभिमन्त्रयेत् ।

एक रात्रि का व्रत करके कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को एकाग्र चित्त से शिव के लिङ्ग का पूजन करके, पूजन के जल को मन्त्र से अभिमन्त्रित करे ॥ ६२½ ॥

दक्षिणस्यां दिशि स्थित्वा शतमष्टोत्तरं जपेत् ॥६३॥
ततः सिद्धयन्ति मन्त्राणि चाञ्जनानि समन्ततः ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय अञ्जनमन्त्रसिद्धिं देहि मे स्वाहा ।

तत्पश्चात् दक्षिण दिशा में बैठ कर १०८ बार ॐ नमो............ मे स्वाहा' इस मन्त्र का जप करे तो अञ्जन तथा मन्त्रादि योग सिद्ध होते हैं ॥६३½॥

॥ अथ पिशाचीकरणम् ॥

कनकस्य च बीजानि प्रियङ्गुगुग्गुलस्तथा ॥६४॥
आत्मानं धूपयित्वा तु योजयेद् राजसंसदि ।
योगमिमं समाघ्राति स वश्यो जायते भृशम् ॥६५॥

पिशाचीकरण (राजसभा में मान-सम्मान तथा जय)—धत्तूर

(Datura Stramonium) के बीज, प्रियंगु (Selastrus Panicalta) तथा गूगुल (Commiphoro Mukul) को मिलाकर अपने शरीर तथा वस्त्रों को इससे धूपित करके यदि राजसभा में जायँ तो जो भी इस योग को सूँघेगा वही वशीभूत होगा ॥६४-६५॥

कनकस्य तु बीजानि श्वेतार्कचन्द्रकेसरम् ।
कुष्ठं च देवदारुं च सर्वमेकीकृतं तथा ॥६६॥
पिष्ट्वा तेन लिप्तगात्रो योगशक्त्या बलिष्ठया ।
यत्र यत्र प्रविष्टस्तु तत्र तत्र जयी भवेत् ॥६७॥

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वर-महातन्त्रे द्वितीयः पटलः ॥२॥

धत्तूर के बीज, सफेद मदार (White Calortopis Gigantea), कर्पूर (Camphora Officinarum), नागकेसर (Messua Ferrea), कूठ (Sussurea lappa) तथा देवदारु--ये सब एकत्र करके पीसें और शरीर पर लेप करें तो बलिष्ठ योगशक्ति के द्वारा वह व्यक्ति जहाँ-जहाँ प्रवेश करता है, वहीं उसे विजय की प्राप्ति होती है। न्यायालय, युद्ध, विवाद एवं मल्लयुद्धादि क्रीड़ाओं में वह अवश्य विजयी होता है ॥६६-६७॥

श्रीशिवपार्वती-संवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डामरेश्वर महातन्त्र में द्वितीय पटल समाप्त हुआ ॥२॥

तृतीयः पटलः

॥ अथ उच्चाटनप्रकारः ॥

काकस्य पक्षौ सङ्गृह्य सर्पकञ्चुकमेव च ।
श्मशानभस्मसंयुक्तं शत्रोरुच्चाटनं भवेत् ॥१॥

उच्चाटन प्रकार—कौए के दोनों पंख तथा सांप की केंचुल को ग्रहण करके श्मशान की भस्म के साथ शत्रु के घर में अथवा सिर पर डालें, तो उसका उच्चाटन हो जाता है ॥ १ ॥

॥ अथ भूतवादकथनम् ॥

भूतवादं प्रवक्ष्यामि यथा गरुडभाषितम् ।
येनैव ज्ञातमात्रेण शत्रवो यान्ति वश्यताम् ॥२॥

भूतवाद कथन—अब मैं गरुड़ के द्वारा कहा गया भूतवाद बता रहा हूँ, जिसके ज्ञान मात्र से शत्रु वशीभूत होते हैं अथवा पीड़ित होते हैं ॥ २ ॥

शत्रुनिर्यासं सङ्गृह्य चूर्णं सत्वं च तस्य वै ।
भावयेत्सप्तरात्रं तु भोजनैः सह दापयेत् ॥३॥
दत्तमात्रेण तेनैव पिशाचैर्गृह्यते तु सः ।
स्वस्थीकारे प्रदातव्या जया तु मधुयष्टिका ॥४॥

अम्लवेत के गोंद को अम्लवेत के रस से सप्त रात्रि तक भावित करें, फिर भोजन के साथ इसे जिसे दें वही पिशाचों के द्वारा ग्रस्त हो जाता है। स्वस्थ करने के लिए जयन्ती (Abutilon Avicennea) तथा मुलेठी पिलानी चाहिए ॥ ३-४ ॥

निर्यासैः शालसम्भूतैर्बीजानि कतकस्य च ।
भावयेत्सप्तरात्रं तु भोजनैः सह दीयते ॥५॥
तस्य भक्षणमात्रेण ग्रहैः सङ्गृह्यते नरः ।
शर्करादुग्धपानेन स्वस्थो भवति नान्यथा ॥६॥

शाल वृक्ष का गोंद तथा केतकी (Strychnos Potatorum) के बीजों का चूर्ण सात रात्रि तक भावित करे, फिर जिसे भोजन के साथ खिलावे तो वह व्यक्ति भक्षण करते ही ग्रहों (शनि आदि) से ग्रस्त हो जाता है। स्वस्थ करने के लिए शक्कर एवं दूध पिलाना चाहिए ॥ ५-६ ॥

वास्तुकस्य तु निर्यासं बीजानि कतकस्य च ।
मर्दित्वा यातयामाभ्यां गृह्यते ब्रह्मराक्षसैः ॥७॥
शर्करादुग्धपानेन स्वस्थो भवति नान्यथा ।

बथुए (Chenopodium Albun) का गोंद तथा केतकी के बीजों का चूर्ण एक में पीस कर जिसे खिलाया जाता है वह दो रात्रियों में ब्रह्मराक्षसों के द्वारा पीड़ित हो जाता है। शक्कर तथा दूध पिलाने से वह स्वस्थ हो जाता है ॥ ७ ॥

भावयेत्सप्तरात्रं तु भक्षे पाने प्रदापयेत् ।
कपिकच्छुकनिर्यासैर्मातुलुङ्गस्य बीजकम् ॥८॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय महेश्वरो नाम स्वाहा ।

केंवाच का गोंद तथा बिजौरा नीबू (Citrus Medica) के बीज सात रात्रियों तक भावित करके खान-पान में देने से मनुष्य दुष्ट ग्रहों के द्वारा ग्रस्त हो जाता है। उपर्युक्त योगों की सिद्धि हेतु 'ॐ नमो ....नाम स्वाहा।' इस मन्त्र का नित्य जप और अभिमन्त्रण करना चाहिए ॥ ८ ॥

॥ अथ स्वस्थीकरणम् ॥

आमलक्याश्च चूर्णेन स्त्रीदुग्धसहितेन च ॥९॥
पाययित्वा विष्कृतं तु स्वास्थ्यं सञ्जायते ध्रुवम् ।
शर्करापद्मकिञ्जल्कपद्मकेसरकल्ककैः ॥१०॥
चूर्णीकृतैस्तच्चूर्णं तु दुग्धेन सह दापयेत् ।
तदा दुष्टग्रहैर्मुक्तः स्वस्थश्च जायते नरः ॥११॥

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वर-महातन्त्रे तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

स्वस्थीकरण—स्त्री के दूध के साथ आँवले (Phyllunthus Embelica) का चूर्ण पिलाने से दुष्ट ग्रहों से ग्रस्त शरीर को स्वास्थ्य-लाभ होता है। शक्कर तथा कमल-केशर को कमल-केशर के काढ़े में मिलाकर दूध के साथ पिलाने से भी मनुष्य दुष्ट ग्रहों से मुक्त हो जाता है तथा स्वास्थ्य-लाभ करता है ॥ ९-११ ॥

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डामरेश्वरमहातन्त्र में तृतीय पटल समाप्त हुआ ॥३॥

चतुर्थः पटलः

॥ अथ भूतवादसिद्धिमन्त्राः ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि भूतवादे सुदुर्लभम् ।
येन विज्ञानमात्रेण सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ १ ॥

अब मैं भूतवाद में दुर्लभ मन्त्रों का कथन कर रहा हूँ, जिनके ज्ञान-मात्र से सर्वसिद्धि हो जाती है ॥ १ ॥

॥ सुवर्णलाभमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं काली कङ्काली किल किल स्वाहा ।

इदं मन्त्रं पूर्वं सहस्रदशकं जपेत् । ततः सहस्रं जुहुयात्कङ्काली वरदा भवति सुवर्णमाषचतुष्टयं प्रत्यहं ददाति ॥

सुवर्ण-लाभ का मन्त्र—इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जप करे तत्पश्चात् सहस्रमन्त्रों से हवन करे तो काली वरदान देती हैं और प्रतिदिन चार माषा स्वर्ण प्रदान करती हैं ॥

॥ अथ सर्वजनमुखस्तम्भनमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं नमो भगवती दुर्वचती किलि वाचा भञ्जनी सर्वजनमुखस्तम्भिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण बिल्वमरिचं घृताक्तं सहस्रहवनं कुर्यात्, समस्तजनपदाः किङ्करा भवन्ति । एतन्मन्त्रेण यदि न्यग्रोधसमिधं घृताक्तं सहस्रैकं होमयेत् तदा स्त्रीवश्यं भवति ।

सर्वजनमुख स्तम्भन मन्त्र—इस मन्त्र से घृतयुक्त बेल (Aegle Mormelos) तथा कालीमिर्च से हजार बार हवन करे तो सारा ग्राम

दास हो जाता है अर्थात् सभी का मुख स्तम्भित हो जाता है । इसी मन्त्र से यदि बरगद (Ficus Indica) की समिधाओं को घृत में डुबोकर हजार बार हवन करे तो स्त्री वशीभूत होती है ।

॥ अथ कवित्वप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ रौं ह्रीं ह्लूं ह्लूं ऐं वद वद वाग्वादिनी वागीश्वरी नमः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण सहस्रजप्तेन कवित्वं करोति नात्र सन्देहः ।

कवित्व-शक्ति प्राप्ति का मन्त्र--इस मन्त्र का हजार बार जप करने से कवित्व-शक्ति की प्राप्ति होती है । इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

॥ अथ पुनः कवित्वप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ ॐ ॐ ईं ईं ईं ऐं ऐं ऐं नमः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण दशसहस्रजप्तेन कवित्वं करोति ।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वर-महामन्त्रे चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

कवित्व-शक्ति प्राप्ति का दूसरा मन्त्र—इस मन्त्र का दस हजार बार जप करे तो कवित्व-शक्ति की प्राप्ति होती है ।

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डामरेश्वर महातन्त्र में चतुर्थ पटल समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

पञ्चमः पटलः

॥ अथ सम्मोहनम् ॥

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि यथा त्रैलोक्यमोहनम् ।
परपुरुषा वशं यान्ति यथावत् कथयामि ते ॥ १ ॥

हे देवि ! जिस प्रकार त्रैलोक्य मोहित होता है तथा पर (शत्रु पुरुष वश्य हो जाते हैं, उस विधान को बता रहा हूँ, सुनिए ॥ १ ॥

एला कुष्ठं च लोध्रं च वचा च रक्तचन्दनम् ।
श्मशानभस्मसंयुक्तं प्रयोगं मारणान्तकम् ॥ २ ॥

इलायची (Amomum Sabulatum), कूठ (Sussurea lappa) लोध (symplocos Recemosa), वच मीठी (Acorao calamus) तथा लालचन्दन (Pterocarpus santalinus) में श्मशान की भस्म मिलावे और इसको जिसे खिलावे वह वशीभूत रहता है अथवा वश्य न रहने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ॥ २ ॥

॥ अथ भगसङ्कोचेन पतिवशीकरणम् ॥

कुलत्थं बिल्वपत्रं च रोचना च मनःशिला ।
एतानि समभागानि स्थापयेत् ताम्रभाजने ॥ ३ ॥
सप्तरात्रे स्थिते पात्रे तैलमेभिः पचेद् बुधः ।
तैलेन भगमालिप्य भर्त्तारमुपगच्छति ॥ ४ ॥
सम्प्राप्य मैथुनं भर्त्ता दासो भवति नान्यथा ।

भग-संकोच के द्वारा पति वशीकरण – कुलथी (Dolichos Biflorus), बेलपत्र, गोरोचन तथा मैनशिल को समान भाग लेकर ताँबे

के पात्र में सात रात्रियों तक रखें तथा इसको तेल में पकावें। जो नारी इस तेल को भग पर लेप करके पति के पास जायेगी, उससे मैथुन को प्राप्त करके पति दास की भाँति वशीभूत हो जाता है ॥ ३-४½ ॥

नागरैर्मधुसंयुक्तैर्गुटिकां कारयेद् बुधः ॥ ५ ॥
अश्वमूत्रेण संयुज्य पुरुषाणां वशङ्करम् ।
कुङ्कुमं शतपुष्पं च प्रियङ्गु रोचनं ततः ॥ ६ ॥
अजाक्षीरेण दातव्यं या भार्या दुर्भगा भवेत् ।
ततः सा सुभगा नित्यं पतिर्दासत्वमाप्नुयात् ॥ ७ ॥

नागरमोथा को शहद में पीसकर गुटिका बनाये तथा घोड़े के मूत्र में घिसकर जो नारी इसे अपने भग पर लेप करती है तो उससे पुरुष वशीभूत होते हैं ॥

केशर (Crocus Sativas), सौंफ, प्रियंगु (Selastrus Panicalta) तथा गोरोचन को बकरी के दूध से जो दुर्भगा नारी अपने भग पर लेप करती है वह सुभगा हो जाती है तथा पति दासता को प्राप्त हो जाता है ॥ ५-७ ॥

मातुलुङ्गस्य बीजानि पङ्कजस्य फलानि च ।
समुद्रजं रक्तचूर्णं मधुना सह लेपयेत् ॥ ८ ॥
तैलयोजितमात्रेण पतिर्दासो भवेद् ध्रुवम् ।

बिजौरा नीबू (Citrus Medica) के बीज, कमलगट्टा, ढोल-समुद्र (Leda Macrophylla) तथा सिन्दूर शहद के साथ तेल में पकावे और भग पर लेप करे तो पति वशीभूत होकर दास हो जाता है ॥ ८½ ॥

॥ अथ लिङ्गलेपेन नारीवशीकरणप्रयोगः ॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि योगानां सारमुत्तमम् ॥ ९ ॥
येन विज्ञानमात्रेण नारी भवति किङ्करी ।

लिङ्गलेप के द्वारा नारीवशीकरण प्रयोग—अब मैं योगों के उत्तम सार को कह रहा हूँ, जिसके ज्ञानमात्र से स्त्री दासी होकर वशीभूत हो जाती है।

उशीरं चन्दनञ्चैव मधुना सह संयुतम् ॥ १० ॥
गजहस्तप्रयोगोऽयं सर्वनारीप्रयोजकः ।
केवलं शशिना युक्तं कुङ्कुमं लेपयेद् भगे ॥ ११ ॥
निजवज्जायते साङ्गं जायते योनिसंश्चयम् ।

खस (Root of Andropogon Murieatus) तथा चन्दन को मधु (शहद) के साथ लिङ्ग पर लेप करें तो यह गजहस्त प्रयोग सभी स्त्रियों को वशीभूत करने वाला है।

इस योग में कर्पूर के साथ केशर का लेप यदि नारी अपने भग पर करे तो योनि का संकुचन होता है और पुरुष का गजहस्त प्रयोग अति आनन्ददायी हो जाता है ॥ १०-११½ ॥

॥ अथ गजहस्तप्रयोगः ॥

लवङ्गं सैन्धवं क्षौद्रं पिप्पली मरिचानि च ॥१२॥
नरस्य लेपयेद्गात्रां स भवेद् गजहस्तवत् ।

नारी-वशीकरण में गजहस्त प्रयोग—लौंग (Clove tree flcoer), सेंधा नमक; शहद, पीपर (Piper Longum) तथा कालीमिर्च मिलाकर यदि मनुष्य के मदनध्वज पर लेप किया जाय तो वह हाथी की सूंड़ के समान हो जाता है, जो रमणियों को वश में करने हेतु उत्तम है ॥ १२ ॥

॥ अथ भगेऽरन्ध्रयोगः ॥

वरटावेश्ममृत्तिकां शीततोयेन पेषयेत् ॥१३॥

तेनैव लिप्तमात्रेण भगे रन्ध्रो न जायते ।
तत्र प्रक्षालितेनाथ प्रसवत्वं भविष्यति ॥१४॥

भग में अच्छिद्र योग—बर्रे के बाँबी की मिट्टी शीतल जल से पीस कर भग में लेप करे तो भग में छिद्र का अभाव हो जाता है। यदि भग को पुनः प्रक्षालित करे तभी प्रसव हो सकता है ॥ १३-१४ ॥

॥ अथ रमणीवशीकरणयोगः ॥

यः स्वरेतः समादाय रत्यन्ते सव्यपाणिना ।
वामपादं स्त्रियो लिम्पेत्सा तस्य वशगा भवेत् ॥१५॥

स्त्री-वशीकरण योग—जो व्यक्ति रति के अन्त में अपने वीर्य को बायें हाथ से लेकर स्त्री के बायें पैर में लगाता है तो वह स्त्री सदैव उसके वश्य रहती है ॥ १५ ॥

॥ अथ पतिवशीकरणयोगः ॥

या भोगशेषे कान्तस्य लिङ्गं वामाङ्घ्रिणा स्पृशेत् ।
यावदायुर्भवेद् दासः स तस्या नात्र संशयः ॥१६॥

पति-वशीकरण योग—जो नारी सम्भोगान्त में पति के लिंगेन्द्रिय को बायें पैर से स्पर्श करती है तो वह पति आयु-पर्यन्त उस स्त्री का निश्चितरूपेण दास हो जाता है ॥ १६ ॥

॥ अथ स्त्रीवशीकरणयोगः ॥

कपोतविष्ठा सिन्धूत्थमधुकैः समभागिकैः ।
लिप्त्वा लिङ्गं भजेद् यां तु सा वश्या स्याद्वराङ्गना॥१७॥

स्त्री-वशीकरण योग—कबूतर की विष्ठा, सेंधा नमक तथा शहद सम भाग लेकर लिङ्ग पर लेप करे और फिर जिस नारी से समागम करे तो वही वश्य हो जाती है ॥ १७ ॥

घनसारं सततज्वं मेढ्ं च मधुना सह।
पिष्ट्वा लिप्त्वा रजो यां च भजेत्सा वश्यगा भवेत् ॥१८॥

कर्पूर, सततज्व (ब्रह्मदण्डी) को शहद के साथ लिङ्ग पर लेप करके जिस रमणी का भजन किया जाय वही वशीभूत होती है ॥१८॥

रोचना कनकं शम्भुबीजं कर्पूरचन्दनम्।
एभिर्विलिप्तलिङ्गो यां भजते सा वशा भवेत् ॥१९॥

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वर-महातन्त्रे पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

गोरोचन, धत्तूर के फल, पारा, कर्पूर तथा सफेद चन्दन को पीस कर लिङ्ग पर लेप करे तथा स्त्रीगमन करे तो वह स्त्री वश्य होती है ॥ १९ ॥

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डामरेश्वर-महातन्त्र में पञ्चम पटल समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

षष्ठः पटलः

॥ अथ दुर्लभयोगाः ॥

कृष्णच्छागरोमकृष्णमार्जाररोमकृष्णकाकरोमाणि कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्दश्यां वा शनिभौमयोर्वारेऽश्लेषानक्षत्र आर्द्रानक्षत्रे वा समभागानि कृत्वा कूपतडागनदीपयसा पेषयित्वा गुटिकां कृत्वा सङ्ग्रामे चोपविशेत्। रणपांशुना तिलकं कुर्यात्। अथानन्तरं येऽन्ये पुरुषा दर्शनं कुर्वन्ति ते कम्पयन्ति मूर्च्छयन्ति उत्पतन्ति पलायन्ते। ये पिष्ट्वा लेपं कुर्वन्ति तेषां शुक्रं क्वापि पतति न मुञ्चति।

दुर्लभयोग—काले बकरे के रोम, काले बिलाव के रोम तथा काले कौए के रोम लेकर कृष्ण पक्ष की अष्टमी या कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में, शनि अथवा मङ्गलवार को आश्लेषा या आर्द्रा नक्षत्र में, बराबर-बराबर करके कुएँ, तालाब एवं नदी के जल से पीस करके गुटिका (गोली) बनायें। इसे लेकर सङ्ग्राम में प्रवेश करे। युद्धभूमि की धूल से मिश्रित करके उपर्युक्त गुटिका को घिस कर तिलक लगावें। इसके बाद जो शत्रु के पुरुष इस तिलक का दर्शन करेंगे वे कम्पित, मूर्च्छित हो जाते हैं, उछलने लगते हैं और भाग जाते हैं। जो इस गुटिका को पीसकर शरीर में लेप करते हैं, उनका वीर्य किञ्चित् गिरता हुआ भी पूर्णरूपेण स्खलित नहीं होता। इस गुटिका के शरीर पर लेप करने से शस्त्रों का भी स्तम्भन होता है।

एष योगो मया प्रोक्तो देवानामपि दुर्लभः।
निवेदनीयः कस्यापि न कदाचिदिति ब्रुवे ॥१॥

यह देवताओं के लिए भी दुर्लभ योग मैंने कहा है, अतः इस योग का कथन जिस किसी से नहीं करना चाहिए ॥ १ ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शरीरज्ञानमुत्तमम् ।
येन विज्ञानमात्रेण जायते च शुभाशुभम् ॥२॥

अब मैं उत्तम शरीर-ज्ञान का कथन कर रहा हूँ, जिसके जानने से शुभाशुभ का ज्ञान हो जाता है ॥ २ ॥

जीवितं मरणं चैव लाभालाभं जयाजयम् ।
सुखदुःखं भावाभावौ गमनागमनं तथा ॥३॥
हिमालयसुता वै हि पृष्टवती वृषभध्वजम् ।

जीवन, मरण, लाभ, हानि, जय, पराजय, सुख, दुःख, भाव, अभाव तथा गतागत के विषय में इस प्रकार शिव से पार्वती ने पूछा ॥ ३ ॥

अथ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानि तत्त्वानि, तत्र गुरोर्बृहत्प्रसादेन शास्त्राणि च, येन योगेनातीतेन त्रैलोक्यं सचराचरं जातमेव । येषां समयोगानि स्थूलसूक्ष्माणि कथ्यन्ते । स च सम्प्रेत्य चेष्टायां लक्ष्यते, तस्याः किं नाम ? तस्य च का जिज्ञासा यथावदुच्यते चाहुस्ततः पञ्चतत्त्वानि पठ्यन्ते ।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश तत्त्व हैं, गुरु के अत्यधिक प्रसाद से शास्त्रों का ज्ञान तथा उपर्युक्त तत्त्वों का ज्ञान होता है, जिन (तत्त्वों) के सम्मिलन योग से सचराचर त्रैलोक्य उत्पन्न होता है, जिन तत्त्वों के समान योग से स्थूल तथा सूक्ष्म प्राणियों का शरीर निर्मित होता है तथा वही आकर (मिलकर) चेष्टा में लक्षित होता है । उसका क्या नाम है ? और उसकी क्या जिज्ञासा है ? यह सब यथावत् कहा जा रहा है, पंच-तत्त्व पढ़े जाते हैं अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश—ये पञ्चतत्त्व हैं ।

सम्प्रति दूतो यदागत्य वदति, तस्य वागुदेति, पञ्चतत्त्वाक्षराणि ज्ञात्वा यस्य तत्त्वाक्षरस्य वक्त्रे तत्त्वाक्षराणि भवन्ति प्रश्नचिन्तायां स तत्त्वं जपति । यदि प्रश्नचिन्तायां पृथिवीतत्त्वाक्षराणि भवन्ति तदा पृथ्वीतत्त्वं भवति । यद्येषामधिका भवन्ति तदा पानीयतत्त्वानि भवन्ति, तत्त्वाक्षराणीत्यर्थः ।

इस समय कोई दूत आकर कहता है, उसकी वाणी उदित होती है, तो पञ्चतत्त्वाक्षरों को जान कर मुख में जिस तत्त्वाक्षर के तत्त्वाक्षर होते हैं, प्रश्न की चिन्ता में वह उसी तत्त्व का जप करता है । यदि प्रश्न की चिन्ता में पृथ्वी के तत्त्वाक्षर हों तो पृथ्वीतत्त्व होता है । यदि इसमें जलतत्त्वाक्षर अधिक हों तो जल-तत्त्व होते हैं, यहाँ जलतत्त्व से तत्त्वाक्षर समझना चाहिए ।

'अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ' एतानि पृथ्वीतत्त्वाक्षराणि ।

'ए ऐ ओ औ अं अः' एतानि जलतत्त्वाक्षराणि ।

'क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ' एतानि तेजस्तत्त्वाक्षराणि ।

'ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म' एतानि वायुतत्त्वाक्षराणि ।

'य र ल व श ष स ह' एतान्याकाशतत्त्वाक्षराणि ।

एतानि वर्द्धितवाक्येनाधिकाक्षराणि भवन्ति ।

'अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ' ये पृथ्वी-तत्त्वाक्षर हैं ।
'ए ऐ ओ औ अं अः' ये जल-तत्त्वाक्षर हैं ।

'क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ' ये अग्नि-तत्त्वाक्षर हैं।
'ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म' ये वायु-तत्त्वाक्षर हैं।
'य र ल व श ष स ह' ये आकाश-तत्त्वाक्षर हैं।
यही तत्त्व बढ़े हुए वाक्य के द्वारा अधिक अक्षरों वाले हो जाते हैं।

विविधप्रकारचिन्ताः, समविषमाक्षराणि (पृथ्वीतत्त्वानि) ज्ञातव्यानीति। जीवितमरणलाभालाभजयपराजयसुखदुःखगमनागमनानि च यानि समानि विषमाणि अप्तत्त्वानि निर्वाचितव्यानि। यदा चित्तं भवति कृतस्य वाक्यविषये पृथिवीविषये तदा सलिलतत्त्वाक्षराणि भवन्ति तदा स अप्तत्त्वं जपति। अप्चिन्तायां यदा पृथिवीतत्त्वाक्षराणि भवन्ति तदा पृथ्वीतत्त्वं भवति। एवमन्येष्वपि बोद्धव्यम्। अक्षराणि येन कथयति। लाभचिन्तायां तेज-आकाशाक्षराणि अधिकानि भवन्ति, तदा तेऽशुभोऽधिकतरो भविता। यदा देशात् तत्त्वाद्वा गमनादिकं तेजसः ग्रामचलिते सङ्ग्रामगमने 'अहेतु अके डके' तैजसाक्षराण्यधिकानि भवन्ति। पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशा एतेषामक्षराणि विवाहकाले एतेषु तेजोऽक्षराणि शुभहारकाणि भवन्ति।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वरमहातन्त्रे षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

अनेक प्रकार की चिन्ताएँ तथा सम और विषम अक्षर (पृथ्वी तत्त्व) जानने चाहिए। जीवन-मरण, लाभ-हानि, जय-पराजय, सुख-दुःख, गमन-आगमन तथा जो सम तथा विषम जलतत्त्व हैं, उन्हें समझना चाहिए। जब प्रश्नकर्त्ता का चित्त वाक्य अथवा पृथिवी के विषय में होता है तो उसके वाक्य में जल-तत्त्व के अक्षर होते हैं और वह तब जलतत्त्व का कथन करता है। जल विषयक चिन्ता में जब पृथिवीतत्त्व के अक्षर होते हैं तो वहाँ पृथिवी-तत्त्व होता है। इसी प्रकार अन्य में भी समझना चाहिए। जिनसे प्रश्न अथवा वाक्य कहा जाता है वही अक्षर हैं। जब लाभ की चिन्ता में अग्नि तथा आकाश के अक्षर अधिक होते हैं तब अशुभ की अधिक सम्भावना रहती है। जब देश (स्थान) अथवा तत्त्व से गमनादिक का प्रश्न होता है तो तेज (अग्नि) के अक्षर अधिक होते हैं। गाँव से चलने पर तथा युद्ध में गमन करने पर 'अहेतु अके डके' में अग्नि के अक्षर अधिक होते हैं। विवाह के समय पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश के अक्षर होते हैं। यदि इसमें अग्नि के अक्षर अधिक हों तो शुभ का हरण करने वाले होते हैं।

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डामरेश्वरमहातन्त्र में छठा पटल समाप्त हुआ ॥ ६ ॥

सप्तमः पटलः

॥ अथौषधीकरणं निरूप्यते ॥

ओषधी परमा श्रेष्ठा गोपितव्या प्रयत्नतः ।
यस्याः प्रयोगमात्रेण देवता यान्ति वश्यताम् ॥१॥

ओषधीकरण का निरूपण—परम श्रेष्ठ ओषधियों को प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिए, जिसके प्रयोग मात्र से देवता वशीभूत हो जाते हैं ॥ १ ॥

ओषधी सा बुधैः प्रोक्ता चाण्डाली लोकविश्रुता ।
सुरासुरगणैः पूज्या सर्वकार्यार्थसाधिनी ॥२॥

संसार में प्रसिद्ध वह ओषधि विद्वानों के द्वारा चाण्डाली (शिवलिङ्गी) नाम से कही जाती है। यह ओषधि देवताओं तथा असुरों के द्वारा पूज्य तथा सभी कार्यों को सिद्ध करने वाली है ॥ २ ॥

एकपत्री द्विपत्री च त्रिपत्री तुर्यपत्रिका ।
अनेन विधिना देवि चतुश्चरणगामिनी ॥३॥
मानुषाणां विशेषेण वश्यकर्मणि योजिता ।

यह चाण्डाली ओषधि एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र तथा चतुःपत्र के भेद से चार प्रकार की प्राप्त होती है। हे देवि ! इस प्रकार यह ओषधि चार चरणों से गमन करने वाली है। यह मनुष्यों को वशीभूत करने के कार्य में प्रयोजित होती है ॥ ३½ ॥

एकपत्री तु स्वाङ्गमलसंयुक्ता स्त्रियं वशमानयति । द्विपत्री राज्ञो राजपुरुषान् । त्रिपत्री श्रीशाकमरिचसहिता

दुष्टां चमूं वशमानयति । चतुष्पत्री च कन्दुसहिता मत्तदुष्टगजं वशमानयति ।

एक पत्र वाली चाण्डाली ओषधि अपने अङ्ग के मल के साथ जिस स्त्री को खाने हेतु दी जाती है, वही स्त्री वश्य हो जाती है। द्विपत्र वाली ओषधि राजा तथा राजपुरुषों को वशीभूत कर देती है। त्रिपत्र वाली ओषधि श्रीशाक तथा काली मिर्च के साथ देने से दुष्ट सेना को वशीभूत कर देती है तथा चार पत्र वाली चाण्डाली ओषधि सुपारी के साथ मतवाले दुष्ट हाथी को भी वशीभूत कर देती है।

॥ अथोत्पाटनविधिः कथ्यते ॥

शनिवारे शुचिर्भूत्वा सायं सन्ध्यादिकं विधाय गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिभिः पञ्चोपचारैः पूजादिकं विधाय अक्षतं फलं हस्ते गृहीत्वा ओषधिसमीपे स्थित्वाऽभिमन्त्रणं कुर्यात् । ततोऽनुदिते भानौ खदिरकाष्ठकीलकेन खनयेत् ।

॥ तत्र मन्त्रः ॥

येन त्वां खनते ब्रह्मा हृषीकेशो महेश्वरः ।
शचीपतिः पितृपतिर्जलेशश्च धनाधिपः ॥
तेन त्वां खनयिष्यामि तिष्ठ तिष्ठ महौषधि ।

इति पठित्वा खनयेत् ।

ओषधि को उखाड़ने की विधि बतलाते हैं—शनिवार को पवित्र होकर सायंकाल सन्ध्यादि कार्य करके गन्ध, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य आदि से पञ्चोपचार के द्वारा पूजन करके अक्षत तथा सुपारी आदि फल हाथ में लेकर ओषधि के समीप स्थित होकर अभिमन्त्रण करें। तत्पश्चात् दूसरे दिन सूर्य उदय होने से पूर्व कत्थे की लकड़ी

की कील से खोदे। वहाँ यह मन्त्र पढ़ना चाहिए—"येन त्वां ···· ···· महौषधि।" इस मन्त्र को पढ़ कर खोदे।

शुचिरारभ्य एकान्ते प्रभाते मन्त्रमुक्तितः ॥४॥
सङ्ग्राह्यमौषधं सिद्ध्यै न भवन्ति हि काष्ठवत्।

॥ मन्त्रः ॥

नमोऽस्त्वमृतसम्भूते बलवीर्यविवर्द्धनि ॥५॥
बलमायुश्च मे देहि पापं मे नय दूरतः।

पवित्र रह कर एकान्त में प्रातःकाल कहे गये मन्त्र से सिद्धि की प्राप्ति हेतु औषधि का सङ्ग्रहण करना चाहिए। ऐसी औषधियाँ काष्ठ के समान नहीं होती हैं। इस लिखित मन्त्र से ओषधि की प्रार्थना करनी चाहिए—"नमोऽस्त्वमृतसम्भूते······ ······पापं मे नय दूरतः॥"

येन चानेन मन्त्रेण खनित्वोत्पाट्यमानं कृत्वा यः पूर्वमानीतो योऽन्यथा न भवेत्।

॥ मन्त्रः ॥

अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यकरी भव ॥६॥
मम कार्ये कृते सिद्धे इतस्त्वं हि गमिष्यसि।

इस प्रकार इस मन्त्र से खोद कर उखाड़े, जिससे पूर्व लायी गयी ओषधि व्यर्थ नहीं होती है। इस अग्रलिखित मन्त्र से उसे स्थिर करना चाहिए—"अत्रैव······ ······गमिष्यसि॥"

॥ मन्त्रः ॥

"ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डे हूं फट् स्वाहा।"

अनेन मन्त्रेण पुष्यर्क्षे हस्तर्क्षे वा नक्षत्रे सर्वाश्चौषध्य उत्पाटनीयाः। यैर्नरैश्च उदिते भानौ ओषध्यः खन्यन्ते उत्पाट्यन्ते उत्पद्यन्ते वा, तासां रविकिरणपीतप्रभावेनावीर्यप्रभावा भवन्ति। सिद्धिकारिका न भवन्ति। यद्युदिते भास्करे उत्पाट्यन्ते, तदा तासां पूजा कर्त्तव्या। जपारक्तोत्पलरक्तकरवीररक्तचन्दनकुङ्कुमेन गव्यगोमयेन सपादहस्तभूमिं संलिप्य तन्मध्ये चतुरस्रं कारयेत्। रक्तचन्दनकुङ्कुमाभ्यां तन्मध्ये वर्तुलं वितस्तिमात्रं भानुं पूजयेत्। पार्श्वे चन्द्रादिग्रहान् पूजयेत्। ततो रक्तभक्तपुष्परक्तैर्वक्ष्यमाणमन्त्रेण बलिं दद्यात्।

इसके अतिरिक्त "ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डे हूँ फट् स्वाहा" मन्त्र से पुष्य या हस्त नक्षत्र में रविवार को सभी ओषधियाँ उखाड़नी चाहिए। जो मनुष्य सूर्योदय पर ओषधियाँ खोदते, उखाड़ते अथवा उखाड़ कर लाते हैं, तो उन ओषधियों का प्रभाव सूर्य की किरणों के द्वारा पी लेने पर वे अवीर्य प्रभाव वाली हो जाती हैं। अर्थात् उनका प्रभाव नष्ट हो जाता है। वे सिद्धिकारक नहीं होती। यदि सूर्योदय पर ओषधि उखाड़ी जाय, तब उनकी पूजा करनी चाहिए। गुड़हल (The china rose), लाल कमल, लाल कनेर (Red Nerium oderum) तथा लाल चन्दन एवं केशर के द्वारा गाय के गोबर से डेढ़ हाथ भूमि लीप कर उसके मध्य में चौकोर मण्डल बनावे। रक्तचन्दन तथा केशर से मध्य में गोलाकार एक वितस्ति मात्र परिमाण में सूर्य को बनाकर उसका पूजन करे। पार्श्वों में चन्द्र आदि ग्रहों की पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् लाल चावल के भात और लाल फूलों से, कहे गये इस मन्त्र से बलिदान करे—

॥ मन्त्रः ॥

"ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः सः स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण पूजां कृत्वोत्पाटयेत्, वीर्ययुक्ता भवति सर्वकार्यक्षमा भवति ।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वर-महातन्त्रे चाण्डालीमहौषधिवर्णनं सप्तमः पटलः ।।७।।

"ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः सः स्वाहा।" इस मन्त्र से पूजन, बलिदान करके ओषधि का उत्पाटन करे तो वह ओषधि प्रभाव (वीर्य) युक्त तथा सर्वकार्यकारिणी होती है ।

श्री शिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोदधृत उड्डा-
मरेश्वरमहातन्त्र में चाण्डाली महौषधि
वर्णन नामक सप्तम पटल
समाप्त हुआ ।।७।।

चतुरस्र-मण्डल

पूर्व

	बुध	शुक्र	चन्द्र	
उत्तर	गुरु	सूर्य	भौम	दक्षिण
	केतु	शनि	राहु	

पश्चिम



अथाष्टमः पटलः

।। अथ गर्भधारणविधानम् ।।

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि नारीणां गर्भधारणम् ।

पद्मबीजं गव्यपयसा सह या नारी पिबति सा गर्भवती भवति सत्यमेव । आदित्यवारे निमन्त्रयेत्, चन्द्रवारे भक्षयेत् । पूर्वदिग्भागस्थितं शिरीषमूलं गव्यघृतेन सह ऋतुसमये भक्षयेत् सा संवत्सरेण गर्भवती भवति ।

गर्भधारण विधान—अब इसके पश्चात् स्त्रियों के गर्भधारण विधान को कह रहा हूँ ।

कमल के बीजों को गाय के दूध के साथ जो नारी पान करती है, वह गर्भवती होती है। यह सत्य है। कमल-बीजों को रविवार के दिन निमन्त्रित करना चाहिए तथा सोमवार को लाकर भक्षण कराना चाहिए। जो स्त्री पूर्व दिशा के भाग में स्थित सिरसे (Acacia Sirissa) की जड़ को गाय के घृत के साथ ऋतुकाल में भक्षण करती है, वह एक वर्ष में अवश्य गर्भवती होती है ।

अनपत्या च या नारी कपित्थं भक्षयेत् सदा ।
अभिमन्त्र्य तु मन्त्रेण सापि पुत्रवती भवेत् ।।१।।

सन्तान-रहित जो स्त्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कैथ (Feronia Elephantum) के फल का भक्षण करती है वह अवश्य ही पुत्रवती होती है।। १ ।।

एकवृक्षतटे नारी स्नानं कृत्वाऽभिमन्त्रयेत् ।
आदिवन्ध्यापि देवेशि भवेद्गर्भवती हि सा ।।२।।

देवः शिवो भवेद्यत्र नदीसङ्गमसन्निधौ ।
तस्यां नद्यां दिशि स्नात्वा वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥३॥

कपित्थ (कैथ) के भक्षण की विधि यह है कि स्त्री अकेले नदी-संगम पर जहाँ भगवान् शिव का मन्दिर हो, वहाँ नदी के प्रत्येक दिशा में स्नान करके एक वृक्ष के नीचे कैथ के फल को अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात् उसका भक्षण करे तो ऐसा करने से आदिवन्ध्या भी पुत्रवती हो जाती है ॥ २-३ ॥

विधिरत्रोच्यते—

कपिलागोमयेनाथ भूमिं संलिप्य यत्नतः ।
स्नात्वा विधिप्रकारेण मण्डलं कारयेत्ततः ॥४॥

यहाँ पूजा विधि का कथन किया जाता है—

यत्नपूर्वक कपिला (पीली) गाय के गोबर से भूमि को लीप कर स्नान करके विधिपूर्वक मण्डल का निर्माण करे ॥ ४ ॥

चतुरस्रं चतुष्कोणं तन्मध्ये वर्तुलं स्मृतम् ।
तन्मध्ये विलिखेत् पश्चादष्टपत्रं सकर्णिकम् ॥५॥

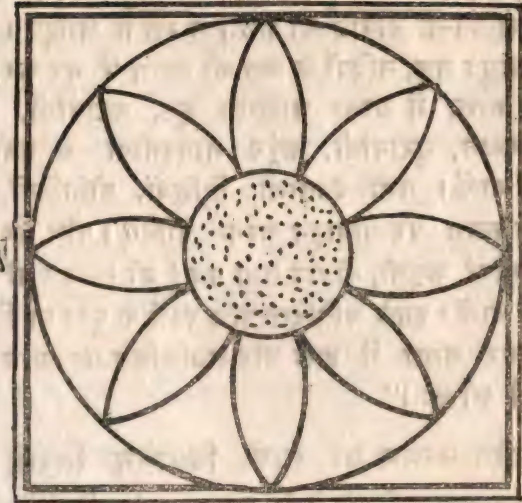
सर्वप्रथम चौकोर मण्डल बनावे, चारों ओर चार कोणों का निर्माण करते हुए मध्य में वृत्त बनायें। तत्पश्चात् वृत्त के मध्य में कर्णिका-युक्त अष्टदल कमल बनाये ॥ ५ ॥

मध्ये तु पूजयेद्देवं पत्रे शक्तिं प्रपूजयेत् ।
निर्व्रणमण्डलस्याग्रे कमलं स्थापयेद् बुधः ॥६॥

इस मण्डल के मध्य में देव (शिव) का पूजन करें तथा अष्टदलों में आठ शक्तियों—ब्राह्मी, माहेश्वरी, ऐन्द्री कौमारी, वैष्णवी,

वाराही तथा नारसिंही का पूजन करें। विद्वान् को चाहिए कि अक्षत मण्डल के अग्र भाग में एक कमल की स्थापना करके उस पर कलश स्थापित करें ॥ ६ ॥

॥ मण्डल ॥



शिखिपत्रनखवर्णेन लिखेत् । श्रृङ्गता कुलसप्तपर्वत-मृत्तिका·········? स्वमलामृत्तिका वलमीकमृत्तिका निम्बमूल-मृत्तिका सुवर्णरजतताम्रकांस्यसहस्रमूलं सर्वतीर्थानि, समुद्राः सरितः सर्वा सर्वौषधयः सर्वदेवताः सर्वसिद्धयः सर्वयोगिन्यः सर्वे गिरयः सर्वे नागाः पञ्चजात्यानि फलानि पञ्चप्रकारा-क्षतानि पञ्चसुवर्णपुष्पाणि स्थिरचित्तेन मन्त्रितकलशे परिक-ल्पयेत् ।

॥ मन्त्रः ॥

क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः ।

यह मंडल मयूर के पंख अथवा नाखून से बनाना चाहिए। कलश में सप्तकुल पर्वतों की मिट्टी, अपने शरीर के मर्दन से निकली मिट्टी, बाँबी की मिट्टी, नीम के वृक्ष की जड़ की मिट्टी, स्वर्ण, चाँदी, ताम्र, काँसा तथा द्रवन्ती ओषधि को कलश में रखना चाहिए। सभी तीर्थों के जल, समुद्र जल, नदियों के जल को कलश में भर कर, उन सबका आवाहन कलश में करना चाहिए। कूठ, जटामांसी, हल्दी, वच, शैलेय, चन्दन, मुरामांसी, कर्पूर, नागरमोथा—ये सर्वौषधियाँ भी कलश में डालें। सभी देवताओं, सिद्धियों, योगिनियों, पर्वतों तथा नागों का कलश पर आवाहन करना चाहिए। पाँच प्रकार के फलों, चावल, साँवाँ, ककुनी, नीवार तथा यव (जौ)—इन पाँच अक्षतों को कलश में डालें। इसके अतिरिक्त पाँच स्वर्ण के पुष्प या सिक्के एकाग्रचित्त होकर कलश में डाले और अग्रलिखित यह मन्त्र पढ़े—"क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः।"

अनेन मन्त्रेण या नारी विधानेन निरतं (नियम) वर्जिता अब्रह्मचारिणी देवी बन्ध्या पञ्चपतिवर्जिता ।

अपुत्रा लभते पुत्रान् दुर्भगा सुभगा भवेत् ।

अनेनैव विधानेन कन्या प्राप्नोति सत्पतिम् ॥७॥

इस प्रकार मन्त्र और विधान से जो नारी अब्रह्मचर्य का पालन करती हुई एकमात्र पति की रति से संवलित पञ्च अर्थात् अनेक पतियों से वर्जित रहकर अनुष्ठान करती है, वह पुत्ररहित होती हुई पुत्र को प्राप्त करती है, दुर्भगा हो तो सुभगा हो जाती है। यदि यही विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक कन्या करती है तो वह शीघ्र ही श्रेष्ठ पति प्राप्त करती है ॥ ७ ॥

मन्त्रौषधिप्रयोगांश्च ये चान्ये चूर्णकीर्णकाः ।

नवाभिचारिताः क्रूराः शुद्धदेहा भवन्ति ते ॥८॥

मन्त्र, ओषधि के प्रयोग तथा अन्य जो चूर्ण आगे बताये जायेंगे, उन सबके नव बार प्रयुक्त करने पर क्रूर (पापी) व्यक्तियों के शरीर भी शुद्ध हो जाते हैं ॥ ८ ॥

ये चान्ये विघ्नकर्तारश्चरन्ति भुवि राक्षसाः ।

ते सर्वे प्रलयं यान्ति सत्यं देवि मयोदितम् ॥९॥

जो इस भूमि पर विघ्न करने वाले अन्य राक्षसादिक विचरण करते हैं, वे सब मेरे वचनानुसार नष्ट हो जाते हैं ॥ ९ ॥

सकृदुच्चरिते मन्त्रे महापुण्यं प्रजायते ।

ब्रह्महत्यादयो दोषाः क्षयं यान्ति न संशयः ॥१०॥

एक बार भी मन्त्र का उच्चारण करने से महापुण्य होता है। ब्रह्महत्या इत्यादि दोष निश्चितरूपेण नष्ट हो जाते हैं ॥ १० ॥

अथ प्रथमोपाय उच्यते—नागकेसरं १० माषकं गव्यघृतेन सहर्तुस्नानदिवसे पिबेत् । तदनन्तरं भर्त्रा सह रात्रौ संयोगं कुर्यात् । साऽवश्यमेव गर्भवती भवति ।

अथ गर्भधारण का प्रथम उपाय बतलाते हैं—नागकेसर (Messua Ferrea) १० माशे गाय के घृत के साथ ऋतुस्नान के दिन जो स्त्री पान करती है और उसके बाद पति के साथ रात्रि में संभोग करती है तो वह अवश्य गर्भवती होती है।

अथ द्वितीयोपायः—श्वेतजीरकं १७ माषमात्रकं रात्रौ मृण्मयपात्रे जलेन सह निरावरणस्थाने समग्ररात्रौ स्थापयेत् ।

अग्निमदिवसे शिलायां पिष्ट्वा पर्युषितजलेन या स्त्री ऋतुस्नानदिने पीत्वा रात्रौ भर्त्रा सह संयोगं कुर्यादवश्यं सा गर्भवती भवति ।

गर्भधारण का द्वितीय उपाय—सफेद जीरा (White Cumminum Cyminum) १७ माशे रात्रि में मिट्टी के पात्र में जल के साथ खुले स्थान पर रात्रि पर्यन्त स्थापित कर दें। अगले दिन सिलवट पर पीस करके बासी जल से जो स्त्री ऋतुस्नान के दिन पान करती है और रात्रि में पति का सहवास प्राप्त करती है तो वह अवश्य ही गर्भवती होती है।

अथ तृतीयोपायः—दकाल्वम्रदीपि १० माषकं गव्यदुग्धेन सह या ऋतुस्नानदिवसे पीत्वा रात्रौ भर्त्रा सह संयोगं कुर्यात् साऽवश्यमेव गर्भवती भवति ।

गर्भधारण का तृतीय उपाय—काली विष्णुकान्ता की जड़ १० माशे गाय के दूध के साथ जो स्त्री ऋतुस्नान के दिन पीकर रात्रि में पति का संयोग प्राप्त करती है, वह अवश्य गर्भवती होती है।

॥ अथ विशिष्टभोजनप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ घण्टाकर्णाय स्वाहा ।

इमं सप्तधा जप्त्वा ग्रामे नगरे वा प्रविशेत् तत्र विशिष्टं भोजनं प्राप्नोति ।

अन्यच्च—

भो अल्ल मे सिद्धा ।

अनेनाष्टोत्तरशतं जपेत् ।

विशिष्ट भोजन-प्राप्ति का मन्त्र—"ॐ घण्टाकर्णाय स्वाहा" इस मन्त्र को सात बार जप करके जिस ग्राम अथवा नगर में प्रवेश करें, वहीं विशिष्ट भोजन प्राप्त होता है।

दूसरा मन्त्र है—"भो अल्ल मे सिद्धा" इस मन्त्र को १०८ बार जप करने से भी पूर्वोक्त फल मिलता है।

॥ अथ शशकादीनां मुखबन्धनम् ॥

शिरीषमूलमृदः क्षेत्रस्य चतुष्कोणेषु मोक्षयेत् तदा शशकमूषकवराहचतुष्पादप्रभृतीनां मुखबन्धनं भवति ।

शशक आदि के मुखबन्धन का प्रयोग—सिरसे (Acacia Sirissa) की जड़ की मिट्टी खेत के चारों कोनों पर डाले तो खरगोश, मूषक, सुअर तथा पशुओं आदि का मुखबन्धन हो जाता है अर्थात् वे खेत में नुकसान नहीं कर पाते हैं।

॥ अथ मन्त्राणां शत्रुमित्रोदासीनलक्षणम् ॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रांस्ते फलदायकाः ।
ये सिद्ध्यन्ति दशान्यूनं मन्त्रसाधनमुक्तिदाः ॥११॥
शत्रुमित्र - उदासीन - साध्यसिद्धस्य लक्षणम् ।

मन्त्रों का शत्रु, मित्र तथा उदासीन लक्षण—अब मैं उन फलदायक मन्त्रों के विषय में कह रहा हूँ जो मन्त्र साधन की मुक्ति को देने वाले हैं, जिनकी सिद्धि न्यूनाधिक दशा में किस प्रकार होती है? मन्त्रों का साधक से शत्रु, मित्र या उदासीन का क्या सम्बन्ध है? साध्य और सिद्ध मन्त्र का क्या लक्षण है? यह सब बातें अग्रकथित है ॥ ११ ॥

मन्त्राक्षराणि लिखित्वा साधकस्य तस्य यदापि च प्रथमवर्गाक्षरो भवति, तदा मित्रम्, द्वितीयवर्गाक्षरो भवति,

तदा सिद्धः। तृतीयवर्गस्य यदा भवति तदा साध्यः, चतुर्थ वर्गाक्षरो भवति तदोदासीनः, पञ्चमवर्गाक्षरो यदा भवति तदा शत्रुर्ज्ञातव्यः। एतान् भेदान् ज्ञात्वा मन्त्रशोधनमारभेत तदा साधकानां सुखावहो भवति।

मंत्र के अक्षरों को लिखकर यह देखना चाहिए कि मंत्र-साधक के नाम के यदि प्रथम वर्ग का अक्षर आदि में हो तो मित्र, द्वितीय वर्ग का अक्षर हो तो सिद्ध, तृतीय वर्ग का अक्षर हो तो साध्य चतुर्थ वर्ग का अक्षर हो तो उदासीन तथा पञ्चम वर्ग का अक्षर हो तो शत्रु जानना चाहिए। इन भेदों को जानकर मन्त्र का शोधन आरम्भ करना चाहिए। इससे मन्त्र-साधक को सुख होता है।

॥ अथ निर्व्याधियोगः ॥

अथ कल्पवृक्षषण्डमूलानि यानि प्रक्षालितानि गव्यदधि मिश्रितायां राजिकायां संस्कार्याणि। ततो नियमपूर्वकं भक्षयेत्। निर्व्याधियोगेष्वमुं स्वमुखे नियोजयेत् विधानमस्या ब्रवीमीति देवि!

अथ निर्व्याधियोग—कल्पवृक्ष (नीम) की जड़ों को धोकर गाय के दही में मिश्रित करे तथा राई डालकर संस्कारित करे, फिर नियम पूर्वक इसका भक्षण करना चाहिए। निर्व्याधि (नीरोग) करने में यह एक प्रमुख योग नियोजित किया गया है। हे देवि! इसका विधान उक्त प्रकारेण मैंने कहा है।

॥ अथ मयूरशिखा योगः ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमः षण्मुखाय शक्तिहस्ताय मयूरवाहनाय औषधी केन देहि मे भव स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण चतुर्दश्यां शुचिर्भूत्वा मयूरशिखामुत्पाटयेत् तदा महाप्रभावयुक्ता भवति। गव्यघृतेन सह संगृह्येत तदा इन्द्रियबलो भवति। पञ्चमलेन स्वर्णकारो भवति।

अथ मयूर-शिखा योग—"ॐ नमः .... भव स्वाहा।" इस मन्त्र के द्वारा चतुर्दशी तिथि में पवित्र होकर मोरपंखिनी को उखाड़े तो वह महान् प्रभाव से युक्त हो जाती है। गाय के घृत के साथ मिलाकर भक्षण करने से इन्द्रिय-बल दृढ़ होता है। ऐसे मयूर-शिखा भक्षण करने वाले सिद्ध पुरुष के पञ्चमलों से ताम्र का वेधन करने पर स्वर्ण बन जाता है।

अन्यच्च—श्वेतकरवीरमूलं श्वेतगिरिकर्णिकामूलं हेवचनाङ्भीकृतजाताञ्जली पञ्चमलसमायुक्ता भक्षे पाने प्रदातव्या मरणान्तं वशीकरणम्।

अन्य वशीकरण योग—सफेद कनेर (White Nerium Odorum) की जड़, श्वेत गिरिकर्णिका (White cliraria Ternatea) की जड़ तथा नागकेशर को कुमारी कन्या की अञ्जलि में रख कर गोली बनायें और उसी में अपने पञ्चमल (आँख, नाक, कान, दाँत तथा जिह्वा के मल) को संयुक्त करके जिसे खान-पान में दिया जाय वही मरण पर्यन्त वशीभूत होता है।

॥ अथ सिद्धगुटिकायोगाः ॥

अन्यच्च—श्वेतगिरिकर्णिकामूलं स्ववीर्येण सह स्वीय पञ्चमलहरवीर्यं श्वेतार्कमूलमेतानि हस्तर्क्षे पुष्यर्क्षे वा एकीकृत्य कुमारिकाहस्ताभ्यां मर्दयित्वाऽष्टम्यां चतुर्दश्यां वा

गजमदेन सह हस्ते गुटिकां कारयेत् । यस्यै एकापि दीयते सा वश्या भवति नान्यथा । शुक्लपक्षेऽपि सर्पाणां दीयते ते सर्पा अपि वश्या भवन्ति, श्रीमहाभैरवस्य वचो यथा । कुङ्कुमेन सह दीयते तदा वै गजो वशीभवति । रोचनया कुङ्कुमेन सह यदा तिलकं क्रियते तदा सा स्त्री पृष्ठलग्ना भ्रमति । गुरुदारेभ्यस्तिलको न दर्शयितव्यः । राजद्वारे तथा न्याये विवाहे युद्धे जयावहे त्रैलोक्यमोहनमेतत् ।

अथ सिद्धगुटिका योग—श्वेत गिरिकर्णिका (White cliraria Ternatea) की जड़ अपने वीर्य के साथ पीस कर अपने पाँचों मल तथा पारा एवं सफेद मदार (White Colortopis Gigantea) की जड़ को मिलाकर हस्त नक्षत्रयुक्त रविवार अथवा पुष्य नक्षत्रयुक्त रविवार के दिन कुमारी कन्या के हाथ से मर्दन करा कर अष्टमी अथवा चतुर्दशी की रात्रि में गजमद के साथ गुटिका बनायें, जिस स्त्री को एक भी गुटिका खान-पान में दी जाती है वह वश्य होती है यह अन्यथा नहीं है । शुक्ल पक्ष में यह गुटिका यदि सर्पों को दी जाय तो सर्प भी वशीभूत होते हैं, यह श्रीमहाभैरव का वचन है । केसर के साथ यह गुटिका यदि हाथी को दी जाय तो हाथी वश्य हो जाता है । गोरोचन तथा केसर के साथ गुटिका को घिस कर यदि तिलक किया जाय तो देखने वाली स्त्री पृष्ठ-लग्न हो जाती है । इसीलिए गुरुपत्नियों को यह तिलक नहीं दिखाना चाहिए । इस प्रकार यह राजद्वार, न्यायालय, विवाह, युद्ध तथा विवाद-विजय में त्रैलोक्य को मोहित करने वाला है ।

॥ अथाहारयोगः ॥

त्रिफला ५ माषाः, निम्बः १ माषः, कदम्बः २ माषौ, नीपः २ माषाः, चिरयता ४ माषाः, करञ्जः ५ माषाः, भृङ्गराजः ६ माषाः, मयूरशिखा ७ माषाः, एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् । तदनन्तरं मधुना सह पेषयेत् । भोजनञ्च यथाहारं कुरुते नात्र संशयः । एतच्चूर्णं सुरेभ्योऽपि दुर्लभम् ।

अथ आहार-योग--त्रिफला ५ माशे, नीम १ माशे, कदम्ब २ माशे नीप ३ माशे, चिरायता ४ माशे, कञ्जा ५ माशे, भृगराज (Eclipta Prostrata) ६ माशे, मोरशिखा ७ माशे, ये सब लेकर सूक्ष्म चूर्ण करना चाहिए । तत्पश्चात् शहद के साथ पीसना चाहिए । इसका भक्षण करने से भोजन अथवा आहार अत्यधिक हो सकता है । यह चूर्ण देवताओं को भी दुर्लभ है ।

॥ अथ गर्भधारणयोगः ॥

रात्रिचूर्णं शिरीषवल्कलचूर्णं च गव्यघृतेन सह यस्यै वनितायै ऋतुस्नानदिवसे पानार्थं दीयते सा स्त्री वन्ध्याऽपि गर्भवती भवति नात्र संशयः । एतच्चूर्णं कपित्थफलेन सह ऋतुसमयेऽपुत्रवती भक्षयति सा स्त्री पुत्रमाप्नोति । एतच्चूर्णं श्वेतकङ्कोलीमूलं लक्ष्मणाचूर्णञ्च समं कृत्वा कुङ्कुमक्वाथेन सहर्तुसमये सदा भक्षणार्थं दीयते तदा तस्याः शरीरशुद्धिर्भवति । पश्चादृतुसमयोपरि पञ्चदिनानि भक्षयेत् तदा सा गर्भधारणक्षमा भवति नात्र संशयः ।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डामरेश्वरतन्त्रे मयूरशिखादिनिरूपणोऽष्टमः पटलः ॥८॥

अथ गर्भधारण योग—जायफल का चूर्ण तथा सिरसे (Acacia Siriska) की छाल का चूर्ण गाय के घृत के साथ जिस स्त्री को ऋतु स्नान के दिन पीने के लिए दिया जाय, वह वन्ध्या स्त्री भी गर्भवती होती है। यहाँ संशय नहीं करना चाहिए। इसी चूर्ण को कैथ के फल के साथ ऋतु-काल में पुत्ररहिता स्त्री भक्षण करे तो वह पुत्र की प्राप्ति कर लेती है। इसी चूर्ण को श्वेत कङ्कोली (Jonesia Asaka) की जड़ एवं श्वेत कटेरी (Ardea Sibirica) के चूर्ण के साथ समान भाग लेकर केसर के काढ़े के साथ ऋतु-काल में स्त्री को भक्षणार्थ देना चाहिए, तो उसके शरीर की शुद्धि होती है। इसके बाद ऋतु-काल के उपरान्त पाँच दिनों तक भक्षण करे तो वह स्त्री गर्भधारण करने में समर्थ होती है। इन योगों में संशय का कोई स्थान नहीं है।

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वर तन्त्र से उद्धृत
उड्डामरेश्वरमहातन्त्र में मयूरशिखादि
निरूपण नामक अष्टम पटल
समाप्त हुआ ॥ ८ ॥

नवमः पटलः

॥ अथ विषनाशकौषधिः ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि औषधं परमदुर्लभम्।
आस्फोटी नामविख्याता नागदमनीति विश्रुता ॥१॥
अस्या विधानं वक्ष्यामि दुर्लभं त्रिदिवौकसाम्।
विषाः सर्वे विनश्यन्ति लेपनाद् भक्षणात्क्षणात् ॥२॥

विषनाशक ओषधि—अब इसके बाद मैं परम दुर्लभ औषधि का कथन करूँगा, जो आस्फोटी नाम से विख्यात तथा नागदमनी (Crinum Asiaticum) भी कही जाती है। देवताओं के लिए भी दुर्लभ मैं इसके विधान को बता रहा हूँ। इसके लेपन और भक्षण से सारे विष दूर हो जाते हैं ॥ १-२ ॥

पत्रहस्ते तां प्रलिप्य सर्पो ध्रियते धृतमात्रे सर्पो न नश्यति नैव क्षतानि, प्रलिप्य नागपूजितमन्त्रेण सर्पो विनश्यति।

उपर्युक्त नागदमनी के पत्तों का हाथ पर लेप करके यदि सर्प पकड़ा जाय तो सर्प न तो नष्ट होता है और न काटता है। नागपूजित मन्त्र से यदि दीवाल अथवा घर में इस ओषधि के पत्तों का लेप किया जाय तो सर्प नष्ट हो जाते हैं।

॥ अथ वातरोगविनाशः ॥

नागदमनीमूलं खननान्नाडीललाटलेपनान्नाशयति समन्तत आमवातं पित्तवातं श्लेष्मवातमेते वाता विनश्यन्ति भक्षणान्नात्र संशयः।

वात रोग विनष्ट करना—नागदमनी की जड़ को खोद कर नाड़ी, ललाट आदि पर लेपन करने से आमवात, पित्तवात त श्लेष्मवात आदि का समूलतः नाश होता है, भक्षण से भी उक्त वा रोग निश्चितरूपेण नष्ट होते हैं।

अथकथयाम्योषधीकरणे करणकारणानि। पुत्रमय वशीकरणकारकपुत्रपुत्रं कंसं कातरापि वशं परम् (? महिलाजनस्यैकश अप्यस्य दीयते सा पतिं परित्यज्य पश्यत लोकानां नग्ना भूत्वा भ्रमति।

अब मैं ओषधि-निर्माण में करण और कारणों का उल्ले करूँगा। पुत्रप्राप्ति तथा वशीकरण करने वाली............ ((अस्पष्ट पंक्ति का अर्थ नहीं लिखा गया है।) यदि स्त्रियों को ए बार भी दे दी जाय तो वह पति को छोड़कर संसार के देखते हु नग्न होकर घूमती है।

॥ अथ वशीकरणम् ॥

अथ कथयामि तान्त्रिकविधिम्। ताम्रवेदीपरोर इ लोकैरुच्यते, शनिवारे तामभिमन्त्र्य दिगम्बरो मुक्तकेश भूत्वाऽनुदिते भानौ ग्रहणं कुर्यात् पिष्ट्वा सम्यक् प्रकारे स्त्रीपञ्चमलेन च कामातुरेण कृत्वा ताम्बूलेन सह भगिनं कृत्वा दीयते सा वश्या भवति नान्यथा। मातापि पु परित्यज्य तत्परा भूत्वा पृष्ठतो लग्ना भवति यत्रकुत्रा तथा तमनुयाति नात्र संशयः।

अथ वशीकरण—अब तान्त्रिक विधि का कथन किया जा रहा है 'ताम्रवेदीपरोर' ('कुलथी' और 'फलूहा') ऐसा लोगों के द्वारा ना

सुना जाता है। इनको शनिवार को निमन्त्रित करके नग्न तथा खुले केश वाला होकर सूर्योदय से पूर्व उखाड़े और ठीक तरह से पीस कर कामातुर होकर पञ्चमलों के साथ स्त्री को भगिनी मान कर पान (ताम्बूल) में खाने के लिए देना चाहिए, इससे वह निश्चितरूपेण वश्य होती है। माता भी पुत्र को छोड़कर तत्पर होकर पीछे लग जाती है; निश्चय ही वह पुरुष जहाँ जाता है वहीं वह स्त्री उसका अनुसरण करती है।

॥ अथ स्त्रीवशीकरणम् ॥

काकजङ्घेति विख्याता महौषधिर्ग्रामे सर्वत्र तिष्ठति, शनिवारे सन्ध्यासमये तस्या अभिमन्त्रणं कुर्यात् तदनन्तरं ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थायानुदिते भानौ पुष्यर्क्षे हस्तर्क्षे वा योगे खदिरकीलकेन तां समूलामुत्पाटयेत्। पुनस्तां सप्तम्यामष्ट-म्यां नवम्यां वा एतासु तिथिषु पुनर्वसुपुष्यहस्तर्क्षयुक्तासु स्वपञ्चमलेन सह पिष्ट्वा स्ववीर्यं स्वरक्तमपि तस्मिन् दत्त्वा यस्यै वनितायै दीयते सा स्त्री वश्या भवति सत्यमेव मन्त्रे-णानेन मन्त्रयेत्।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवति त्रिपुरे त्रैलोक्यमोहिनि ऐं द्रां श्रीं क्लीं सौं अमुकनाम्नीं शीघ्रं मे वशमानय स्वाहा।

अथ स्त्री-वशीकरण—काकजंघा (Leea Hirta) नाम से विख्यात महौषधि गाँव में सर्वत्र प्राप्त होती है। शनिवार के दिन सन्ध्या-काल में उसे निमंत्रित करना चाहिए, तत्पश्चात् ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर सूर्योदय के पूर्व ही पुष्य अथवा हस्त नक्षत्र से युक्त रविवार

योग में कत्थे की कील से ओषधि जड़ सहित उखाड़नी चाहिए। इसके बाद सप्तमी, अष्टमी या नवमी तिथियों में जो पुनर्वसु, पुष्य या हस्त नक्षत्र से युक्त हो, अपने पञ्चमलों के साथ उसे पीस कर अपना वीर्य एवं रक्त भी मिलाकर जिस रमणी को खाने हेतु दिया जाय, वह निःसन्देह वश्य होती है। ओषधि को "ॐ नमो भगवति ---- वशमानय स्वाहा।" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करना चाहिए। 'अमुक' के स्थान पर अभीष्ट स्त्री का नाम लेना चाहिए।

॥ अथ गुञ्जाकल्पे कामबाणतिलकम् ॥

अथ गुञ्जाकल्पो लिख्यते—श्वेतगुञ्जां शनिवारे सन्ध्यासमयेऽभिमन्त्रितां कृत्वा ततो ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थायानुदिते भानौ खदिरकीलकेन दिगम्बरो भूत्वा समूलामुत्पाटयेत्। पुष्यर्क्षे हस्तर्क्षे वा स्त्रीपुष्पेण सह गोरोचनकाश्मीरकुङ्कुमश्वेतचन्दनरक्तचन्दनकस्तूरीकर्पूरहस्तिमदेन सहाभिमन्त्र्य तिलकं कुर्यात् तदा स्त्री कामबाणविमोहिता विह्वला भवति। मन्त्रेणाऽनेन मन्त्रयेत्—

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं हूं फट् स्वाहा।

गुञ्जाकल्प-प्रसङ्ग में कामबाणतिलक का प्रयोग—इसके उपरांत गुञ्जा-कल्प लिखा जा रहा है। श्वेत घुंघुची (White Absus Precatorius) को शनिवार की सन्ध्या में अभिमन्त्रित (निमन्त्रित) करके दूसरे दिन ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर सूर्योदय के पूर्व ही खैर (कत्थे) की कील से नग्न होकर जड़ सहित उखाड़ लावे। पुष्य या हस्त नक्षत्र में स्त्री के रज के साथ गोरोचन, कश्मीरी केशर, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, कस्तूरी, कर्पूर तथा गजमद के साथ पीसकर अधोलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करें, तो देखने वाली स्त्री कामदेव

के बाणों से विमोहित होकर व्याकुल हो जाती है। "ॐ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं हूं फट् स्वाहा।" इस मन्त्र से अभिमंत्रित करना चाहिए। यह कामबाणतिलक है।

॥ अथ वशीकरणतिलकम् ॥

अथान्यतन्त्रोक्तं वशीकरणादिकं लिख्यते—

सारमुद्धृत्य संक्षेपाद्वशीकरणमोहने।
कामिनां प्रीतिजनकं किञ्चित्तदपि गद्यते ॥३॥

अथ वशीकरण तिलक—अब अन्य तन्त्रों में उद्धृत वशीकरणादि विधान को लिखा जा रहा है—

वशीकरण और मोहन जो कामियों को प्रीतिजनक है संक्षेप में उनके सार को उद्धृत करके कुछ कहा जा रहा है ॥३॥

तत्रादौ तिलकविधिः—

लज्जां मधूकं कव्यं च नलिनीमूलमेव च।
एतान् पिष्ट्वा स्ववीर्येण यः कुर्यात्तिलकं पुमान् ॥४॥
तत्क्षणादेव नयति वश्यतां भुवनत्रयम्।
वात्स्यायनेन मुनिना प्रोक्तं योगमनुत्तमम् ॥५॥

वहाँ सर्वप्रथम तिलक की विधि—

लजालू (Mimosa Pupica), महुआ (Bassia Latifolia), कव्य (चव्य) तथा कमल की जड़, इन्हें अपने वीर्य से पीस करके जो पुरुष तिलक करता है। वह क्षण भर में तीनों लोकों को अपने वश में कर लेता है। यह वात्स्सायन मुनि ने उत्तम योग का कथन किया है ॥४-५॥

सिताष्टमूलमञ्जिष्ठा वचा मुस्ता सकुष्ठका।
स्त्रीयोनिशोणिते चैतदेकीकृत्य ललाटके ॥६॥

शुभं तिलकमाधत्ते यः स लोकत्रयं क्रमात् ।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्यान्मोदते च चिरं भुवि ॥ ॥

श्वेत अष्टमूल (कमल की जड़), मंजीठ (Ruba Manzishta), वच (Acorao Calamus), नागरमोथा (Cyperus Rotundus) तथा कूट (Sussurea lappa), इन्हें स्त्री की योनि के रक्त में मिलाकर ललाट पर जो शुभ तिलक लगाता है, वह कृतज्ञ तीनों लोकों को क्रमशः अपने वश में कर लेता है तथा पृथ्वी पर अत्यधिक आनन्द प्राप्त करता है ॥६-७॥

तगरं पिप्पलीमूलं मेषीशृङ्गी कणा जटा ।
एतत्समं स्वपञ्चाङ्गमले नीत्वैकतां सुधीः ॥८॥
मधुना तिलकं कुर्याद् यः क्षोणीसुतवासरे ।
जगत्सर्वं वशीकुर्यात् स पुमान्नात्र संशयः ॥९॥

तगर (Valiriana), पिपलामूल, मेढ़ासिंगी, पिप्पली बड़ी (Piper Longum), जटा (Fibrous root of Mucuma Pruritus), इन सबके समान अपने शरीर के अङ्गों के पञ्चमलों को मिलाकर जो बुद्धिमान् पुरुष शहद से मङ्गलवार को तिलक करता है, वह निःसन्देह सम्पूर्ण जगत् को वशीभूत कर लेता है ॥८-९॥

गोरोचनं च सम्भाव्य स्वपुंसो रुधिरेण या ।
कुर्यात्सा तिलकं भाले पतिं च मोहयेद् भृशम् ॥१०॥

अपने पुरुष (पति) के रक्त में गोरोचन को भावित करके जो स्त्री अपने मस्तक पर तिलक करती है, वह पूर्णरूपेण अपने पति को मोहित कर लेती है ॥१०॥

॥ अथ वशीकरणाञ्जनविधिः ॥

महाष्टमीदिने यस्तु श्मशाने नरमस्तके ।
पातितं कज्जलं विश्वं मोहयेन्नयनाञ्जनात् ॥११॥

रोचनां केसरं कन्यां शिलां चेति विशोधयेत् ।
योजयेद् दृष्टिपथगं सर्वमेव विमोहयेत् ॥१२॥

अथ वशीकरण अञ्जन विधि—आश्विन शुक्ल पक्ष की अष्टमी में आधी रात्रि के समय मनुष्य की खोपड़ी में श्मशान में जाकर काजल पारें। इस अञ्जन का नेत्रों में प्रयोग करने से संसार मोहित हो जाता है। इस अञ्जन में गोरोचन (Bostanrus), केसर (Crocus Sativas), घृतकुमारी (Jasminum Sambac) तथा दुग्धपाषाण मिलाकर शोधित करना चाहिए। इसका दृष्टि में अञ्जन करने से सभी मोहित होते हैं ॥ ११-१२ ॥

तालीसकुष्ठनागरैः कृत्वा क्षोणीशवर्त्तिकाम् ।
सिद्धार्थतैले निःक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ॥१३॥
पातयेदञ्जनं तस्य सर्वदा भुवनत्रये ।
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ॥१४॥

तालीसपत्र, कुष्ठ (कूट) तथा नागरमोथा पीसकर रूई में लपेट कर बत्ती बनायें, तत्पश्चात् सफेद सरसों के तेल में डालकर मनुष्य के सिर में कज्जल बनायें। इस कज्जल को नेत्रों में लगाने से तीनों लोक के देखने वाले लोग दासवत् हो जाते हैं ॥ १३-१४ ॥

शिलाकिञ्जलकफलिनी रोचनानां तथाञ्जनम् ।
पुष्यर्क्षयोगे विहितं दम्पत्योर्मोहनं परम् ॥१५॥

पाषाणभेद, कमलकेशर तथा प्रियङ्गु (Selastrus Panicalta) एवं गोरोचन का अञ्जन रवि-पुष्य योग में बनायें। यह अञ्जन पति-पत्नी को परस्पर मोहित करने वाला है ॥१५॥

अथ चूर्णविधिः–

काकजङ्घा शिलापक्षौ भ्रामरौ कृष्णमुत्पलम् ।
चूर्णं तगरजं चैषां चूर्णं क्षिप्तं विमोहने ॥१६॥

अथ वशीकरण चूर्ण—काकजंघा (Leea Hirta), पाषाणभेद, भँवरे के दोनों पंख, नीलकमल तथा तगर (Valiriana) का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर मङ्गलवार को डाला जाय वही वश्य होती है ॥ १६ ॥

वातपैत्तिकदलं पुंसो मलं मालासवस्य च ।
पक्षावलेरिदं चूर्णं क्षिप्तं शिरसि मोहनम् ॥१७॥

अमलवेत, पुरुष के पञ्चमल तथा भ्रमर के दोनों पंख का चूर्ण मंगलवार को स्त्री के सिर पर डालने से मोहन होता है ॥ १७ ॥

अथ भक्षणविधिः–

अन्त्रादि सर्वं निष्कास्य खञ्जरीटोदरं कुलैः ।
पूरयित्वा स्ववीर्येण सारमेयगले क्षिपेत् ॥१८॥
मुद्रां कृत्वा तदेकान्ते सप्ताह धारयेत्सुधीः ।
पश्चान्निष्कास्य संशोध्य वटीं कुर्याद् विशोधयेत् ॥१९॥
सा भक्षणविधानेन दीपमाला परस्परम् ।
दम्पत्योः प्रीतिजननी कीर्त्तिता नियमोत्तमा ॥२०॥

अथ दम्पतिमोहिनी वटी भक्षण विधि—खञ्जरीट पक्षी के उदर में से अंतड़ियों को निकाल कर फिर उसमें बूअ के फूलों और अपने वीर्य से उसके उदर को पूरित करें। इसके बाद उस उदर पर मुद्रा करके कुत्ते के गले में बाँध दें। सात दिनों तक एकान्त में रखकर कुत्ते सहित उस उदर की पूजा करें। तत्पश्चात् उदर से उक्त पदार्थ को

निकाल कर वटी (गोलियाँ) बनायें। दम्पति यदि इसे भक्षण करें तो प्रीति उत्पन्न करने वाली परस्पर दीपमाला के समान यह वटी उत्तम कही गई है ॥ १८-२० ॥

॥ अथ सर्वकामिकतिलकम् ॥

अथान्यत् सम्प्रक्ष्यामि तिलकं सर्वकामिकम् ।

गोरोचनं वंशलोचनं मत्स्यपित्तं, कश्मीरकुङ्कुमकेसरस्वयम्भूकुसुमस्ववीर्यश्रीखण्डरक्तचन्दनकस्तूरीकर्पूरकाकजङ्घामूलानि समभागानि कृत्वा कूपतडागनदीजलेन मर्दयित्वा कुमारिकापार्श्वकां गुटिकां कृत्वाच्छायायां गुटिकां कारयेत् । तया ललाटे तिलकं कृत्वा यां यां स्त्रियं पश्यति सा सा वश्या भवति ।

अथ सर्वकामिक तिलक—अब मैं सभी को प्रिय लगने वाले (वशीकरण) तिलक का वर्णन कर रहा हूँ। गोरोचन, वंशलोचन (Bambuna Arundinacea), मछली का पित्त, कश्मीर की केशर, नागकेशर (Messua Ferrea), कुमारी कन्या के प्रथम रजोवती होने पर निकला रक्त, अपना वीर्य, सफेद चन्दन (Sandal Wood) लाल चन्दन (Pterocarpus Sıntalinus), कर्पूर तथा काकजंघा (Leea Hırta) की जड़ समभाग लेकर कुएँ, तालाब तथा समुद्रगामिनी नदी के जल से पीस कर कुमारी कन्या के हाथ से गुटिका बनवायें और छाया में सुखायें। इस गुटिका को घिस कर ललाट पर तिलक लगाकर जिस-जिस स्त्री को देखें वही वश्य होती है।

॥ अथ महिषेण वधयोगः ॥

॥ मन्त्रः ॥

द्रौं वां धां क्षौं अं कं छः ।

इत्यनेन मन्त्रेण महिषास्थिमयं कीलकमेकोनविंशत्य-

ङ्गुलं सहस्त्रेणाऽभिमन्त्रितं यस्य नाम्ना कूपतटे निखनेत् स महिषेण वध्यते ।

भैंसे के द्वारा शत्रुमारण योग—"द्रौं वां धां क्षौं अं कं छः" इस मन्त्र से भैंसे की हड्डी की २१ अंगुल कील लेकर एक हजार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से कुएँ के तट पर गाड़ें वह भैंसे के द्वारा मार डाला जाता है।

॥ अथ शत्रुभ्रमणयोगः ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ च्छः च्छः लृं अमुकं हुं ईं च्छः च्छः ॐ ।

इत्यनेन मन्त्रेण मयूरास्थिमयं कीलकं त्र्यङ्गुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य नाम्ना चतुष्पथे निखनेत् स तत्र भ्रमति । तत्रानेनाऽवतिष्ठति पर्यटति क्षणमात्रेणोत्तोलनेन शान्तिर्भवति ।

अथ शत्रुभ्रमण योग—"ॐ च्छः च्छः लृं अमुकं हुं ईं च्छः च्छः ॐ" इस मन्त्र से मोर की हड्डी की तीन अंगुल की कील लेकर एक हजार मन्त्रों से जिसके नाम के द्वारा अभिमन्त्रित करके चौराहे पर गाड़े तो वह व्यक्ति वहीं घूमने लगता है। वहीं पर वह बैठता है, पर्यटन करता है। यदि क्षण मात्र में उखाड़ ले तो शत्रु का भ्रमण शान्त हो जाता है।

॥ अथ सर्वसिद्धेरसिद्धकरणयोगः ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ श्रीं श्रीं व्रां व्रीं ईं ईं च्छः च्छः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण मेषास्थिमयं कीलकं द्वादशाङ्गुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं कृत्वा यस्य गृहे निखनेत् सर्वसिद्धिरसिद्धा तस्य भवति ।

अथ सर्वसिद्धि-असिद्धकरण योग—"ॐ श्रीं श्रीं व्रां व्रीं ईं ईं च्छः च्छः स्वाहा" इस मन्त्र से १२ अंगुल की भेड़ की हड्डी की कील लेकर सहस्र मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़े तो उसकी सारी सिद्धि निष्फल हो जाती है।

॥ अथ योषिदाकर्षणमन्त्रः ॥

द्रीं बन्धूकपुष्पसङ्काशं ध्यातव्यं मन्त्रदीपके ।
कुम्भकेन वरारोहे शृणु वक्ष्यामि षड्गुणम् ॥२१॥
ध्यात्वा तु मासमेकं तु महास्त्रीमानयेद् ध्रुवम् ।
मासेनैकेन मनुना आनयेन्नागकन्यकाम् ॥२२॥
देवकन्यां त्रिभिर्मासैः सायाह्ने नान्यथा भवेत् ।

अथ स्त्री आकर्षण मन्त्र—घृत का दीपक जलाकर एकान्त में 'द्रीं' इस बीजमन्त्र का कुम्भक प्राणायाम के द्वारा जप करते हुए बन्धूक पुष्प के समान रक्त-वर्ण का ध्यान दीपक की शिखा पर करें। एक मास तक ६ घण्टे ध्यान और जप करता हुआ निश्चितरूपेण महास्त्रियों का आकर्षण कर लेता है। उक्त विधि से दो मास तक ध्यान करने से नाग-कन्या का आकर्षण हो जाता है। तीन मासों के द्वारा ध्यान तथा जप करने से सायंकाल में निश्चितरूपेण देवकन्या का आकर्षण होता है ॥ २१-२२ ॥

॥ अथ त्रैलोक्यस्तम्भनमन्त्रः ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ हं हः ।

अनेनैव तु मन्त्रेण ध्यातव्याः क्रोधयाजकाः ॥२३॥

याज्यस्य रुद्रसङ्काशं रुद्रहस्तं सुरासुरैः ।
मासेन मानुषं लोकं नागलोकं द्विमासतः ॥२४॥
त्रिभिर्मासैस्तु देवेशि स्वर्गलोकं न संशयः ।
षण्मासाभ्यासयोगेन त्रैलोक्यं निश्चलं कुरु ॥२५॥

अथ त्रैलोक्य स्तम्भन मन्त्र—"ॐ हुं हः" इस मन्त्र के द्वारा क्रोध याजकों (भैरव, दुर्वासा, काली) आदि का ध्यान करना चाहिए। देवताओं और दैत्यों के द्वारा पूजनीय भयंकर अस्त्र को धारण करने वाले रुद्र का ध्यान करना चाहिए। एक मास के द्वारा मनुष्य लोक, दो मास के द्वारा नागलोक और तीन मासों के द्वारा स्वर्ग-लोक एवं छः मास के अभ्यास से त्रैलोक्य को निश्चल किया जा सकता है ॥ २३-२४-२५ ॥

॥ अथ ज्वरग्रस्तीकरणम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ रक्तहटा रक्तगटा मुकुटधारिणी एधति स्वाहा मन्त्रराज उलटा वेधा ॐ ह्रीं श्रीं ध्रीं विकृतानना बाह्ये फट् स्वाहा ।

मन्त्रमिमं यन्त्रे लिखित्वा यस्य ईक्षितं दीयते स एकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकविषमज्वरेण गृह्यते तत्क्षणादेव नश्यति नात्र संशयः ।

अथ ज्वरग्रस्तीकरण—"ॐ रक्तहटा""""फट् स्वाहा ।" इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिख करके जिसको देखने के लिए दे वह एका-हिक, द्वयाहिक, त्र्याहिक तथा विषम ज्वर से ग्रस्त हो जाता है, निश्चित रूपेण ज्वर से नष्ट हो जाता है ।

॥ अथ ज्वरविमोचनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ बन्धुन क्षयं द्रीं द्रीं अमुकस्यात्मानं नित्यज्वरेण पत्रीबन्धनमात्रस्य स्फुर स्वाहा ।

अथ ज्वर विमोचन—"ॐ बन्धुनक्षयं द्रीं द्रीं""""स्फुर स्वाहा ।" यह मन्त्र पीपल के पत्र पर लिखकर बाँधें तो ज्वर नष्ट हो जाता है ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ क्षः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण मन्त्रितं जलं भृशं कृत्वा ज्वरिताङ्गं सेचयेत् तेन ज्वरविमुक्तिर्भवति निश्चितम् ।

"ॐ क्षः स्वाहा" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल ज्वरग्रस्त अङ्गों पर सिञ्चित करें तो निश्चितरूपेण ज्वर से मुक्ति प्राप्त होती है ।

॥ अथ ज्वरहरणम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

खरवाहनसिंहस्य क्रमादेवानुशासनम् ।
ऋक्षतुरगगतो वायुर्जीमूत इव गर्जितः ॥२६॥
रविवारे श्लोकमिमं लिखित्वा शिरसि न्यसेत् ।
तेन स्थापितमात्रेण त्रैमासिकज्वरं हरेत् ॥२७॥

अथ ज्वरहरण प्रयोग—"खरवाहनसिंहस्य""""इव गर्जितः ।" रविवार को इस श्लोक को भोजपत्र पर लिखकर सिर पर धारण करें तो इससे त्रैमासिक ज्वर भी नष्ट हो जाता है ॥ २६-२७ ॥

॥ अथादृश्यकरणम् ॥

वानेयस्य बिडालस्य गृहीत्वा रुधिरं ततः ।
पद्मसूत्रोत्थवर्त्तिं च भावयेत्सप्तवारकम् ॥२८॥

शिवाग्रे तज्जतैलेन पातयेत्कज्जलं ततः ।
तेनाञ्जितलोचनस्तु अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥२९॥

अथ अदृश्यकरण प्रयोग—वानेय (जंगली) विडाल (बिलार) का रक्त लेकर कमल के सूत्र (पराग, केशर) की वर्त्ति (बत्ती) को सात दिनों तक उसमें भावित करें । तत्पश्चात् शिवालय में शिवलिङ्गी के तेल से कज्जल बनायें । इस कज्जल का नेत्रों में अञ्जन करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ॥ २८-२९ ॥

॥ मन्त्रः ॥

हेभिरिहेभेरिहे ।

अनेनोदकमादायालोक्य सहस्रवारं परिजप्य अनेनैवाञ्जनेन त्रिरात्रेण सिद्धिः । पद्मसूत्रवर्त्तिकस्य तैलेन कज्जलं पातयेत् । तेनाञ्जितनेत्रस्तु अदृश्यो भवति । ततो गोमूत्रेण चक्षुषी प्रक्षाल्य पुनः प्रत्यक्षो भवति ।

"हेभिरिहेभेरिहे" इस मन्त्र के द्वारा जल लेकर सामने रखे तथा देखकर हजार बार जप करें तो तीन रात्रि में उक्त अञ्जन की सिद्धि होती है । पद्मसूत्र की वर्त्तिका तैल से युक्त करके अञ्जन बनाना चाहिए, इससे उक्त विधि से अञ्जित करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है । तत्पश्चात् गाय के मूत्र से दोनों नेत्रों को प्रक्षालित करे तो पुनः प्रत्यक्ष हो जाता है ।

॥ अथ डाकिनीदमनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

अक्षः क्षां क्षौकाजसिनौ देवता तत्त्वधूलिनी घोनाशालिनी भमन्त्रि बन्धुशनादैवतं लघुकण्टकेन पुरुमभिशासनौ

देवतां महाभैरवमण्डलमचल ॐ च्छः च्छः च्छः डाकिनीमतबन्धु नमः । ॐ नमो भगवते वज्राय चण्डेश्वराय ईं ईं फट् स्वाहा ।

अथ डाकिनीदमन मन्त्र—"अक्षः क्षां क्षौकाजसिनौ च्छः····ईं ईं फट् स्वाहा ।" इस मन्त्र के द्वारा मोरपंख से झाड़ा दे तो भूत, डाकिनी आदि का दमन हो जाता है ।

॥ अथ डाकिनीबन्धनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

दमनसर्पलङ्ग एभलिसिमजबन्धनिशि नागपाशमचलः ।

अथ डाकिनीबन्धन मन्त्र—"दमनसर्पलङ्ग ········नागपाशमचलः" इस मन्त्र से सात काले उड़द १०८ बार अभिमन्त्रित करके डाकिनीपीड़ित व्यक्ति पर एक-एक प्रहार करे तो डाकिनी बन्धित होकर बकुरे ।

॥ अथ ज्वरावेशम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ रं स्त्रीं शीघ्रं हं स्वाहा ।

त्रिपुरां सिन्दूरशङ्खचूर्णाभ्यामुदनालपत्रे लिखित्वा शोधयितव्यः स दिवसत्रयेण ज्वरेणागत्य मिलति ।

अथ ज्वरावेश मन्त्र—"ॐ रं स्त्रीं शीघ्रं हं स्वाहा ।" कमलपत्र पर सिन्दूर तथा शंख के चूर्ण से भगवती त्रिपुरसुन्दरी का चित्र बनायें और शत्रु के नाम को लिख कर उक्त मन्त्र से हजार बार अभिमन्त्रित करें और अग्नि पर तपायें तो तीन दिन में वह व्यक्ति ज्वर से ग्रस्त हो जाता है ।

॥ अथाकर्षणम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ अहो हः अमुकनाम्नीं शीघ्रमानय स्वाहा ।

आकर्षणमन्त्र--"ॐ अहो हः अमुकनाम्नीं शीघ्रमानय स्वाहा।" अमुक के स्थान पर अभीष्ट स्त्री का नाम लेकर जप करने से स्त्री का आकर्षण होता है।

॥ अथ कामिनीवशीकरणम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ स्त्रीं स्त्रीं क्लीं क्लीं ईं अहः फट् स्वाहा ।

मज्जनस्वस्थो भवति ।

॥ मन्त्रः ॥

अप्सरणीं अमुकीं जीव ।

तेनाऽनेन मन्त्रेण सप्तवारं जलं प्रजप्य कामिन्यै पानार्थं दातव्यम् ।

अथ स्त्री वशीकरण मन्त्र—"ॐ स्त्रीं स्त्रीं क्लीं क्लीं ईं अहः फट् स्वाहा।" इस मन्त्र से स्नान करे, तत्पश्चात् "अप्सरणीं अमुकीं जीव" मन्त्र में 'अमुकी' के स्थान पर स्त्री का नाम लेकर सात बार जल को अभिमन्त्रित करके उस स्त्री को पीने के लिए दे तो वशीभूत अवश्य होवे।

॥ अथ पुरुषवशीकरणम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो जले मोहे कुले फलानि सङ्कुले स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण सप्तवाराभिमन्त्रितं यस्मै दीयते स वश्यो भवति ।

अथ पुरुषवशीकरण—"ॐ नमो जले मोहे कुले फलानि सङ्कुले स्वाहा।" इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके सूखे फल (मेवा) जिस व्यक्ति को दे, वह वशीभूत हो जाता है।

॥ सर्वप्रियमन्त्रः ॥

ॐ नमो जले मोहे द्रां अब्जिनि फट् स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण प्रत्यूषे पानीयेन मुखं प्रक्षालयेत् सर्वजनप्रियो भवति सर्वसिद्धीश्वरो भवति ।

अथ सर्वप्रियमन्त्र--"ॐ नमो जले मोहे द्रां अब्जिनि फट् स्वाहा।" इस मन्त्र से प्रातःकाल जल के द्वारा मुख प्रक्षालित करे तो वह पुरुष सभी लोगों का प्रिय हो जाता है तथा सभी सफलताओं का स्वामी बन जाता है।

॥ अथ वशीकरणम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॐ नमो जले मोहे हन हन दह दह पच पच मथ मथ अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।

ताम्बूलं मन्त्रयित्वा यस्य दीयते स वश्यो भवति ।

अथ वशीकरणमन्त्र—"ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा.... ...अमुकं मे वशमानय स्वाहा।" मन्त्र में 'अमुक' के स्थान पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम लेकर पान (ताम्बूल) को अभिमन्त्रित करके उस अभिलषित व्यक्ति को दें तो वह वश्य होता है।

॥ अथ यक्षिणीमन्त्रसाधनम् ॥

सुरसुन्दरी-मनोहारिणी-कनकावती-रतिकरी-कामेश्वरी-नटयनुरागिणी-पद्मिनी—एता अष्टौ यक्षिण्यः कामनायां साधनम् ।

अथ यक्षिणी मन्त्र साधन—सुरसुन्दरी, मनोहारिणी, कनकावती रतिकरी, कामेश्वरी, नटी, अनुरागिणी तथा पद्मिनी—इन आठ यक्षिणियों का साधन कामना-पूर्ति के लिए करना चाहिए।

॥ अथ सुरसुन्दरीसाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।

वज्रपाणिगृहं गत्वा गुग्गुलधूपं दत्वा त्रिसन्ध्यं पूजयेत्, सहस्रं त्रिसन्ध्यं मासपर्यन्तं जपेत्, ततो मासाभ्यन्तरे प्रत्यक्षा भवति, अन्तिमदिने रक्तचन्दनेनार्घ्यं दद्यात्, तत आगत्य माता भगिनी भार्या वा भवति तासां यानि कर्माणि तान्येव करोति। यदि माता भवति तदा सिद्ध द्रव्याणि रसायनानि ददाति। यदि भगिनी भवति तदा पूर्ववदमूल्यं वस्त्रं ददाति। यदि भार्या भवति तदा सर्वमैश्वर्यं परिपूरयति। परन्तु वर्जनीयमिहान्यया सह शयनम्, सा च मैथुनप्रिया भवति, अन्यथा नश्यति ॥१॥

अथ सुरसुन्दरी यक्षिणी साधन—"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।" वज्रपाणि (बौद्धवज्रयानी) के घर को जाकर गुग्गुल का धूप देकर तीनों सन्ध्याओं में यक्षिणी का पूजन करें, फिर उक्त मन्त्र को तीनों सन्ध्याओं में हजार-हजार बार एक मास तक जपें। एक मास में यक्षिणी प्रत्यक्ष आती हैं, अन्तिम दिन लालचन्दन से अर्घ्य देना चाहिए तो यक्षिणी आकर माता, बहन या पत्नी के रूप में साधक का वरण करती हैं, उनके जो कार्य हैं वही यक्षिणी साधक के प्रति करती हैं। यदि यक्षिणी माता हो जायँ तो साधक को सिद्ध द्रव्य और रसायन देती है। यदि भगिनी हों तो पूर्ववत् अमूल्य वस्त्र प्रदान करती हैं। यदि यक्षिणी पत्नी के रूप में साधक का वरण करें तो सारे ऐश्वर्य को परिपूरण करती हैं। परन्तु अन्य स्त्री के साथ शयन का परित्याग करना चाहिए। वह यक्षिणी मैथुनप्रिया होती है। यदि उक्त नियम का पालन न किया जाय तो यक्षिणी की सिद्धि नष्ट हो जाती है ॥१॥

॥ अथ मनोहारिणीसाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ मनोहरि स्वाहा।

इह नदीसङ्गमे गत्वा चन्दनेन मण्डलं कृत्वाऽगुरुधूपं दत्वा सहस्रैकं मन्त्रं मासपर्यन्तं प्रत्यहं जपेत्। ततो मासान्ते चन्दनोदकेनार्घ्यं दद्यात्, पुष्पफलैनैकचित्तेन तस्या अर्चनं कर्त्तव्यम्, ततोऽर्द्धरात्रसमये नियतमागच्छति, आगता सती तदाज्ञां करोति, सुवर्णशतं तस्मै साधकाय प्रत्यहं ददाति ॥२॥

अथ मनोहारिणी यक्षिणी का साधन—"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ मनोहरि स्वाहा।" नदी के सङ्गम पर जाकर लालचन्दन से एक मण्डल का निर्माण करके अगरु का धूप देकर एक मास तक प्रतिदिन सहस्र मन्त्र का जप करे फिर मास के अन्त में चन्दन तथा जल से अर्घ्य देना चाहिए। पुष्प तथा फलों से एकाग्रचित्त से यक्षिणी की पूजा करनी चाहिए तब आधी रात के समय यक्षिणी निश्चितरूपेण आती हैं। आने पर यक्षिणी को आज्ञा देनी चाहिए, तो वह स्वर्ण की सौ मुद्रायें साधक को प्रदान करती हैं ॥२॥

॥ अथ कनकावतीसाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं कनकावति मैथुनप्रिये आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

वटवृक्षसमीपे स्थित्वा मद्यमांसादिनैवेद्यं तस्यै मूलमन्त्रेण दत्त्वा शेषं स्वयमप्यङ्गीकृत्य सहस्रैकं मूलमन्त्रं जपेत् । एवं सप्तदिनपर्यन्तं कुर्यात् । अष्टम्यां रात्रावर्द्धरात्रसमये वस्त्रालङ्कारभूषिताऽष्टौ परिवारानादायोपगच्छति । आगता सा कामयितव्या भार्या वा भवति, द्वादशजनानां वस्त्रालङ्कारभोजनं च ददाति । अष्टौ कला नित्यं साधकाय प्रयच्छति ॥३॥

अथ कनकावती यक्षिणी का साधन—"ॐ ह्रीं कनकावति मैथुनप्रिये आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" बरगद के वृक्ष के समीप स्थित होकर मदिरा-मांस आदि का नैवेद्य मूलमन्त्र से यक्षिणी को निवेदित करें तथा स्वयं भी स्वीकार करें एवं मूलमन्त्र का एक हजार जप करें। ऐसा ही सात दिन तक करें । अष्टमी की अर्धरात्रि में वस्त्र तथा गहनों से विभूषित होकर अपने आठ परिवार (सखियों) को लेकर यक्षिणी स्वयं उपस्थित होती हैं । यक्षिणी के आने पर उनसे कामनापूर्ण प्रणय करना चाहिए तब वह साधक की पत्नी हो जाती हैं । बारह लोगों के भरण-पोषण हेतु वस्त्र, अलंकार तथा भोजन देती हैं । देवी साधक को नित्य आठ कलाएँ प्रदान करती हैं ॥३॥

॥ अथ कामेश्वरीसाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा ।

इह गोरोचनया भूर्जपत्रोपरि स्त्रीरूपां प्रतिमां संलिख्य षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य ततः शय्यायामेकाकी एकान्ते उपविश्य तन्मना भूत्वा सहस्रं जपेत् ततो मासान्ते तद्बुद्धया स्वकीयां भार्यां पूजयेत् । ततो मधुसर्पिभ्यां प्रतिरात्रं दीपं प्रज्वाल्य पश्चान्मौनं कृत्वा मूलमन्त्रं सहस्रसङ्ख्यं जपेत् । ततोऽर्द्धरात्रसमये नियतमागच्छति, परन्त्वन्याः स्त्रियो वर्जनीयाः ॥४॥

अथ कामेश्वरी यक्षिणी साधन—"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा ।" गोरोचन से भोजपत्र पर स्त्री का चित्र बनाकर षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार से पूजन करके एकान्त में शय्या पर एकाकी होकर यक्षिणी के प्रति चित्त लगाकर हजार मन्त्र का जप करें. फिर मास के अन्त में यक्षिणी के रूप में अपनी पत्नी की पूजा करनी चाहिए । इसके बाद शहद और घृत से प्रत्येक रात्रि को दीप जलाकर मौन धारण करके मूलमन्त्र का सहस्र जप करें तब अर्द्धरात्रि के समय यक्षिणी निश्चितरूपेण आती हैं, परन्तु अन्य स्त्रियों का परित्याग करना चाहिए ॥४॥

॥ अथ रतिप्रियासाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ रतिकरि स्वाहा ।

अत्र पटे चित्ररूपिणी लेख्या वस्त्रकनकालङ्कारभूषिता उत्पलहस्ता कुमारी जातीपुष्पैः प्रपूजनं कुर्यात्, गुग्गुलेन धूपं दद्यात् ततोऽष्टसहस्रं प्रत्यहं जपेत् । मासान्ते तु विधिवत् पूजनं कुर्यात् । धूपदीपौ प्रज्वालनीयौ, ततोऽर्धरात्रसमयेऽवश्यमागच्छति, आगता सा स्त्रीभावेन कामयितव्या, भार्या भवति, साधकस्य परिवारं पालयति, दिव्यं कामिकं भोजनञ्च ददाति ॥ ५ ॥

अथ रतिप्रिया यक्षिणी साधन—"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ रतिकरि स्वाहा।" रेशमी-वस्त्र पर चित्ररूप में यक्षिणी का आलेखन करना चाहिए। वह चित्र वस्त्र तथा स्वर्ण के अलंकारों से विभूषित, हाथ में कमल धारण किये हुए कुमारी के रूप में होना चाहिए। चमेली के पुष्पों से उसका पूजन करना चाहिए, गुग्गुल की धूनी देनी चाहिए, फिर प्रत्येक दिन आठ हजार मन्त्र जपना चाहिए। एक मास तक ऐसा करते हुए विधिवत् पूजन करना चाहिए। मासान्त में पूजन करना चाहिए, धूप-दीप प्रज्वलित करना चाहिए तो देवी अर्द्धरात्रि के समय अवश्य आती हैं। आने पर उन्हें स्त्रीभाव से प्रेम करना चाहिए जिससे वह भार्या बन जाती हैं। साधक के परिवार का पालन करती हैं, दिव्य, कामिक भोजन प्रदान करती हैं ॥५॥

॥ अथ पद्मिनीसाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ पद्मिनि स्वाहा।

स्वगृहे चन्दनेन मण्डलं कृत्वा शिरःस्थं कारयेत्, गुग्गुलेन धूपं दत्त्वा सहस्रमेकं प्रत्यहं जपेत्। ततो मासान्ते पौर्णमास्यां रात्रौ विधिवत्पूजां कृत्वा जपेत्। जपान्तेऽर्द्धरात्रसमये नियतमागच्छति, आगता सा कामयितव्या भार्या भूत्वा सर्वकामप्रदा भवति रसं रसायनं सिद्धद्रव्यं प्रत्यहं साधकाय प्रयच्छति ॥६॥

अथ पद्मनी यक्षिणी का साधन—"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ पद्मिनि स्वाहा।" अपने घर में चन्दन से मण्डल का निर्माण करे और उसे शिर पर धारण करके गुग्गुल की धूप देकर प्रतिदिन एक सहस्र मन्त्र का जप करना चाहिए, तत्पश्चात् मासान्त में पूर्णमासी को रात्रि में विधिवत् पूजन करके मन्त्र का जप करना चाहिए। जपान्त में

अर्द्धरात्रि के समय यक्षिणी निश्चितरूपेण आती हैं। आने पर उनसे प्रणय करना चाहिए तो वह पत्नी के रूप में होकर सारी कामनाओं की पूर्त्ति करती हैं। वह प्रतिदिन साधक को रस, रसायन तथा सिद्धद्रव्य प्रदान करती हैं ॥६॥

॥ अथ नटीसाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ नटि स्वाहा।

अत्राशोकतले गत्वा मत्स्यमांसाद्याहारगन्धपुष्पादि धूपदीपबलिं दत्त्वा सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ततः सा मासान्ते नियतमागच्छति, आगता सा माता भगिनी भार्या वा भवति। यदि माता भवति, तदा दिव्यं कामिकं भोजनं ददाति, वस्त्रसुगन्धिसुवर्णशतं ददाति च। यदि भगिनी भवति, तदा शतयोजनादुत्तमां स्त्रियमानीय ददाति। यदि भार्या भवति, तदा दिव्यं वस्त्रं रसायनमष्टदिनान्तरेण ददाति ॥ ७ ॥

अथ नटी यक्षिणी का साधन—"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ नटि स्वाहा।" अशोक वृक्ष के नीचे जाकर मत्स्य, मांस आदि आहार, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा बलि देकर प्रतिदिन एक सहस्र मन्त्र का जप करें, तब वह यक्षिणी एक मास के अन्त में निश्चितरूपेण आती हैं। आकर के वह माता, बहन या पत्नी के रूप में साधक का वरण करती हैं। यक्षिणी यदि माता हो जायँ तो दिव्य, कामिक भोजन प्रदान करती है तथा वस्त्र, सुगन्धित द्रव्य और सौ स्वर्ण मुद्रायें प्रदान करती हैं। यदि भगिनी हो जायँ तो सौ योजन से भी उत्तम स्त्रियों को लाकर साधक को समर्पित करती हैं। यदि यक्षिणी देवी

पत्नी के रूप में साधक का वरण करें तो प्रति आठवें दिन दिव्य वस्त्र तथा रसायन प्रदान करती हैं ॥७॥

॥ अथानुरागिणीसाधनम् ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं अनुरागिणि आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

इह काश्मीरकुङ्कुमेन भूर्जपत्रे स्त्रीसदृशीं प्रतिमां विलिख्यावाहनादिकं कृत्वा गन्धपुष्पधूपदीपादिकं दत्त्वा ताम्बूलानि निवेद्य सहस्रं प्रत्यहं जपेत् । मासमेकं त्रिसन्ध्यं जपेत्, मासान्ते पौर्णमास्यां विधिवत्पूजां कृत्वा घृतदीपं प्रज्वाल्य समग्ररात्रौ मन्त्रं प्रजपेत् । ततः प्रभातसमये नियतमागच्छति, आगता सा सर्वकामप्रदा भवति, दिव्यरसायनानि ददाति, प्रत्यहं च दीनाराणां सहस्रं ददाति । तस्याः प्रसादेन वर्षसहस्राण्यायुश्च भवति ॥८॥

अथ अनुरागिणी यक्षिणी का साधन—"ॐ ह्रीं अनुरागिणि आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" कश्मीर में उत्पन्न केसर के द्वारा भोजपत्र पर स्त्री के समान चित्र बनाकर आवाहन आदि करके गन्ध, पुष्प, धूप तथा दीपादि प्रदान करके ताम्बूल का निवेदन करे और प्रतिदिन सहस्र मन्त्र का जप करे । एक मास तक तीनों सन्ध्याओं में जप-पूजन करना चाहिए । मास के अन्त में पूर्णमासी को विधिवत् पूजा करके घृत का दीपक जलाकर सम्पूर्ण रात्रि मन्त्र का जप करना चाहिए, तब उषा-काल में यक्षिणी निश्चितरूपेण आती हैं । आने पर वह सारी कामनाओं की पूर्ति करती हैं । वह दिव्य रसायन प्रदान करती हैं तथा प्रत्येक दिन सहस्र दीनार मुद्राएँ प्रदान करती हैं । उन यक्षिणी के प्रसाद से साधक की हजार वर्ष की आयु हो जाती है ॥८॥

॥ अथ षट्त्रिंशद्यक्षिण्यः ॥

विचित्रा विभ्रमा हंसी भीषणी जनरञ्जिनी ।
विशाला मदना घण्टा कालकर्णी महाभया ॥१॥
माहेन्द्री शङ्खिनी चान्द्री श्मशाना वटयक्षिणी ।
मेखला विकला लक्ष्मीर्मालिनी शतपत्रिका ॥२॥
सुलोचना सुशोभाढ्या कपालिनी विशालिनी ।
नटी कामेश्वरी स्वर्णरेखा च सुरसुन्दरी ॥३॥
मनोहरा प्रमोदानुरागिणी नखकेशिका ।
भामिनी पद्मिनी चैव स्वर्णावती रतिप्रिया ॥४॥
षट्त्रिंशदेता यक्षिण्यः कथिताः सिद्धिकामदाः ।
करङ्किणीमते तन्त्र महादेवेन विस्तरात् ॥५॥
आराधनं महत्तासां प्रवक्ष्यामि समासतः ।
फलं चैव यथा तुष्टाः प्रयच्छन्ति समाहितम् ॥६॥

अथ छत्तीस यक्षिणियों का कथन—विचित्रा, विभ्रमा, हंसी, भीषणी, जनरञ्जिनी, बिशाला, मदना, घण्टा, कालकर्णी, महाभया, माहेन्द्री, शङ्खिनी, चान्द्री, श्मशाना, वटयक्षिणी, मेखला, विकला, लक्ष्मी, मालिनी, शतपत्रिका, सुलोचना, सुशोभाढ्या, कपालिनी, विशालिनी, नटी, कामेश्वरी, स्वर्णरेखा, सुरसुन्दरी, मनोहरा, प्रमोदा, अनुरागिणी, नखकेशिका, भामिनी, पद्मिनी, स्वर्णावती तथा रतिप्रिया—ये सिद्धिप्रदा ३६ यक्षिणियाँ कही गई हैं । करङ्किणीमत तन्त्र में महादेव ने विस्तारपूर्वक इनका वर्णन किया है । इन यक्षिणियों का महान् आराधन संक्षेप से कह रहा हूँ जो प्रसन्न होने पर यथेष्ट फल प्रदान करती हैं ॥१-६॥

॥ अथ विचित्रासाधनम् ॥

लक्षद्वयं जपेन्मन्त्रं वटवृक्षतले शुचिः ।
पश्चाच्चम्पकपुष्पैश्च होमं मधुघृतार्चितम् ॥७॥
कुर्याद् दशांशतो मन्त्री शङ्करेणोदितं यथा ।
ततः सिद्धा भवेद् देवि विचित्रा वाञ्छितप्रदा ॥८॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ विचित्रे चित्ररूपिणि मे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।

अथ विचित्रा साधन--पवित्र होकर बरगदवृक्ष के नीचे ऊपर लिखित "ॐ विचित्रे""कुरु कुरु स्वाहा।" मन्त्र का दो लाख जप करें। तत्पश्चात् शहद, घृत तथा चम्पा के फूलों से साधक शिव के द्वारा कथित प्रकार से दशांश हवन करें, तब वाञ्छित वस्तु प्रदान करने वाली विचित्रा यक्षिणी सिद्ध हो जाती हैं ॥७-८॥

॥ अथ विभ्रमासाधनम् ॥

लक्षद्वयं जपेन्मन्त्रं श्मशाने निभृते निशि ।
घृताक्तैर्गुग्गुलैर्होमे दशांशेन कृते सति ॥९॥
विभ्रमा तोषमायाति पञ्चाशन्मानुषैः समम् ।
ददाति भोजनं द्रव्यं प्रत्यहं शंकरोऽब्रवीत् ॥१०॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं विभ्रमे विभ्रमाङ्गरूपे विभ्रमं कुरु रहिं रहिं भगवति स्वाहा ।

अथ विभ्रमा साधन--रात्रि में शान्तचित्त से श्मशान में जाकर ऊपर लिखित मन्त्र "ॐ ह्रीं विभ्रमे""भगवति स्वाहा" का दो लाख जप करें तथा घृत और गुग्गुल से दशांश हवन करने पर विभ्रमा

यक्षिणी प्रसन्न हो जाती हैं। वे पचास मनुष्यों के पालन हेतु प्रतिदिन भोजन तथा द्रव्य प्रदान करती हैं, ऐसा शिव का कथन है ॥९-१०॥

॥ अथ हंसीसाधनम् ॥

प्रदेशे नगरस्याथ लक्षसङ्ख्यं जपेन्मनुम् ।
पद्मपत्रैर्घृतोपेतैः कृते होमे दशांशतः ॥११॥
प्रयच्छत्यञ्जनं हंसी येन पश्यति भूनिधिम् ।
सुखेन तं च गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥१२॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रीं नमो हंसि हंसवाहिनि क्लीं क्लीं स्वाहा ।

अथ हंसी साधन—नगर अथवा ग्राम के एकान्त में साधक "ॐ द्रीं नमो""""स्वाहा" इस मन्त्र का एक लाख जप करें तथा कमल की पंखुड़ियों एवं घृत से दशांश हवन करने से हंसी यक्षिणी एक अञ्जन प्रदान करती हैं जिससे साधक पृथ्वी में गड़े धन को प्रत्यक्ष देख लेता है तथा साधक उस निधि को सुखपूर्वक ग्रहण करता है और विघ्नों से तिरस्कृत नहीं होता है ॥ ११-१२ ॥

॥ अथ भीषणीसाधनम् ॥

त्रिपथस्थो जपेन्मन्त्रं लक्षसङ्ख्यं दशांशतः ।
घृताक्तगुग्गुलैर्होमे भीषणी चिन्तितप्रदा ॥१३॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं द्रीं महामोदे भीषणि द्रां द्रां स्वाहा ।

अथ भीषणी साधन—ऊपर लिखित "ॐ ऐं द्रीं" द्रां द्रां स्वाहा" मन्त्र को जहाँ तीन रास्ते मिलते हों वहाँ आसन लगाकर साधक एक लाख की संख्या में जपे और दशांश घृत एवं गुग्गुल से हवन करने पर चिन्तित कार्यों को पूर्ण करनेवाली भीषणी यक्षिणी सिद्ध हो जाती हैं ॥१३॥

॥ अथ जनरञ्जिनीसाधनम् ॥

कदम्बाधो जपेन्मन्त्र निशि लक्षद्वयं ततः ।
घृताक्तगुग्गुलैर्होमे देवी सौभाग्यदा भवेत् ॥१४॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं क्लीं जनरञ्जिनि स्वाहा ।

अथ जनरञ्जिनी साधन—कदम्ब वृक्ष के नीचे ऊपर लिखित "ॐ ह्रीं क्लीं जनरञ्जिनि स्वाहा" मन्त्र का रात्रि में दो लाख जप करें तथा घृत एवं गुग्गुल से दशांश हवन करने से यक्षिणी सौभाग्य प्रदान करती हैं ॥१४॥

॥ अथ विशालासाधनम् ॥

विञ्चावृक्षतले मन्त्रं लक्षमावर्त्तयेच्छुचिः ।
शतपत्रोद्भवैः पुष्पैः सघृतैर्होममाचरेत् ॥१५॥
ततः सिद्धा भवेद् देवि विशालाकाशगामिनी ।
ददाति मन्त्रिणे तुष्टा रसं दिव्यरसायनम् ॥१६॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं ह्रीं विशाले स्त्रां स्त्रीं एह्येहि स्वाहा ।

अथ विशाला साधन—चिञ्चा वृक्ष के नीचे पवित्र होकर "ॐ ऐं ह्रीं""एह्येहि स्वाहा" इस मन्त्र का एक लाख जप करें तथा घृतयुक्त कमल के पुष्पों से हवन दशांश भाग में करें तो आकाश में गमन करने वाली विशाला यक्षिणी सिद्ध हो जाती हैं। मन्त्री को प्रसन्न होकर दिव्य रसायन प्रदान करती हैं ॥१५-१६॥

॥ अथ मदनासाधनम् ॥

लक्षसङ्ख्यं जपेन्मन्त्रं राजद्वारे स्थितः शुचिः ।
सक्षीरमालतीपुष्पैः कृते होमे दशांशतः ॥१७॥

मदना यक्षिणी तुष्टा गुटिकां सम्प्रयच्छति ।
यया आस्यस्थयाऽदृश्यः शुचिः स्थायी भवेन्नरः ॥१८॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं मदने मदनविडम्बिनि आलये सङ्गमं देहि देहि श्रीं स्वाहा ।

अथ मदना साधन—पवित्र होकर राजद्वार पर स्थित होकर "ॐ ह्रीं मदने""""देहि देहि श्रीं स्वाहा" इस मन्त्र का एक लाख जप करें, दूध तथा चमेली के पुष्पों से दशांश हवन करें, तब मदना यक्षिणी प्रसन्न होकर गुटिका प्रदान करती हैं, जिसे पवित्र साधक मुख में रखकर अदृश्य हो जाता है ॥१७-१८॥

॥ अथ घण्टासाधनम् ॥

सुघण्टां वादयन्मन्त्री जपेन्मन्त्रायुतद्वयम् ।
तत्र क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ॥१९॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं द्रीं पुरीं क्षोभय प्रजाः क्षोभय भगवति गम्भीर-स्वने स्वप्ने स्वाहा ।

अथ घण्टा साधन—सुन्दर घण्टे को बजाता हुआ साधक एकान्त में २० हजार "ॐ ऐं द्रीं स्वप्ने""स्वाहा" इस मन्त्र का जप करे। ऐसा साधक दर्शन से ही संसार को क्षुब्ध कर देता है ॥१९॥

॥ अथ कालकर्णीसाधनम् ॥

लक्षसङ्ख्यं मनुं जप्त्वा पलाशतरुजेन्धनैः ।
मधुनाक्तैः कृते होमे कालकर्णी प्रसीदति ॥२०॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ हुं कालकर्णि ठः ठः स्वाहा ।

अथ कालकर्णी साधन—"ॐ हुं कालकर्णि ठः ठः स्वाहा" इस मन्त्र का एक लाख जप करके पलाश वृक्ष की समिधाओं से शहद के द्वारा दशांश हवन करने पर कालकर्णी यक्षिणी प्रसन्न होती है ।।२०।।

सौख्यं ददाति तुष्टा वै गतिस्तम्भकरी भवेत् ।
सततं संस्मरेन्मन्त्री विविधाश्चर्यकारिणीम् ।।२१।।

वे प्रसन्न होकर सौख्य प्रदान करती हैं तथा शत्रु आदि की गति का स्तम्भन करती है। मन्त्री (साधक) ऐसी विविध आश्चर्यजनक कार्यों का साधन करने वाली देवी का निरन्तर स्मरण करे ।।२१।।

।। अथ महाभयासाधनम् ।।

अस्थिमुद्राधरो लक्षं श्मशाने प्रजपेन्मनुम् ।
ततो महाभया सिद्धा यच्छत्यस्य रसायनम् ।।२२।।

।। मन्त्रः ।।

ॐ द्रीं महाभये प्रें स्वाहा ।

अथ महाभया साधन—हड्डियों (मनुष्य की अस्थियों) की मुद्राओं को अँगुलियों में धारण करके श्मशान में "ॐ द्रीं महाभये प्रें स्वाहा" एक लाख मन्त्रों का जप करें तब महाभया यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को रसायन प्रदान करती हैं ।।२२।।

तेनभक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत् ।
वलीपलितनिर्मुक्तो न रोगं समवाप्नुयात् ।।२३।।

उस रसायन के भक्षण करने से साधक बलिष्ठ होकर पर्वतों का भी चालन कर सकता है तथा बाल सफेद होना इत्यादि वृद्धावस्था के कारणों से मुक्त होकर नीरोग रहता है ।।२३।।

।। अथ माहेन्द्रीसाधनम् ।।

शक्रचापोदये लक्षं निर्गुण्डीतुलसीस्थितः ।
जपेन्मन्त्र ततः सिद्धा भवेत् पातालसिद्धिदा ।।२४।।

।। मन्त्रः ।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रि मन्त्रसिद्धिं कुरु कुरु कुलु कुलु हंसः सोहं स्वाहा ।

अथ माहेन्द्री साधन—इन्द्रधनुष के उदय होने पर निर्गुण्डी (सम्भालू) तथा तुलसी वृक्षके नीचे बैठ कर साधक "ॐ ह्रीं माहेन्द्रि ·····सोहं स्वाहा" एक लाख मन्त्र का जप करें तो पाताल में सिद्धि देने वाली माहेन्द्री यक्षिणी सिद्ध हो जाती हैं ।।२४।।

।। अथ शङ्खिनीसाधनम् ।।

मन्त्रायुतं जपेन्मन्त्री सति भानूदये शुचिः ।
शङ्खमालिकया पश्चादिन्धनैः करवीरजैः ।।२५।।
घृताक्तैर्होमयेन्मन्त्री दशांशेन शुचिस्ततः ।
ध्रुवं सिद्धा भवेद् देवी शङ्खिनी वाञ्छितप्रदा ।।२६।।

।। मन्त्रः ।।

ॐ ह्रीं शङ्खधारिणि शङ्खधारणे द्रां द्रीं क्लीं श्रीं स्वाहा ।

अथ शङ्खिनी साधन—पवित्र होकर सूर्य के उदय होने पर साधक शङ्ख की माला से "ॐ ह्रीं·········श्रीं स्वाहा" इस मन्त्र का दश हजार जप करे, फिर घृतयुक्त कनेर की लकड़ियों से पवित्र होकर दशांश हवन करें तो वाञ्छित प्रदान करने वाली शङ्खिनी यक्षिणी निश्चितरूपेण सिद्ध होती हैं ।।२५-२६।।

।। अथ चान्द्रीसाधनम् ।।

एवं चान्द्रयाः साधनमपि बोध्यम् ।

अथ चान्द्री साधन—इसी प्रकार चान्द्री का साधन भी समझना चाहिए ।

॥ अथ श्मशानासाधनम् ॥

चतुर्लक्षमिमं मन्त्रं श्मशाने प्रजपेच्छुचिः ।
नग्नव्रतोऽञ्जनं तुष्टा श्मशाने सम्प्रयच्छति ॥२७॥
तेन पश्येन्नरोऽदृश्यो विचरेद्वसुधातले ।
निधिं पश्यति गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥२८॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रां द्रीं श्मशानवासिनि स्वाहा ।

अथ श्मशाना साधन—पवित्र होकर नग्नव्रत धारण करके साधक श्मशान में "ॐ द्रां द्रीं श्मशानवासिनि स्वाहा" इस मन्त्र का चारलाख जप करें तो प्रसन्न होकर देवी श्मशान में अञ्जन प्रदान करती हैं, उससे साधक पृथ्वी पर विचरण करता हुआ मनुष्यों के द्वारा देखा नहीं जाता है। पृथ्वी में गड़ी निधि को वह साधक देख लेता है और उसे ग्रहण कर लेता है। वह साधक विघ्नों से पराजित नहीं होता है ॥२७-२८॥

॥ अथ वटयक्षिणीसाधनम् ॥

त्रिपथस्थो वटाधःस्थो रात्रौ मौनी जपेत्तु वै ।
लक्षत्रयं ततः सिद्धा देवी स्याद् वटयक्षिणी ॥२९॥
वस्त्रालङ्करणं दिव्यं रससिद्धिं रसायनम् ।
दिव्याञ्जनं च संतुष्टा साधकस्य प्रयच्छति ॥३०॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ श्रीं द्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ।

अथ वटयक्षिणी साधन—जहाँ तीन रास्ते मिल रहे हों वहाँ स्थित बरगद वृक्ष के नीचे रात्रि में मौन धारण करके "ॐ श्रीं द्रीं ...... एह्येहि स्वाहा" इस मन्त्र का तीन लाख जप करें तो वटयक्षिणी देवी सिद्ध हो जाती हैं, तब देवी वस्त्र, अलंकार, दिव्य रसों की सिद्धि तथा रसायन और दिव्य अञ्जन साधक को प्रदान करती हैं ॥२९-३०॥

॥ अथ मदनमेखलासाधनम् ॥

मधूकवृक्षतले मन्त्रं चतुर्दशदिनावधि ।
प्रजपेन्मेखला तुष्टा ददात्यञ्जनमुत्तमम् ॥३१॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रीं हुं मदनमेखलायै मदनविडम्बनायै नमः स्वाहा ।

अथ मदनमेखला साधन—"ॐ द्रीं हुं ... नमः स्वाहा" इस मन्त्र को चौदह दिन तक एक लाख जप करें तो मदनमेखला प्रसन्न होकर उत्तम अञ्जन प्रदान करती है ॥३१॥

॥ अथ विकलासाधनम् ॥

गुहान्तःस्थोऽधरे मासत्रयं मन्त्रं जपेन्नरः ।
ततः सिद्धा भवेद् देवि विकला वाञ्छितप्रदा ॥३२॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा ।

अथ विकला साधन—पर्वत की निचली गुफा के अन्तर्गत स्थित होकर साधक तीन मास तक "ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा" इस मन्त्र का तीन लाख जप करें तो इष्ट प्रदान करने वाली विकला यक्षिणी सिद्ध होती हैं ॥३२॥

॥ अथ लक्ष्मीसाधनम् ॥

स्वगृहावस्थितो रक्तैः प्रसूनैः करवीरजैः ।
लक्षमावर्तयेन् मन्त्री दूर्वाज्याभ्यां दशांशतः ॥३३॥
होमे कृते भवेत् सिद्धा लक्ष्मीनाम्नी च यक्षिणी ।
रसं रसायनं दिव्यं निधानं च प्रयच्छति ॥३४॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्मि कमलधारिणि हं सः सो हं स्वाहा ।

अथ लक्ष्मी साधन—साधक अपने घर में स्थित होकर एक लाख "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं.........सो हं स्वाहा" मन्त्र का जप करें तथा लाल कनेर के पुष्प एवं दुर्वा तथा घृत से दशांश हवन करें। होम करने पर लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्धप्रद होती हैं तथा रस, रसायन एवं दिव्य (धन का) भण्डार प्रदान करती हैं ॥३३-३४॥

॥ अथ मालिनीसाधनम् ॥

चतुष्पथस्थितो लक्षमापदि प्रजपेन्मनुम् ।
मालिनी जायते सिद्धा दिव्यं खड्गं प्रयच्छति ॥३४॥
यत्प्रभावेन लोकेऽस्मिन् दुर्लभं राज्यमाप्नुयात् ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रीं ॐ नमो मालिनि स्त्रि एह्येहि सुन्दरि हंसहंसि समीहं मे सङ्गमय स्वाहा ।

अथ मालिनी साधन--शत्रु आदि के द्वारा विपन्न करने पर साधक "ॐ द्रीं ॐ नमो......मे सङ्गमय स्वाहा" इस मन्त्र को चौराहे पर बैठ

कर एक लाख जप करें तो मालिनी यक्षिणी सिद्ध होकर दिव्य खड्ग प्रदान करती हैं, जिसके प्रभाव से इस संसार में दुर्लभ राज्य को प्राप्त कर लेता है ॥३४॥

॥ अथ शतपत्रिकासाधनम् ॥

शतपत्रवने यस्तु मन्त्रलक्षं जपेन्मुनिः ।
क्षीराज्यहोमैः संसिद्धा सिद्धिं यच्छति भूनिधिम् ॥३५॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रीं शतपत्रिके द्रीं द्रीं श्रीं स्वाहा ।

अथ शतपत्रिका साधन--जो कमल के समूह में बैठ कर मौन धारण करके "ॐ द्रीं शत-पत्रिके द्रीं द्रीं श्रीं स्वाहा" लक्षमन्त्र का जप करे तथा दूध, घृत से हवन करने पर शतपत्रिका यक्षिणी सिद्ध होकर पृथ्वी की निधि प्रदान करती हैं ॥३५॥

॥ अथ सुलोचनासाधनम् ॥

नदीतीरस्थितो लक्षत्रयं मन्त्री जपेन्मनुम् ।
घृतहोमे दशांशेन कृते देवी प्रसीदति ॥३६॥

अथ सुलोचना-साधन--मन्त्र-साधक "ॐ द्रीं क्लीं ......देहि देहि स्वाहा" इस मन्त्र को नदी के किनारे स्थित रह कर तीन लाख जप करे, दशांश घृत से होम करने पर देवी प्रसन्न होती हैं ॥३६॥

ददाति पादुकां तस्मै यथारुचि नभस्तले ।
मनःपवनवेगेन याति चायाति साधकः ॥३७॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रीं क्लीं सुलोचने सिद्धिं मे देहि देहि स्वाहा ।

साधक को पादुका प्रदान करती है जिससे इच्छानुसार साधक आकाश में मन एवं पवन के वेग से गमनागमन करता है ॥३७॥

॥ अथ शोभनासाधनम् ॥

रक्ताम्बरधरो मन्त्री चतुर्दशदिनावधि ।
जपेत् सिद्धा भवेद् देवी शोभना भोगदायिनी ॥३८॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रीं अशोकपल्लवकरतले शोभने श्रीं क्षः स्वाहा ।

अथ शोभना-साधन – साधक रक्तवस्त्र धारण करके चौदह दिनों तक "ॐ द्रीं ...... श्रीं क्षः स्वाहा" इस मन्त्र का जप करे तो भोगदायिनी शोभना सिद्ध हो जाती हैं ॥३८॥

॥ अथ कपालिनीसाधनम् ॥

महाव्रतधरो मन्त्री यः शाल्योदनभोजनैः ।
लक्षद्वयं जपेन्मन्त्रं कपालं लभते मुनिः ॥३९॥
आकाशगमनं दूरात् स्वप्नरूपसमागमः ।
दूराद्दर्शनमित्यादि साधकाय प्रयच्छति ॥४०॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं कपालिनि द्रां द्रीं क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं क्लः हूं सः सोहं सकलह्रीं फट् स्वाहा ।

अथ कपालिनी साधन—जो साधक, महाव्रत को धारण करके चावल (खीर) का भोजन करते हुए मौन रखकर दो लाख "ॐ ऐं कपालिनि ...... सोहं सकल ह्रीं फट् स्वाहा" इस मन्त्र का जप करे, तो साधक को एक कपाल की प्राप्ति होती है, जिससे दूर से ही स्वप्न रूप समागम होता है तथा आकाश-गमन होता है। साधक को दूर से ही देवी दर्शन प्रदान करती हैं ॥३९-४०॥

॥ अथ विशालिनीसाधनम् ॥

सरित्तीरे जपेन्मन्त्रमर्धं लक्षस्य देशिकः ।
घृताक्तगुग्गुलैर्होमे देवी सौभाग्यदा भवेत् ॥४१॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ वरयक्षिणि वरयक्ष विशालिनि आगच्छ आगच्छ प्रियं मे भवतु हैमे भव स्वाहा ।

अथ विशालिनी साधन—साधक नदी के किनारे ५० हजार "ॐ वरयक्षिणी ...... भव स्वाहा" इस मन्त्र का जप करें तथा घृत से युक्त गुग्गुल का हवन करें तो देवी सौभाग्य प्रदान करती हैं ॥४१॥

॥ अथ नटीसाधनम् ॥

पुण्याशोकतलं गत्वा चन्दनेन सुमण्डलम् ।
कृत्वा चाभ्यर्चयेद् देवीं धूपं दत्त्वा सहस्रकम् ॥४२॥
मन्त्रमाराधयेन्मासं नक्तंभोजी रहः सदा ।
रात्रौ पूजां शुभां कृत्वा जपेन्मन्त्रं मुनिव्रतः ॥४३॥
नटी देवी समागत्य निधानं रसमञ्जनम् ।
ददाति मन्त्रिणे मन्त्रं दिव्ययोगं च सिद्धिदम् ॥४४॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ द्रीं नटि महानटि रूपवति द्रीं स्वाहा ।

अथ नटी साधन—पवित्र अशोक वृक्ष के नीचे जाकर चन्दन से मण्डल का निर्माण करके धूप देकर देवी की पूजा करे और "ॐ द्रीं नटि महानटि रूपवति द्रीं स्वाहा" सहस्र मन्त्र का जप एक महीने तक सदा एकान्त में रहकर करें और रात्रि में भोजन करें। रात्रि में पुनः शुभ पूजा करके मौन रहकर मन्त्र का जप करें तो नटी देवी आकर साधक को रस, अञ्जन तथा निधि-भण्डार प्रदान करती हैं एवं सिद्धिप्रद दिव्य योग देती हैं ॥४२-४४॥

॥ अथ कामेश्वरीसाधनम् ॥

एकासने शुचौ देशे त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रकम् ।
मासमेकं जपेन्मन्त्रं तदा पूजां समारभेत् ॥४५॥

पुष्पैर्धूपैश्च नैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः ।
रात्रौ देवीं समभ्यर्च्य जपेन्मन्त्रं प्रसन्नधीः ॥४६॥
अर्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।
रसं रसायनं दिव्यं वस्त्रालङ्करणानि च ॥४७॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा ।

अथ कामेश्वरी साधन एक आसन पर बैठ कर पवित्र स्थान में तीनों सन्ध्याओं में "ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा" इस मन्त्र का तीन हजार एक मास तक जप करें और पूजा का आरम्भ करें ॥४५॥

प्रसन्न बुद्धि से पुष्प, धूप, नैवेद्य तथा घृतयुक्त दीपकों के द्वारा रात्रि में देवी की अर्चना करके मन्त्र का जप करना चाहिए तो अर्ध-रात्रि में देवी आकर रस, रसायन, दिव्य वस्त्र एवं गहने प्रदान करती हैं ॥४६-४७॥

॥ अथ स्वर्णलेखसुरसुन्दर्योः साधनम् ॥

स्वर्णलेखा (स्वर्णरेखा) सुरसुन्दरी च प्रागुक्ता ।

अथ स्वर्णलेखा तथा सुरसुन्दरी साधन—स्वर्णलेखा (स्वर्णरेखा) तथा सुरसुन्दरी का साधन पहले कहा जा चुका है ।

॥ अथ मनोहरासाधनम् ॥

नदीतीरे शुभे रम्ये चन्दनेन सुमण्डलम् ।
विधाय पूजयेद् देवीं ततो मन्त्रायुतं जपेत् ॥४८॥
एकविंशतिघस्रान्तं प्रसन्ना वितरेत् सदा ।
अर्धरात्रे गते देवी दीनाराणां सहस्रकम् ॥४९॥

ददाति प्रत्यहं तस्मै व्ययं कुर्याद् दिने दिने ।
तद्व्ययाभावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥५०॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा ।

अथ मनोहरा साधन—पवित्र तथा सुन्दर नदी के तट पर चन्दन (रक्त) से मण्डल का निर्माण करें और देवी की पूजा करके "ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा" १० हजार मन्त्र का जप करें । २१ दिनों तक अनुष्ठान करने से प्रसन्न देवी आधी रात में सहस्र दीनार प्रदान करती हैं । इन्हें प्रतिदिन व्यय कर देना चाहिए । सहस्र दीनार का प्रतिदिन व्यय न करने से देवी पुनः दीनार नहीं प्रदान करती हैं और क्रोधित हो जाती हैं ॥४८-५०॥

॥ अथ प्रमोदासाधनम् ॥

अर्धरात्रे समुत्थाय सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ।
मासमेकं ततो देवी निधिं दर्शयति ध्रुवम् ॥५१॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा ।

अथ प्रमोदा साधन—साधक "ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा" मन्त्र को अर्द्धरात्रि में उठकर सहस्र बार जप करें । ऐसा एक मास तक नित्य करें तो देवी निश्चितरूपेण निधि का दर्शन करा देती हैं ॥५१॥

॥ अथानुरागिणीसाधनम् ॥

कुङ्कुमेन समालिख्य भूर्जे देवीं सुलक्षणाम् ।
प्रतिपत्तिथिमारभ्य धूपदीपादिभिर्वराम् ॥५२॥

कृत्वा देवीं सहस्रञ्च त्रिसन्ध्यं परिवर्तयेत् ।
माससमेकं ततः पूजां रात्रौ कृत्वा पुनर्जपेत् ॥५३॥

अर्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।
दीनाराणां सहस्रं कं प्रत्यहं परितोषिता ॥५४॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ अनुरागिणि मैथुनप्रिये यक्षकुलप्रसूते स्वाहा ।

अथ अनुरागिणी साधन--कुङ्कुम के द्वारा भोजपत्र पर सुन्दर लक्षणवाली देवी का चित्र बनाकर धूप, दीप आदि के द्वारा प्रतिपदा तिथि से आरम्भ करके देवी की पूजा करके तीनों सन्ध्याओं में "ॐ अनुरागिणि ...स्वाहा" सहस्र मन्त्र का जप करें। इसी प्रकार एक मास तक पूजा करते हुए रात्रि में पुनः मन्त्र का जप करें तो प्रत्येक दिन प्रसन्न देवी अर्धरात्रि में आकर सहस्र दीनार प्रदान करती हैं।।५२-५४॥

॥ अथ नखकेशिकासाधनम् ॥

गत्वा पक्षिगृहं मन्त्री नखकेशैः प्रपूजयेत् ॥५५॥
दिनैकविंशतिर्यावत् पूजां कृत्वा ततो निशि ।
आवर्तयेदेकचित्तो मन्त्री मन्त्रं सुसंयतः ॥५६॥
निशार्धे वाञ्छितं कार्यं देव्यागत्य प्रयच्छति ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं नखकेशिके स्वाहा ।

अथ नखकेशिका साधन--साधक पक्षि-गृह (घोंसले) में जाकर नख तथा बालों से देवी की पूजा करें। २१ दिनों तक रात्रि में पूजा करके संयत और एकचित्त से "ॐ ह्रीं नखकेशिके स्वाहा" इस मन्त्र

का जप करें तो देवी आधी रात में आकर वाञ्छित कार्य सिद्ध करती हैं ॥५५-५६॥

॥ अथ भामिनीसाधनम् ॥

दिनत्रयमनाहारी सोमसूर्यग्रहे सति ॥५७॥
स्पर्शाद् विमुक्तिपर्यन्तं जपेत् तद्गतमानसः ।

ततः प्रसन्ना सा देवी यच्छत्यञ्जनमुत्तमम् ॥५८॥
तेनाञ्जितो नरोऽदृश्यं निधिं पश्यति भूगतम् ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं यक्षिणि भामिनि रतिप्रिये स्वाहा ।

अथ भामिनी साधन--तीन दिन तक बिना भोजन के रहकर चन्द्रमा तथा सूर्य के ग्रहण में स्पर्श से मुक्ति पर्यन्त देवी का मन से ध्यान करते हुए "ॐ ह्रीं यक्षिणि भामिनि रतिप्रिये स्वाहा" इस मन्त्र का जप करें तो प्रसन्न होकर देवी अञ्जन प्रदान करती हैं। उससे अञ्जित नेत्रों वाला मनुष्य अदृश्य हो जाता है तथा पृथिवी में स्थित निधि दृष्टिगत होती है ॥५७-५८॥

॥ अथ पद्मिनीसाधनम् ॥

पद्मिनी प्रागुक्ता ।

अथ पद्मिनी साधन—पद्मिनी यक्षिणी का साधन पहले कहा जा चुका है।

॥ अथ स्वर्णावतीसाधनम् ॥

वटवृक्षतले कृत्वा चन्दनेन सुमण्डलम् ॥५९॥
यक्षिणीं पूजयित्वा तु नैवेद्यमुपदर्शयेत् ।
शशमांसं घृतं क्षीरं मन्त्रमावर्तयेत्ततः ॥६०॥

दिने दिने सहस्त्रं कं यावत्सप्तदिनं भवेत् ।
अथागत्य सदा तस्मै मन्त्रमञ्जनमुत्तमम् ॥६१॥
यत्प्रभावान्तरे सर्वं पश्येन्निधिमशङ्कितः ॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ स्वर्णावति स्वाहा ।

अथ स्वर्णावती साधन--साधक बरगद वृक्ष के नीचे जाकर लाल चन्दन से मण्डल का निर्माण करे और यक्षिणी की पूजा करके खरगोश का मांस, घृत, क्षीर (खीर) का नैवेद्य प्रदान करे एवं प्रतिदिन एक-एक हजार "ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ स्वर्णावति स्वाहा" इस मन्त्र का सात दिन तक जप करे तो स्वर्णावती आकर साधक को उत्तम अञ्जन प्रदान करती हैं, जिसके प्रभाव से बिना शङ्का के साधक सम्पूर्ण निधि को देख लेता है ॥५९-६१॥

॥ अथ रतिप्रियासाधनम् ॥

शङ्खलिप्तपटे यस्माद् देवीं गौरीं धृतोत्पलाम् ॥६२॥
सर्वालङ्कारिणीं दिव्यां समालिख्यार्चयेन्नरः ।
जातीपुष्पैः प्रपूज्याथ सहस्त्रं परिवर्तयेत् ॥६३॥
सप्ताहं मन्त्रवित् तस्याः कुर्यादर्चां शुभां ततः ।
अर्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ॥६४॥
पञ्चविंशतिदीनारान प्रत्यहं परितोषिता ।
वाञ्छितं मनसस्तस्मै मन्त्रज्ञाय न संशयः ॥६५॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ।

इति श्रीशिव-पार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धते उड्डामरेश्वर-महातन्त्रे यक्षिणीसाधनं नाम नवमः पटलः ॥९॥

अथ रतिप्रिया साधन— शंखचूर्ण से पुते हुए वस्त्र पर कमल को धारण करने वाली, गौरवर्ण तथा सभी अलंकारों से युक्त दिव्य देवी का चित्र बनाकर चमेली के पुष्पों से उनका पूजन करें और मन्त्रवित् एक सप्ताह तक शुभार्चा करते हुए नित्य "ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा" इस सहस्र मन्त्र का जप करे तो अर्धरात्रि में देवी आकर प्रसन्न होकर प्रतिदिन २५ दीनार प्रदान करती है ॥६२-६५॥

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डा-मरेश्वरमहातन्त्र में यक्षिणीसाधन नामक नवम पटल समाप्त हुआ ॥९॥

दशमः पटलः

तत्र चेटकसाधनम् । अथ चेटका लिख्यन्ते—

कामातुरेण चित्तेन निशि मन्त्रं जपेत्सदा ।
जप्तोऽवश्यं वश्यकरो मन्त्रोऽयं नात्र संशयः ॥१॥

॥ मन्त्रः ॥

ओं ऐं स्कीं क्लीं क्लीं सहवल्लरि क्लीं कामपिशाच क्लीं ह्रीं कामपिशाच अमुकीं कामिनीं कामयाम्यहं तां कामेन ग्राह्य ग्राह्य स्वप्ने मम रूपे नखैर्विदारय विदारय द्रावय द्रावय अस्त्रेण बन्धय बन्धय श्रीं फट् स्वाहा ।

यहाँ चेटक-साधन कहा जा रहा है। चेटकमन्त्रों का निरूपण किया जा रहा है--

रात्रि में कामातुरचित से सदा "ओं ऐं स्कीं क्लीं क्लीं""श्रीं फट् स्वाहा" इस मन्त्र को जपना चाहिए, यह स्त्रियों के लिए वश्यकारी मन्त्र है, इसमें संशय नहीं करना चाहिए। 'अमुकी' के स्थान पर अभिलषित स्त्री का नाम लेना चाहिए।

॥ अथ मृतकोत्थापनमन्त्रः ॥

जपेन्मासत्रयं मन्त्रं कम्बलः सुप्रसन्नधीः ।
मृतकोत्थापनं कुर्यात् प्रतिमां चालयेत्तथा ॥२॥

॥ मन्त्रः ॥

सदारक्तकम्बल महादेवदूत मृतकमुत्थापय उत्थापय प्रतिमां चालय चालय पर्वतान् कम्पय कम्पय लीलया विलसय विलसय ईं ईं फट् स्वाहा ।

अथ मृतकोत्थापन मन्त्र--सुप्रसन्न बुद्धि से कम्बल के आसन पर बैठकर तीन मासों तक "सदा रक्तकम्बल महादेवदूत""फट् स्वाहा" इस मन्त्र का जप करे, तो वह साधक मृतक को उठा सकता है एवं प्रतिमा को चला सकता है ॥२॥

॥ अथाकर्षणचेटकः ॥

चतुर्लक्षं जपेन्मन्त्रं सागरस्य तटे शुचिः ।
पत्रपुष्पफलादीनि करोत्याकर्षणं ध्रुवम् ॥३॥

॥ मन्त्रः ॥

अभय धुद्धुताकर्ष कर्मकर्त्ता सृष्टिपुत्र अमुकं आकर्षय द्रीं ।

अथ आकर्षणचेटक मन्त्र--पवित्र होकर समुद्र के किनारे "अभय""अमुकं आकर्षय द्रीं" इस मन्त्र को चार लाख जपे तो निश्चितरूपेण पत्र, पुष्प और फल आदि का आकर्षण करने में साधक समर्थ हो जाता है ॥३॥

॥ अथमणिभद्रचेटकः ॥

सहस्राष्टमिमं मन्त्रं जपेत् सप्तदिनावधि ।
प्रत्यहं मणिभद्राख्यः प्रयच्छत्येकरूप्यकम् ॥४॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमो महायक्षाय सेनाधिपतये मौद्धमौद्धधराय सुघटमुद्रावहे स्वाहा ।

अथ मणिभद्रचेटक मन्त्र—"ॐ नमो मणिभद्राय नमः""स्वाहा" इस मन्त्र को सात दिन तक नित्य आठ हजार जप करे तो प्रतिदिन मणिभद्र चेटक साधक को एक रुपया देता है ॥४॥

॥ अथ स्वप्नसिद्धिखेटकः ॥

त्रिसन्ध्यं वलिदानं च निशायां प्रजपेन्मनुम् ।
सहस्रं हि जपेन्नित्यं यावत् स्वप्नं प्रजायते ॥५॥
प्राणिनां मृत्युसमयं वदत्येव न संशयः ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय देहि मे वचनसिद्धिविधानं पार्वतीपते ह्लां ह्लें ह्लौं ह्लः ।

अथ स्वप्नसिद्धिचेटक मन्त्र—साधक तीनों सन्ध्याओं में वलिदान करके रात्रि में "ॐ नमो भगवते"" ह्लौं ह्लः" मन्त्र का एक सहस्र जप करे। यह जप तब तक करना चाहिए जब तक स्वप्न की सिद्धि न हो जाय तो वह निश्चय ही प्राणियों की मृत्यु समय को बता देता है ॥५॥

॥ अथ सागरचेटकः ॥

रात्रौ रात्रौ जपेन्मन्त्रं सागरस्य तटे शुचिः ।
लक्षजापे कृते सिद्धो दत्ते सागरचेटकः ॥६॥
रत्नत्रयं तदा मौन्यं यस्मिन्मन्त्री सुखी भवेत् ।
सहस्रदशकं नित्यं रात्रौ मन्त्रं जपेत्सुधीः ॥७॥
तद्दशांशं मधुपयोमिश्रैः पद्मैश्च होमयेत् ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्र देहि मे निजराशि श्रीं नमोऽस्तु ते स्वाहा ।

अथ सागर-चेटक मन्त्र—साधक पवित्र होकर सागर के तट पर रात्रि में "ॐ नमो भगवते""स्वाहा" एक लाख मन्त्र जपे तो सागर चेटक सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् सुधी साधक रात्रि में दश हजार

मन्त्र जपे तथा शहद, दूध और कमलों से दशांश हवन करे तो सागर-चेटक साधक को तीन रत्न प्रदान करता है जिससे वह मन्त्र-जापक सुखी होता है। यह सर्व विधान मौन धारण करके करना चाहिए ॥६-७॥

॥ रञ्जकमन्त्रः ॥

ॐ ह्लीं अमुकं रञ्जय स्वाहा ।
अनेन मन्त्रेण सर्वजनास्तस्तु रञ्जका भवन्ति ।

अथ रञ्जक मन्त्र—"ॐ ह्लीं अमुकं रञ्जय स्वाहा" इस मन्त्र का जप करते समय 'अमुक' के स्थान पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम लेकर यदि जप करें तो वह व्यक्ति प्रसन्न हो जाता है ॥

॥ अथादृश्यकारिणीविद्या ॥

निशाचरं ध्यात्वाऽऽत्मपाणिना जपनाददृश्यकारिणीं विद्यामाप्नोति ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो रसाचारिणे महेश्वराय मम पर्यटने सर्वलोकलोचनि बन्धय-बन्धय देव्याज्ञापयति स्वाहा ।

अथ अदृश्यकारिणी विद्या—राक्षस का ध्यान करके अपने हाथ से ऊपर लिखित मन्त्र "ॐ नमो रसाचारिणे""देव्याज्ञापयति स्वाहा" का जप करे तो अदृश्यकारिणी विद्या की प्राप्ति होती है।

॥ अथ नृसिंहचेटकः ॥

सकृदुच्चारमात्रेण नृसिंहचेटकाख्यो मन्त्रो डाकिन्यादिदोषं नाशयति ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते हिरण्यकशिपुबलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय प्रेतपिशाचकूष्माण्डब्रह्मराक्षसयोगिनीडाकिनी-

कुलोन्मूलनाय तद्भवाय समस्तदोषान् नाशय नाशय विसर विसर कम्पय कम्पय मथ मथ हूं हूं स्वाहा । एह्येहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ।

अथ नृसिंहचेटक मन्त्र—ऊपर लिखित नृसिंहचेटक मन्त्र "ॐ नमो भगवते""रुद्र आज्ञापयति स्वाहा" का एक बार उच्चारण करने मात्र से भूत-प्रेत डाकिनी आदि के दोष को नष्ट कर देता है ।

॥ अथानिद्राकर्षणम् ॥

प्रेरकः सहस्रपादः अनिद्रामाकर्षयति ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ प्रेरक अमुकीं तव मण्डलं समावर्तय द्रावय दाहय संतापय ह्रौं ।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वर-महातन्त्रे यक्षिणीचेटकनिरूपणं नाम दशमः पटलः ॥१०॥

अथ अनिद्राकर्षण मन्त्र—"ॐ प्रेरक अमुकीं""संतापय ह्रौं" इस मन्त्र का जप करने से प्रेरक सहस्रपाद वाला अनिद्रा का आकर्षण करता है ।

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोधृत उड्डामरेश्वर-महातन्त्र में यक्षिणी-चेटकनिरूपण नामक दशम पटल समाप्त हुआ ॥ १० ॥

एकादशः पटलः

॥ दिग्बन्धनमन्त्रः ॥

वज्रक्रोधाय महादन्ताय दशदिशो बन्ध बन्ध हूं फट् स्वाहा ।

दिग्बन्धन मन्त्र--"वज्रक्रोधाय""हूं फट् स्वाहा" मन्त्रादि प्रयोग के पूर्व इस मन्त्र से चावल या काले उड़द अभिमन्त्रित करके दशों दिशाओं में फेंकना चाहिए, इस प्रकार दिग्बन्धन करना चाहिए ।

॥ अथ योनिसङ्कोचनम् ॥

कुमुदं हरितालं च पिष्ट्वा योनिं प्रलेपयेत् ।
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं च योनिर्भवति संयुता ॥१॥

अथ योनिसङ्कोचन प्रयोग--कुमुदिनी तथा हरिताल (Panicum Dactylon) पीस कर तीन रात्रि अथवा पाँच रात्रियों तक लेप करने से योनि संकुचित होती है ॥१॥

मांसी चन्दनमुस्ता च तगरं नागकेसरम् ।
एभिर्मासप्रयोगं च भगलेपनमुत्तमम् ॥२॥

बालछड़ (Nardostachys Jatamansi), सफेद चन्दन (Sandal wood), नागरमोथा (Cyperus Rotundus), तगर (Valiriana), तथा नागकेसर (Messua Ferrea) को मिलाकर एक मास तक भग पर लेप करने से योनि संङ्कोचन होता है ॥२॥

मालतीकुसुमैस्तैलैर्वल्कैर्वराङ्गलेपनम् ।
ऋतुकालेऽथवा कुर्यात् तदा तत्तुल्यतां भवेत् ॥३॥
डिम्बस्थानीय पञ्चाङ्गं सर्षपतैलपाचितम् ।
सततमभिलेपेन सा भर्त्तारं वशं नयेत् ॥४॥

चमेली के फूल और छाल में तिल के तेल को पकाकर ऋतुकाल

अथवा अन्य समय में योनि पर लेप करने से योनि उसकी तुल्यता अर्थात् कौमार्य अवस्था को प्राप्त हो जाती है ॥ ३ ॥

डिम्ब के पञ्चाङ्ग (जड़, तना, पत्ती, फूल, फल) लेकर सरसों के तेल में पकायें और इसे भग पर लेप करें तो पति वशीभूत हो जाता है ॥ ४ ॥

॥ अथ लिङ्गवर्द्धनम् ॥

मूलं तु वानरीशृङ्गं छागीमूत्रेण लेपयेत् ।
लेपनात्तु ततः शिश्नं यथेच्छं कामयेद् बलात् ॥५॥

अथ लिङ्गवर्धन प्रयोग—जटामांसी की जड़ लेकर बकरी के मूत्र में पीसे और उसे लिङ्ग पर लेप करे तो इच्छानुसार रतिक्रीड़ा में लिङ्ग वर्द्धित होता है ॥५॥

सौभाग्यपिप्पली लाक्षा विषं च क्रमवर्द्धितम् ।
लेपं प्रक्षालितं लिङ्गं नारी कामयते चिरात् ॥६॥

एक भाग सदा सुहागिन, पीपरी (Piper Longum) दो भाग, लाक्षारस तीन भाग तथा वत्सनाभविष (Aconitum Ferax) चार भाग लेकर पीसकर लिङ्ग पर लेप करे और सूख जाने पर धोकर सम्भोग करने पर चिरकाल तक लिङ्ग में प्रबलता रहती है ॥६॥

॥ अथ वीर्यस्तम्भनयोगः ॥

पारावतं तथा गुञ्जा श्वेतोत्पलं समाक्षिकम् ।
नाभिलेपनमित्युक्तं वीर्यस्तम्भकरं परम् ॥७॥

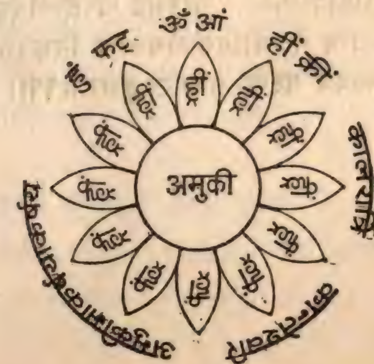
अथ वीर्यस्तम्भन प्रयोग—कबूतर का विष्ठा, घुंघुची (Abrus Precatorius), सफेद कमल का फल तथा सोनामक्खी मिलाकर नाभि पर लेप करें तो वीर्य का स्तम्भन होता है ॥७॥

॥ अथ प्रमदाकर्षणम् ॥

द्वादशारं लिखेच्चक्रं कुङ्कुमेन समन्वितम् ।
भूर्जपत्रेऽथवा वस्त्रे नेत्रे बद्धफलादिके ॥८॥

पत्रे पत्रे लिखेद् बीजं ह्रींकारं परमोज्ज्वलम् ।
साध्यनाम तथा मध्ये कर्णिकायां विशेषतः ॥९॥
विदर्भमन्त्रमुख्येन तत्कूटं परिमण्डले ।
मृत्तिकाभिः समस्ताभिः प्रतिमां कारयेद् दृढम् ॥१०॥
कर्षयेत् प्रमदां नृणां गर्वितां तु न संशयः ।
वैराग्यं न पुनर्याति दासीभावेन तिष्ठति ॥११॥

अथ स्त्री आकर्षण प्रयोग—द्वादश पंखुड़ियों वाला चक्र कुङ्कुम से भोजपत्र अथवा वस्त्र पर लिखे। ये पंखुड़ियाँ बँधे फल (पलकों) वाले नेत्रों के समान होने चाहिए। प्रत्येक पंखुड़ी पर 'ह्रीं' बीज लिखना चाहिए। कर्णिका के मध्य में साध्य का नाम लिखना चाहिए। विदर्भ देश के मुख्य आकर्षण मन्त्र के द्वारा मण्डल के चारों ओर पंखुड़ियों के ऊपर वेष्टित करना चाहिए। सातों मृत्तिका तथा साध्य के पैर के नीचे की मृत्तिका के द्वारा स्त्री (साध्य) की प्रतिमा बनानी चाहिए और मन्त्र जप करना चाहिए। ऐसा करने से घमण्डयुक्त स्त्री निश्चित रूपेण आकर्षित होती है। वह स्त्री दासी के रूप में रहती है और वैराग्य को नहीं प्राप्त करती है ॥८-११॥



॥ अथ वशीकरणाञ्जनम् ॥

दाडिमं पञ्चकोलं च लोहं वज्रोरसं घृतम् ॥
चूर्णं भूमन्दरा शाखा दन्तनखं करोति वै ॥१२॥
मनःशिला प्रियङ्गुश्च रोचना नागकेसरम् ।
नेत्राञ्जनसमायुक्तं सर्वसत्त्ववशङ्करम् ॥१३॥

इति श्रीशिव-पार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वरमहातन्त्रे योनिसंङ्कोचनादिनिरूपणं नामेकादशः पटलः ॥ ११ ॥

अथ वशीकरण अञ्जन—अनार (Tunica Granatum), पञ्चकोली (Long, Pepper, its root, Pits choba, Plumbago and dry ginger), गजबेल (Agallochum), थूहर (Euphorbia Nerifolia) का दूध तथा घृत, लेकर एक में घोंटे। तत्पश्चात् भूमन्दारा(Erythrina Indica) का चूर्ण एवं दाँत और नखों का मल मिलावें। इसमें मैनशिल, प्रियंगु, गोरोचन, नागकेसर घोंटकर इसी के बराबर अञ्जन मिलाकर नेत्रों में आँजने से सभी जीव वश्य हो जाते हैं ॥१२-१३॥

श्रीशिव-पार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डामरेश्वरमहातन्त्र में योनिसंकोचनादि निरूपण नामक एकादश पटल समाप्त हुआ ॥११॥

द्वादशः पटलः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं द्रं चण्डोग्रे त्रिनेत्रे चामुण्डे अरिष्टे हूं फट् स्वाहा। ह्रीं नमाम्यहं महादेवं नृसिंहं भीमरूपिणं ओं नमस्तस्मै ।

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं द्रं"" स्वाहा ह्रीं नमाम्यहं""ओं नमस्तस्मै" यह अरिष्टनाशक चामुण्डा तथा नृसिंह का मन्त्र है। इसका जप करने से अरिष्टों का नाश होता है ॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

उड्डीशेन समाकीर्णे योगिवृन्दसमाकुले ।
प्रणम्य शिरसा गौरी परिपृच्छति शङ्करम् ॥१॥

श्री पार्वती बोली—योगिसमूह से व्याप्त भगवान् शिव को सिर से प्रणाम करके पार्वती शिव से पूछने लगी ॥१॥

॥ श्री-ईश्वर उवाच ॥

शृणु त्वं हि वरारोहे सिद्ध्यर्थं प्रतिवासरे ।
तं वदिष्यामि ते देवि सर्वं तत्समुदाहृतम् ॥२॥

श्री शिव जी बोले—हे सुश्रोणि ! प्रतिदिन सिद्धि प्राप्ति के लिए सुनिये ! जो कुछ तन्त्र शास्त्र में कहा गया है, हे देवि ! उसे मैं कह रहा हूँ ॥२॥

देवि यो द्विजो मन्त्रैस्तु विप्रं हन्यान्न संशयः ।
पूर्वोदितं मयोड्डीशं कथ्यते तव भक्तितः ॥३॥

हे देवि ! जो ब्राह्मण नियमितरूपेण मन्त्रों से दूर नहीं रहता है, उसके लिए पहले कथित उड्डीश तन्त्र तुम्हारी भक्ति से मेरे द्वारा कहा जा रहा है ॥३॥

उड्डीशं च नमस्कृत्य रुद्रं चैव सुदुर्जयम् ।
कपर्दिनं विरूपाक्षं सर्वभूतभयावहम् ॥४॥
प्रथमं भूतकरणं द्वितीयोन्मादनं तथा ।
तृतीयं द्वेषणं चैव तुर्यमुच्चाटनं तथा ॥५॥
ग्रामोच्चाटं पञ्चमं च षष्ठं च जलस्तम्भनम् ।
सप्तममग्निस्तम्भं च वशीकरणमष्टमम् ॥६॥
अन्यानपि प्रयोगांश्च शृणुष्व वै वरानने ।
शिवेन कथिता योगा उड्डीशे शास्त्रनिश्चये ॥७॥

सुदुर्जय, रुद्र, उड्डीश, कपर्दी, विरूपाक्ष, सर्वभूतभयावह शिव को नमस्कार करके प्रथम भूतकरण, द्वितीय उन्मादन, तृतीय विद्वेषण, चतुर्थ उच्चाटन, पञ्चम ग्राम का उच्चाटन, षष्ठ जल का स्तम्भन, सप्तम अग्नि का स्तम्भन एवं अष्टम वशीकरण और अन्य प्रयोगों को सुनिए ।

हे सुमुखि ! निश्चयात्मक शास्त्र उड्डीश में शिव के द्वारा ये योग कहे गये हैं ॥४-७॥

अन्धी च बन्धीकरणं मूकीकारस्तथैव च ।
गात्रसङ्कोचनं चैव भूतज्वरकरस्तथा ॥८॥
अस्त्रशस्त्रस्य त्रुटितं पानीयस्य विनाशनम् ।
दधिमधुनाशनं च मत्तकरणं तथैव च ॥९॥
गजानां वाजिनाञ्चैव प्रकोपनं परस्परम् ।
आकर्षणं भुजङ्गानां मानवानां तथा ध्रुवम् ॥१०॥
सस्यविनाशनं चैव गर्भस्यान्तर्धिकारणम् ।
वेतालाञ्जनसिद्धिश्च उलूकसिद्धिरपि हि ॥११॥

अन्यानपि महारौद्रान् प्रयोगान् शृणु साम्प्रतम् ।
विद्यामन्त्रप्रयोगांश्च औषधं चाभिचारिकम् ॥१२॥

अन्धीकरण, बन्धीकरण, मूकीकरण, शरीर (योनि आदि) का सङ्कोचन तथा भूतज्वरकरण, अस्त्र-शस्त्र का स्तम्भन, जल का विनाशन, दही, मधु, (मद्य) का विनाश, मत्तीकरण, परस्पर हाथियों तथा घोड़ों का विद्वेषण, मनुष्य तथा सर्पों का आकर्षण, फसल का विनाश, गर्भ के अन्तर्गत व्याधिकरण, वेताल तथा अञ्जन की सिद्धि एवं उल्लू की सिद्धि, अन्य महारौद्र प्रयोग —यथा आभिचारिक ओषधियों, विद्या तथा मन्त्र के प्रयोगों को सुनिए ॥८-१२॥

गुप्ता गुप्ततराः कार्या रक्षितव्याः प्रयत्नतः ।
अकुलीनाधमबुद्धेर्भक्तिहीनस्य वै तथा ॥१३॥
हिंसकस्य च क्षुद्रस्य निन्दकस्य विशेषतः ।
स्वार्थं फलादिलुब्धस्य उपदेशममन्यतः ॥१४॥
अस्मिन् शास्त्रे पुरुषास्ते वर्जनीयाः प्रयत्नतः ।
एतैश्च सह संयोगो न कार्यः सर्वदा बुधैः ॥१५॥

ऐसे गुप्त प्रयोगों को प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिए । अकुलीन, अधमबुद्धि, भक्तिहीन, हिंसक, क्षुद्र, निन्दक, उपदेश को न मानने वाले, स्वार्थवश फलादि के लोभी पुरुषों के लिए इस शास्त्र (उड्डीश तन्त्र) में प्रवेश प्रयत्नपूर्वक वर्जित है । बुद्धिमानों को चाहिए कि ऐसे पुरुषों का संयोग न करें ॥१३-१५॥

य उड्डीशक्रियाशक्तिभेदं कुर्वन्ति मोहिताः ।
ते दुष्टा दुर्जयाश्चैव किमत्र बहुभाषितैः ॥१६॥
यदीच्छासिद्धिमात्मानमात्मार्थं हि तथैव च ।
सत्पूरुषाय दातव्यं देवगुरुरताय च ॥१७॥

जो मोहित होकर उड्डीश तन्त्र में निहित क्रियाओं में भेद (अविश्वास) करते हैं वे दुष्ट सर्वत्र अविजयी होते हैं, अधिक कहने से क्या लाभ ? इच्छानुसार सिद्धि को अपने लिए अथवा आत्मतत्त्व के लाभ हेतु देव, गुरुभक्ति में रत तथा सत्पुरुष को देना चाहिए ।।१६-१७।।

प्रयोगास्तु प्रयोक्तव्याः साधकैः शत्रुकारणे ।
अनिमित्ता निवर्तन्ते स्वात्मग्राहे न संशयः ।।१८।।
असन्तुष्टो ह्ययुक्तश्च प्रयोगानिति नाचरेत् ।
शास्त्रसिद्धविचारास्तु समन्त्रकोषकाः शुभाः ।।१९।।

साधकों को चाहिए कि शत्रु के लिए प्रयोग करें तथा विना कारण अपनी प्रशंसा के लिए किये गये निश्चितरूपेण ये प्रयोग नष्ट हो जाते हैं ।।१८।।

असन्तुष्ट तथा अयुक्त व्यक्ति इन प्रयोगों का आचरण न करें। शास्त्र में सिद्ध विचार वाले शुभ व्यक्ति ही उड्डीश तन्त्र के 'मन्त्र-कोष' से लाभान्वित होते हैं ।।१९।।

।। अथ गणपतिसिद्धिमन्त्रः ।।

ॐ ग्लौं गं गणेशाय नमः ।

मन्त्रेणानेन मन्त्रज्ञः कुम्भकारमृदा तथा ।
लम्बोदरं प्रकुर्वीत पूजयेदुपचारकैः ।।२०।।
साप्ताहिकं त्रिसन्ध्यायां जप्तव्यं सावधानतः ।
सहस्रैकप्रमाणेन जपाच्छान्तिर्भविष्यति ।।२१।।

अथ गणपति सिद्धि मन्त्र—"ॐ ग्लौं गं गणेशाय नमः" इस मन्त्र को जानने वाला व्यक्ति मन्त्र से कुम्भकार के हाथ की मिट्टी से गणेश जी का निर्माण करके उपचारों से पूजन करे। एक सप्ताह भर तीनों सन्ध्याओं में सावधान होकर जप करे। प्रत्येक सन्ध्या में एक हजार जप करना चाहिए, ऐसा करने से शान्ति होती है ।।२०-२१।।

प्रातरष्टोत्तरं जप्त्वा लभेद् बुद्धिं शुभां नरः ।
मासेनैकेन देवेशि श्रीलाभश्च भवेद् ध्रुवम् ।।२२।।
षण्मासेन वरारोहे महाधनपतिर्भवेत् ।
त्रिकालज्ञानवेत्ता च वर्षैकेन न संशयः ।।२३।।

तत्पश्चात् प्रातः १०८ बार जप करने से शुभ बुद्धि को मनुष्य प्राप्त कर लेता है। एक मास तक जप करने से निश्चितरूपेण लक्ष्मी का लाभ होता है। हे वरोरु ! छः महीने तक जप करने से महाधनपति हो जाता है तथा निश्चितरूपेण एक वर्ष तक जप करने से साधक त्रिकालज्ञान प्राप्त कर लेता है ।।२२-२३।।

।। अथ वाक्सिद्धि मन्त्रः ।।

ऐं नमः स्वाहा ।

प्रातः सहस्रवारं तु प्रजप्तेन प्रपूजयेत् ।
वरदां तु महादेवीं श्वेतगन्धानुलेपनैः ।।२४।।
पुष्पैर्जापैर्दक्षिणादिसोपचारैस्तु प्रत्यहम् ।
सप्तमे दिवसे ह्येवं वागैश्वर्यं प्रजायते ।।२५।।

अथ वाक्सिद्धि मन्त्र—"ऐं नमः स्वाहा" इस मन्त्र का प्रातः सहस्र बार जप करके वरदा देवी सरस्वती का श्वेत चन्दन, पुष्पादि से पूजन करना चाहिए। प्रत्येक दिन इसी प्रकार जप तथा दक्षिणादि षोडशोपचारों से देवी का पूजन करना चाहिए। ऐसा करने से सातवें दिन वाणी की सिद्धि उत्पन्न हो जाती है ।।२४-२५।।

भवेत्सद्यः प्रवक्ता च श्रुतिस्मृतिधरोऽपि च ।
बान्धवः सर्वभूतानां चिरायुः सुखमेधते ।।२६।।

वह साधक वेद, स्मृति को कण्ठस्थ कर लेने वाला शीघ्र प्रवक्ता हो जाता है। सभी जीवों के बन्धु के समान रहता हुआ वह साधक चिरायु होकर सुख की प्राप्ति करता है ॥२६॥

॥ त्रिदशाङ्गनाकर्षणमन्त्रः ॥

ॐ क्लीं ।

मन्त्रेणानेन देवेशि साधकः जपमारभेत् ।
रक्तवस्त्रावृतो नित्यं तथा कुङ्कुमजाङ्गले ॥२७॥
सप्ताहजपमात्रेण ह्यानयेत् त्रिदशाङ्गनाम् ।

अथ देवसुन्दरी के आकर्षक का मन्त्र--हे देवेशि ! "ॐ क्लीं" इस मन्त्र का जप साधक रक्तवस्त्र धारण करके केसर के जङ्गलों (वनों) में आरम्भ करें, सप्ताह-पर्यन्त जप करने से अप्सराओं का आकर्षण होता है ॥२७॥

॥ कामिन्याकर्षणमन्त्रः ॥

ॐ द्रीं द्रीं द्रीं द्रीं स्वाहा ।

पूर्वविधानपूतो हि जपेदेकान्तसंस्थितः ॥ २८॥
आकर्षति स्त्रियं शस्तां सालङ्कारां सुवाससम् ।

अथ स्त्री आकर्षण मन्त्र--पूर्व विधान से पवित्र होकर एकान्त में बैठकर "ॐ द्रीं द्रीं द्रीं द्रीं स्वाहा" इस मन्त्र का जप करें तो अलङ्कार-युक्त, वस्त्रों से सुसज्जित स्त्री का आकर्षण हो जाता है ॥२८॥

ॐ हैं हः हुं ।

ऊर्ध्वदृष्टिप्रयोगेण जपेल्लक्षत्रयं प्रिये ॥२९॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो जायते खेचरे पदे ।

हे प्रिये ! "ॐ हैं हः हुं" इस मन्त्र को ऊपर दृष्टि रखते हुए जो साधक तीन लाख जप करे तो सारे पापों से मुक्त होता हुआ वह खेचर पद की प्राप्ति कर लेता है ॥२९॥

ॐ द्रीं कारीण्डः क्षः क्षौं फट् स्वाहा ।

एकपादस्थितो भद्रे जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥३०॥
यद्यत् प्रार्थयते वस्तु तद् ददाति दिने दिने ।
यजेन्नरविशेषश्च देवाग्निगुरुब्राह्मणैः ॥३१॥

हे भद्रे ! एक पैर पर खड़े होकर १०८ बार "ॐ द्रीं कारीण्डः क्षः क्षौं फट् स्वाहा" इस मन्त्र का जप करें, तो इच्छित वस्तुएँ प्रति-दिन प्राप्त हो जाया करती हैं। इसके अतिरिक्त मन्त्र का साधन करते हुए नित्य देव, अग्नि, गुरु, ब्राह्मण तथा विशेष मनुष्यों (महात्माओं) का पूजन करना चाहिए ॥३०-३१॥

॥ अथ मनोरथप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ श्रीं क्षीं लोहं मुञ्च किलि किलि अमुकं काटय काटय मातङ्गिनि स्वाहा ।

मन्त्रेणानेन पूर्वाह्णे पूजयन्नुपचारकैः ।
शरावं पूरयित्वा तु चतुष्पथे बलिं हरेत् ॥३२॥
समन्त्रं क्षिप्यति पुमान् पुरुषं यदि पश्यति ।
आत्मचिन्तितकार्याणि साधयत्येव नान्यथा ॥३३॥

अथ मनोरथ प्राप्ति मन्त्र--पूर्वाह्ण में "ॐ श्रीं क्षीं लोहं" मात-ङ्गिनि स्वाहा" इस मन्त्र से मातङ्गी देवी का षोडशोपचारों से पूजन करें तथा मन्त्र का जप करें, प्याले में मदिरा तथा बलि की सामग्री (खीर, नारियल, लौंग अथवा पशु-मांस) भर कर चौराहे पर इसी मन्त्र से बलि प्रदान करें। रात्रि में बलि देते हुए यदि साधक को कोई पुरुष (दिव्य पुरुष) दिखाई दे, तो अपने द्वारा चिन्तित वह सारे कार्यों की सिद्धि प्राप्त कर लेता है, यदि पुरुष का दर्शन न हो तो मनोरथ सिद्ध नहीं होते हैं ॥३२-३३॥

॥ जलस्तम्भनमन्त्रः ॥

ॐ स्तम्भिनि स्वाहा कपालिनि स्वाहा, द्रीं द्रीं वैषादार्थिनि स्वाहा छः छः ।

मन्त्रेण मृत्तिकां जप्त्वा प्रतार्य सप्तधा जले ।
सम्मुखीभूय क्षिप्त्वा च जप्त्वा चायुतं वासरे ॥३४॥
तेन सिद्धो भवेन्मन्त्रः साधकस्य न संशयः ।

अथ जलस्तम्भन मन्त्र—'ॐ स्तम्भिनि""वैषादार्थिनि स्वाहा छः छः" इस मन्त्र को दिन में जल के सम्मुख बैठकर दश हजार जपना चाहिए, इससे साधक को मन्त्र की सिद्धि हो जाती है। तत्पश्चात् मन्त्र से मिट्टी को सात बार अभिमन्त्रित करके बहते जल में फेंकने से जल का स्तम्भन हो जाता है ॥३४॥

॥ ज्वराभिभूतमन्त्रः ॥

ॐ श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः ।

मध्याह्नसमये सूर्यसम्मुखे जपमाचरेत् ॥३५॥
अयुतं जप्तमात्रेण स्वसामर्थ्यं प्रपश्यति ।
तस्य दृष्टिनिपातेन द्विपदश्च चतुष्पदः ॥३६॥
ज्वराभिभूता जायन्ते अपूर्वा मन्त्रसम्पदः ।

अथ ज्वराभिभूत मन्त्र—"ॐ श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः" इस मन्त्र का जप मध्याह्न में सूर्य के सम्मुख होकर करना चाहिए। साधक इस प्रकार दश हजार जप करने के उपरान्त अपनी विचित्र सामर्थ्य को देखता है। उस साधक की दृष्टि जिन द्विपद (मनुष्यों) तथा जिन चतुष्पद (पशुओं) पर पड़ती है वे ज्वर से पीड़ित हो जाते हैं। यह मन्त्र-रूपी सम्पत्ति अपूर्व है ॥३५-३६॥

॥ ज्वरनाशनमन्त्रः ॥

ॐ हंसः हं सं सोहं स्वाहा ।

एकविंशतिजप्तेन जलेन ज्वरपीडितः ॥३७॥
विमुच्यते पानमात्रात् सद्यः स्वस्थश्च जायते ।

अथ ज्वरनाशन मन्त्र—"ॐ हंसः हं सं सोहं स्वाहा" इस मन्त्र से ज्वरपीड़ित मनुष्य २१ बार अभिमन्त्रित जल के पान मात्र से शीघ्र ज्वर से छूट जाता है और स्वस्थ हो जाता है ॥३७॥

॥ सर्वदलनमन्त्रः ॥

ॐ द्रीं नमो घोरेश्वरि घोरमुखि चामुण्डे ऊर्ध्वकेशि विकृताननै द्रीं द्रीं हुं फट् हुं स्वाहा ।

अथ सर्वदलन मन्त्र—"ॐ द्रीं नमो घोरेश्वरि""फट् हुं स्वाहा" इस मन्त्र का जप चामुण्डा की पूजा करके नित्य करना चाहिए। यह सारे विघ्नों तथा शत्रुओं का दलन कर देता है ॥

॥ ग्रहारिष्टनाशनमन्त्रः ॥

ॐ द्रीं द्रीं द्रीं फट् फट् फट् स्वाहा सर्वग्रहाणां त्रासनं कुरु कुरु अङ्गुलिप्रहारेण ।

अथ ग्रहारिष्टनाशन मन्त्र—मोरपंख से अथवा अंगुलियों से बच्चों को "ॐ द्रीं द्रीं द्रीं अंगुलिप्रहारेण" मन्त्र से झाड़ा देने पर बालग्रहों का निवारण होता है।

॥ वलीपलितनाशनमन्त्रः ॥

ॐ स्त्रं स्त्रां स्त्रिं स्त्रीं स्त्रुं स्त्रूं स्त्रें स्त्रैं स्त्रों स्त्रौं स्त्रं स्त्रः हरं रौं रीं रूं रैं रेविः छुं छुं हं सः अमृतवर्चसे स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेणोदकं शरावे संक्षिप्याष्टोत्तरशतेनाभिमन्त्रितं कृत्वा पिबेत् प्रातरुत्थाय संवत्सरेण वलीपलितवर्जितो भवति ।

वृक्षस्थावरजङ्गमाकृतिं समाङ्गीकाराच्च व्याघ्र-लोमादिकं पूर्वोदर्यां भस्मीकरोति सर्वजनप्रियोभवति। चिरायुर्भवति।

अथ वलीपलितनाशन मन्त्र-"ॐ स्त्रं स्त्रां स्त्रिं""अमृतवर्चसे स्वाहा" इस मन्त्र से प्याले में जल डालकर १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके प्रातःकाल एक वर्ष तक पान करे तो मनुष्य वृद्धावस्था तथा सफेद बालों से रहित हो जाता है।

वृक्ष, स्थावर तथा जङ्गम आकृतियों के समान स्वीकार करता हुआ व्याघ्र के लोमादि को पूर्व में स्थित गुफा में उक्त मन्त्र के द्वारा भस्म करे और भस्म का तिलक या उबटन लगावे तो वह सर्वजनप्रिय तथा दीर्घायु होता है।

॥ अथेप्सितलाभमन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय चण्डेश्वराय हुं हुं हुं फट् स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण जपं कृत्वा शीघ्रमीप्सितं लभेत्।

अथ ईप्सितलाभ मन्त्र —"ॐ नमो भगवते""फट् स्वाहा" इस मन्त्र का जप करने से शीघ्र ही इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

॥ अथमेघस्तम्भनमन्त्रः ॥

ॐ हूं द्रीं क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः हूं फट् स्वाहा।

इमं मन्त्रं पूर्वं लक्षमेकं जपेत्, तद्दशांशमयुतं हवनं कुर्यात्। एकैकं समिधं घृताक्तां जुहुयात् सिद्धो भवति। गङ्गागोलोके न ते मेघाः प्रणश्यन्ति न च वर्षन्ति वासवो

नदसमुद्रं शोषयति। उदकमध्ये स्थित्वा जपं करोत्यनावृष्टिकालेऽतिवृष्टिं करोति।

अथ मेघस्तम्भन मन्त्र--"ॐ हूं द्रीं"' फट् स्वाहा" इस मन्त्र को पहले एक लाख जप करे और इसका दशांश दश हजार हवन करे। घृत से युक्त करके एक-एक समिधा का हवन करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र का प्रयोग करने से गङ्गा तथा गो (गाय से युक्त) प्रदेशों में मेघ नष्ट नहीं होते हैं और न वर्षा ही करते हैं। मन्त्र के प्रभाव से इन्द्र नद-समुद्र को सुखा देते हैं। जल के मध्य में स्थित होकर यदि अनावृष्टि के समय इस मन्त्र का जप किया जाय तो अतिवृष्टि होने लगती है॥

॥ अथ कुमारपूजनमन्त्रः ॥

ॐ द्रीं प्रचलिते कुबेरे हूं हूं किलि किलि स्वाहा।

पूर्वं वेलायामादर्शदीपसमीपे षडङ्गुलेन भाजने सूर्यमण्डले कुमारं वामे वेशयति, पूर्वमयुतजपः कर्त्तव्यः पञ्चोपचारेण पूजा च कर्त्तव्या पूर्वाभिश्च स्वराज्ये।

अथ कुमारपूजन मन्त्र--पूर्ववेला (प्रातःकाल) में आदर्श दीपक के समीप छः अंगुल परिमाण के पात्र में सूर्यमण्डल का निर्माण करके कुमार को मण्डल में बायीं ओर बैठावे। 'ॐ द्रीं""स्वाहा' इस मन्त्र का १० हजार जप करना चाहिए तथा पञ्चोपचार से पूजा करनी चाहिए। यह कार्य अरिष्ट निवारणाय महामारी के निवारण हेतु राजा को अपने राज्य में अवश्य कराना चाहिए।

॥ अथ ग्रामप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ श्रीं हिमजाते प्रयच्छ मे धनं स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण सिद्धार्थकं घृतमिश्रितं हुनेत् अष्टोत्तर-शतेन, अन्नपानविमिश्रितं सहस्रेण हुनेन्मनसः प्रार्थितं लभेद् अयुतं हुनेच्छ्रीसुमना भवेत्, लक्षं हुनेद् ग्रामशतं लभेत् ।

अथ ग्राम-प्राप्ति-मन्त्र—"ॐ श्रीं""स्वाहा" इस मन्त्र से १०८ बार सफेद सरसों तथा घृत से हवन करें, अन्न से मिश्रित घृत का हजार बार हवन करे तो मन से प्रार्थित वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। दश हजार हवन करने से उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा एक लाख हवन करने से १०० ग्रामों का लाभ होता है ॥

॥ अथ कामप्रदो मन्त्रः ॥

ॐ नमो नमः ।

इमं मन्त्रं शतं जपेत्सर्वकामप्रदोऽयं मन्त्रः ।

अथ कामप्रद मन्त्र—"ॐ नमो नमः" इस मन्त्र का सौ बार जप करना चाहिए, यह सारी इच्छाओं की प्राप्ति कराने वाला मन्त्र है।

॥ अथ कामदमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सारसे सिद्धिकरि क्रौं नमः स्वाहा ।

इमं मन्त्रं लक्षमेकं जपेद् रक्तकरवीरैश्च पूजयेत् सततं सर्वकामदोऽयं मन्त्रः ।

अथ कामद मन्त्र—"ॐ ह्रीं ""नमः स्वाहा" इस मन्त्र को एक लाख जप करे तथा लाल कनेर के पुष्पों से देवी का पूजन करे तो निरन्तर सभी कामनाओं की प्राप्ति होती है।

॥ अथ सर्वस्त्रीभाजन मन्त्रः ॥

ॐ द्रुं क्षें क्षैं हुं क्षः अमुकं क्षः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण राजिकालवणतुषकण्टकशिवनिर्माल्यं कटुतैलेनाऽयुतं हुनेत्समस्तस्त्रीभाजनं भवति ।

अथ सर्वस्त्रीभाजन मन्त्र—"ॐ द्रुं""क्षः स्वाहा" इस मन्त्र से राई, लवण (नमक), भूसी, काँटें (बेल के काँटे) तथा शिवनिर्माल्य का कडुवे तेल के साथ दस हजार हवन करे, तो वह साधक सभी स्त्रियों का आदर-पात्र होता है।

॥ अथ शत्रुसैन्यस्तम्भन मन्त्रः ॥

ॐ हुं हुं हुं लूं लं हुं लौं हुं लः अमुकं छः छः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण सिद्धार्थं भस्मना सह मन्त्रितं कर्त्तव्यं यस्य गृहे प्रक्षिप्य मन्त्रवलिपार्श्वैराक्षिपेत् तस्य बाहुस्तम्भो भवति । रिपुसैन्याग्रे क्षिपेत् शत्रुसैन्यस्तम्भो भवति, अश्व-गजनरा निश्चेष्टा भवन्ति, विकला भवन्ति, समन्तादेवा-कुला भवन्ति ।

अथ शत्रु-सैन्यस्तम्भन मन्त्र—"ॐ हुं हुं""छः छः स्वाहा" इस मन्त्र का जप करके चिताभस्म से सफेद सरसों को मिलाकर अभि-मन्त्रित करना चाहिए, जिसके घर में फेंक कर पुनः मन्त्र से युक्त घर के दोनों ओर वलि प्रदान करें तो उस घर में रहने वाले मन्त्र में कथित व्यक्ति की भुजाएँ स्तम्भित हो जाती हैं। शत्रु की सेना के आगे यदि उक्त विधि से मन्त्रित द्रव्य डालें तो शत्रु-सेना का स्तम्भन हो जाता है। सेना में स्थित घोड़े, हाथी तथा मनुष्य चेष्टाविहीन हो जाते हैं, विकल हो जाते हैं और चारों ओर व्याकुल हो जाते हैं।

॥ अथ वातादिविकारनाशकमन्त्रः ॥

ॐ रं रं मुखे स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण जप्ततैलेन मुखं प्रक्षाल्य तिलतैलेन गात्राभ्यङ्गं वा विधाय वातादिकं दिनसप्तकेन नश्यति ।

अथ वातादिविकारनाशक मन्त्र—"ॐ रुं रुं मुखे स्वाहा" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित तिल के तेल को मुख पर लगायें अथवा शरीर पर मलें तो सात दिन में वातादि विकार नष्ट हो जाते हैं ।

॥ अथेप्सितफलप्राप्तिमन्त्रः ॥

ऐं मातङ्गि विमलावति विकराले द्रीं छः छः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण जपापुष्पं परिजप्य वारिणि नद्यादौ होमयेत् सप्ताहेनेप्सितं फलं लभेत् ।

अथ इच्छित फल प्राप्ति मन्त्र—"ऐं मातङ्गि···स्वाहा" इस मन्त्र से गुड़हल के पुष्प अभिमन्त्रित करके नदी आदि के जल में डालें तो एक सप्ताह में इष्टफल की प्राप्ति होती है ।

॥ अथ नष्टवित्तलाभमन्त्रः ॥

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रभृत् ।
तन्नामकीर्त्तनादेव हृतं नष्टं च लभ्यते ॥३८॥
नित्यं नित्यं जपेत्किञ्चिद्विद्यावित्तस्य प्राप्तये ।

अथ नष्टधनलाभ मन्त्र—"कार्त्तवीर्यार्जुनो···लभ्यते" विद्या तथा धन की प्राप्ति हेतु नित्य उक्त मन्त्र का जप करना चाहिए ।

॥ अथ वृश्चिकमन्त्रः ॥

ॐ मं किणि स्वाहा ।

अथ वृश्चिक मन्त्र—"ॐ मं किणि स्वाहा" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करने पर बिच्छू का विष दूर होता है ।

॥ अथ सर्वविषापहरणमन्त्रः ॥

ॐ हुं हुं हं सः हं सं सोहं सोहं स्वाहा ।

इति सर्वविषापहरणमन्त्रेण मयूरपिच्छेन कुशेन शरेण शरदण्डेन वा तद्देहे सम्मार्जनं कुर्यात् ।

अथ सर्व-विषहरण मन्त्र—"ॐ हुं हुं···स्वाहा" यह सभी विषों के हरण का मन्त्र है । मोरपंख, कुश अथवा सरकण्डों से इस मन्त्र के द्वारा शरीर पर सम्मार्जन करना चाहिए ।

॥ अथ विषहरणमन्त्रः ॥

हं हां हिं हीं हुं हूं हें हैं हों हौं हं हः छः छः स्वाहा ।

इमं गोक्षीरसदृशं बारं बारं विचिन्तयेद्वा वरानन-मुखे शिरसि शरीरे ततः कण्ठे ततो हृदि नाभिमण्डले गुप्ते तथा सर्वाङ्गे चिन्तयेत्तथा पूरकेण वरारोहे कण्ठदंष्ट्रोऽपि जीवति ।

अथ विषहरणमन्त्र—"हं हां···छः छः स्वाहा" इस मन्त्र का जप करते हुए बार-बार गाय के दूध के समान श्रेष्ठ मुख, शिर तथा शरीर पर ध्यान करना चाहिए । इसके उपरान्त कण्ठ, हृदय, नाभिमण्डल, गुह्यप्रदेश तथा सर्वाङ्ग में ध्यान करे । इसके बाद पूरक प्राणायाम करते हुए श्रेष्ठ जघनस्थल पर ध्यान करे, तो इस प्रकार कण्ठगत प्राण वाला विषग्रसित मनुष्य भी जीवित हो जाता है ।

॥ अथ विघ्नहरण-ज्वरविलोपनमन्त्रः ॥

ॐ गं गणपतये महागणपतये विघ्नहराय मतङ्गसम्भवाय लम्बोदराय गौरीप्रियपुत्राय ह्रीं गां नमः रं हं क्षः स्वाहा ।

गोरोचनाविषराजिकापिप्पलीनीचयवैर्महातैलेन सह देवदत्तैश्च लक्षितानालिखेत्, निम्बकाष्ठेन प्रतिकृतिं हुत्वा पृष्ठतो लिखेत्सद्यो ज्वरविलोपो भवति, शान्तिर्भवति ।

अथ विघ्नहरण तथा ज्वरविलोपनमन्त्र--"ॐ गं गणपतये… स्वाहा" गोरोचन, विष, राई, पिप्पली तथा इन्द्रजौ को कड़ुवे तेल में मिला कर 'देवदत्त' (साध्य) नाम से लक्षित एक मूर्त्ति बनायें, तत्पश्चात् जप, पूजन के पश्चात् नीम की लकड़ी से मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर उक्त मन्त्र लिखे और नीम की समिधाओं से मूर्त्ति का हवन करें तो शीघ्र साध्य के ज्वर नष्ट हो जाते हैं तथा विघ्नों का हरण होकर शान्ति की प्राप्ति होती है ।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वरमहातन्त्रे मन्त्रकोषनिरूपणं नाम द्वादशः पटलः ॥१२॥

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्र से उद्धृत उड्डामरेश्वरमहातन्त्र में मन्त्रकोषनिरूपण नामक द्वादश पटल समाप्त हुआ ॥१२॥

त्रयोदशः पटलः

॥ अथ भोजनप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ द्रीं विद्यास्तम्भिनि स्तम्भिनि छः छः स्वाहा ।

इमं मन्त्रं प्रथममयुतमेकं जपेत् पश्चान्मनसा संस्मरेत् । वनमध्येऽपि भोजनं प्राप्नोति ।

अथ भोजनप्राप्ति मन्त्र--"ॐ द्रीं…स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दश हजार जप करे, तत्पश्चात् मन से इस मन्त्र का स्मरण करे तो वन के मध्य में भी भोजन की प्राप्ति होती है ।

॥ अथ स्त्रीपुरुषयोरभिषेकविधिः ॥

ॐ ह्रौं नमो भगवते महारुद्राय उड्डामरेश्वराय हुं हुं छं छं द्रीं द्रीं स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेणाभिषेकार्थं सहस्रवारजप्त कलशं कारयेत्, तन्मध्ये पञ्चरत्नं निधाय श्वेतवस्त्रेण वेष्टयेत्, नाना फलसुसंपूर्णं नानारत्नोपशोभितं तद्द्वारकगृहवासं कलशं धृत्वा रात्रौ स्त्रिया सह श्मशाने वनस्पतौ वा एकवृक्षे वा सरस्तटे समुद्रगामिन्यां नद्यां वा चतुष्पथे वा गच्छेत् । ततश्च कलशं नीत्वा स्त्री वन्ध्या वा मृतवत्सा वा दुर्भगा वा काकवन्ध्या वा भङ्गा सर्वजनप्रिया भवति, पीडिता उद्वर्तयेत् । प्रियङ्गुः कुङ्कुमं गोरोचना नागकेसरो दूर्वा हरिद्रे द्वे

सिद्धार्थकद्वयं वचा पुनर्नवाऽपामार्गोऽर्कश्चित्रकं शाल्मली लक्ष्मणा तालमूली शतावरी वन्ध्याकर्कटी बलाक्षी मृगपिप्पली तथा चिराणि सुपत्राण्युशीरं घृतं मधु तथा पलाशपुष्पपत्राणि अम्बरबिल्वपत्राण्यश्वगन्धादीनि सुगन्धद्रव्याणि सर्वाणि सर्वे साध्यविशेषतः, अन्यदुद्वर्तयेद् गात्रं शिरोलेपनो यः पुनः कलशं प्रक्षिप्य स्नापयेत् लभस्त्रियम्, सदोद्वर्तनवस्त्रं त्यक्त्वाऽपरवस्त्रपरिधानं कुर्यात्। भद्रासने व्यवस्थिता..........कुर्याद् द्वारि निःक्षिप्य कुम्भस्थितां, या स्त्रीणां मध्ये समाकर्षति यन्त्रम्, ततस्तां सम्मुखस्त्रियमर्चयेत्।

अथ स्त्री-पुरुषों के अभिषेक की विधि--"ॐ ह्रीं""स्वाहा" इस मन्त्र से अभिषेक के लिए हजार बार जप करके कलश का निर्माण करे, उस कलश के मध्य में पञ्चरत्न डालकर सफेद वस्त्र से कलश वेष्टित करे, अनेक फलों से पूर्ण, अनेक रत्नों से सुशोभित घर के द्वार पर कलश रखकर रात्रि में स्त्री के साथ श्मशान में पेड़ पर या सरोवर के तट पर अकेले स्थित वृक्ष पर अथवा समुद्र पर्यन्त जाने वाली नदी पर या चौराहे पर जाना चाहिए। इसके बाद कलश लेकर वन्ध्या स्त्री या मृतवत्सा या दुर्भगा अथवा काकवन्ध्या अथवा जो अङ्ग से रहित हो, ऐसी स्त्री भी सर्वजनप्रिया हो जाती है। इसके बाद पीस कर अधोलिखित वस्तुएँ उबटन में लगानी चाहिए। प्रियंगु (Selastrus Panicalta), केशर (Crocus Sativas), गोरोचन, नागकेशर (Messua Ferrea); दूर्वा (Cynodon Dectyton); हल्दी तथा दारुहल्दी (Berberis Aristata), पीली सरसों एवं सफेद सरसों, वच (Acorao Calamus), पुनर्नवा (Boerhavia Diffusa), लटजीरा (Achyranthes Aspera), मदार (Calortopis Giganea), चित्रक (Plumbago

Zeylomica), सेमल (Salmalia Malabarica), श्वेत कटेरी (Ardea Sibirica), तालमूली (Curcuigo Orchioides), शतावरी (Asparagus Racemosus), बांझ ककोड़ी (Pistacia Integerrima), बला (Abuliton Indicum), थूहर (Euphorbia Rerifolia), गजपीपल, पुराना एवं सुन्दर खस (Root of Andropogon Muricatus), पुराना घृत, पुराना शहद, पलाश (Bute Frondosa) के फूल और पत्ते, कपास के बीज, बेल (AegleMarmelos) के पत्र तथा असगन्ध (Withania Somnifera) आदि सुगन्धित सभी द्रव्य लेकर विशेषरूपेण साध्य (स्त्री-पुरुष) इनका उबटन लगाये। शरीर तथा शिर पर लेपन करके पुनः कलश का जल डाल-डाल कर स्नान करावें। इससे स्त्री के वन्ध्यादि दोष दूर होकर शुभ-स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है। सदा उबटन लगे वस्त्रों को त्याग करके दूसरे वस्त्र धारण करने चाहिए। भद्रासन पर बैठ करके..................करना चाहिए, घड़े में स्थित (जलादि) को द्वार पर छिड़क करके, स्त्रियों के मध्य में यन्त्र जिस स्त्री को आकर्षित करें उस स्त्री को सम्मुख बिठाकर उसका पूजन करना चाहिए। (यह अंश यहाँ पांडुलिपि में कटा होने के कारण अस्पष्ट है।)

वस्त्रालङ्कारसिन्दूरसुगन्धिकुसुमादिभिः।
गृहेऽर्चां कारयेद् देवं शिवं देव्या सहार्चयेत् ॥१॥

वस्त्र, आभूषण, सिन्दूर, गन्ध तथा पुष्प आदि से घर में पूजा करानी चाहिए, देवी पार्वती के साथ शिव का पूजन करना चाहिए ॥१॥

दक्षिणां स पुमान् दद्यात् श्वेतां गां वत्ससंयुताम्।
अथ स्नानफलं वक्ष्ये यथोक्तं त्रिपुरारिणा ॥२॥

पुरुष को चाहिए कि वह बछड़े से युक्त सफेद गाय दक्षिणा में प्रदान करे। शिव के कथनानुसार स्नान का फल बता रहा हूँ ॥२॥

पुत्रार्थी लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
शान्त्यर्थी शान्तिमाप्नोति दुर्भगा सुभगा भवेत् ॥३॥

इस अभिषेक (स्नान) से पुत्रार्थी पुत्र की प्राप्ति करता है तथा धनेच्छुक को धनलाभ होता है। शान्ति चाहने वाला शान्ति प्राप्त करता है एवं दुर्भगा स्त्री सुभगा हो जाती है ॥३॥

भ्रष्टराज्यस्तथा राजा राज्यं प्राप्नोति निश्चितम् ।
अभार्यो लभते भार्यां सुखार्थी सुखमाप्नुयात् ॥४॥

भ्रष्ट राज्य वाला राजा राज्य को निश्चितरूपेण प्राप्त कर लेता है। पत्नीरहित पुरुष पत्नी की प्राप्ति कर लेता है और सुख चाहने वाला सुख प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है ॥४॥

यह स्त्री-पुरुषों के स्नान का फल है।

॥ अथ निपातीकरणमन्त्रः ॥

हुं अमुकं हुं फट् स्वाहा ।

श्मशाने गत्वा उलूककपोतकाञ्जीराणामतिसत्वरं स्तन्यं गृहीत्वा जपेत्सप्ताहेन ।

अथ निपातीकरण मन्त्र--"हुं अमुकं हुं फट् स्वाहा" इस मन्त्र का श्मशान में जाकर उल्लू, कबूतर तथा काञ्जीर पक्षियों का ताजा दूध लेकर एक सप्ताह तक जप करे तो निपातीकरण होता है। 'अमुक' के स्थान पर साध्य का नाम ग्रहण करना चाहिए।

हुं अमुकं फट् फट् स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण भानुवृक्षसमीपे स्थित्वाऽयुतैकं जपेत् ततः कटुतैलेन दशांशेन हवनं कुर्यात् निपातीकरणं भवति ।

"हुं अमुकं फट् फट् स्वाहा" इस मन्त्र को मदार वृक्ष के समीप बैठकर दश हजार जप करे और इसके बाद कड़ुवे तेल से दशांश हवन करे तो निपातीकरण होता है। 'अमुक' के स्थान पर साध्य का नाम लेना चाहिए।

॥ अथ वृष्टिकारकमन्त्रः ॥

ॐ ॐ ॐ ।

इति मन्त्रं पूर्वमयुतं जप्त्वाऽनावृष्टिकाले जपेन्महावृष्टिर्भवति ।

अथ वृष्टिकारक मन्त्र--"ॐ ॐ ॐ" इस मन्त्र को पहले दश हजार जप करे तत्पश्चात् अनावृष्टि के समय जप करने से महावृष्टि होने लगती है।

॥ अथ सार्वकालिकफलप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं वरदे स्वाहा ।

इमं मन्त्रं पूर्वमयुतं जप्त्वा तद्दशांशं पलाशसमिद्भिर्हवनं कुर्यात् घृतं हुनेत् ततः सार्वकालिकं फलं लभेत् ।

अथ सार्वकालिकफल-प्राप्ति मन्त्र--"ॐ ह्रीं वरदे स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दशहजार जप करे और पलाश की समिधाओं से दशांश घृत द्वारा हवन करे, तो सार्वकालिक फल की प्राप्ति होती है।

॥ अथ महेन्द्रज्वरावेशमन्त्रः ॥

हुं हुं हुं नं नं नं अमुकं हुं फट् स्वाहा ।

इमं मन्त्रं पूर्वमयुतं जप्त्वा खादिरसमिधो रुधिरेण लिप्त्वा तद्दशांशं हुनेत्, यस्य नाम्ना स सहस्रेकेन महेन्द्रज्वरेण गृह्यते, अयुतहवनेन निपातनम्, तथानेनैव मन्त्रे-

णाऽपामार्गसमिधो हुनेत्, अयुतसङ्ख्यकाः त्रिमधुयुताः, ततो विभीषणादयो राक्षसा वरदा भवन्ति ।

अथ महेन्द्रज्वरावेश मन्त्र—"हुं हुं""स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दश हजार जप करें तत्पश्चात् खदिर (कत्थे) की समिधाओं को रक्त में लगाकर दशांश हवन करे। जिसके नाम से सहस्र हवन किया जाय, वह महेन्द्रज्वर से पीड़ित हो जाता है। दश हजार हवन करने से निपातन होता है तथा इसी मन्त्र से अपामार्ग की समिधाएँ यदि हवन में प्रयुक्त की जाँय तो विभीषण आदि राक्षस भी वरदान देते हैं।

॥ अथ ज्वरग्रहणमन्त्रः ॥

ॐ हूं वां वीं वूं वैं वौं वं वः ॐ हुं फट् स्वाहा ।

अथ ज्वरग्रहण मन्त्र--"ॐ हूं""स्वाहा" यह ज्वरग्रहण मन्त्र है। जिसके नाम से इस मन्त्र का जप और होम किया जाता है, वह ज्वर से ग्रस्त हो जाता है।

॥ अथ वृष्टिकारकमन्त्रः ॥

ॐ ऐं क्षिलि किलि फट् स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण त्रिमधुयुक्तमुदुम्बरं पूर्वमयुतं जप्त्वा सहस्रकं होमयेदनावृष्टिकाले महावृष्टिं करोति ।

अथ वृष्टिकारक मन्त्र--"ॐ ऐं""स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दश हजार जप करें तत्पश्चात् एक हजार मन्त्र से त्रिमधु (शहद, गुड़, मदिरा) से युक्त गूलर की समिधाओं से हवन करें तो अनावृष्टि के समय महावृष्टि होने लगती है।

॥ अथ जनपदवशीकरणमन्त्रः ॥

ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः ॐ स्वाहा ।

इमं मन्त्रं पूर्वमयुतं जप्त्वा त्रिमधुयुता बिल्वसमिधो हुनेत् ततः समस्तजनपदाः किङ्करा भवन्ति ।

अथ जनपद-वशीकरण मन्त्र—"ॐ द्रां""स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दश हजार जप करके त्रिमधु (शहद, गुड़, मदिरा) से युक्त बेल की समिधाओं का सहस्र हवन करें तो समस्त जनपद दास हो जाता है।

॥ अथ रोगशान्तिमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं हुं ॐ स्वाहा ।

इमं मन्त्रं पूर्वमयुतं जप्त्वा तद्दशांशं दर्भसमिधो घृत-क्षीरयुता हुनेदयुतहोमतः सर्वरोगप्रशान्तिर्भवति ।

अथ रोगशान्ति मन्त्र--ॐ ह्रीं""स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दश हजार जप करके, उसका दशांश (एक हजार) कुश की समिधाओं को घृत, दूध से युक्त करके हवन करें, तब मन्त्र सिद्ध होता है, पुनः दश हजार मन्त्र से हवन करें तो रोगों की शान्ति होती है।

॥ अथ राज्ञीवशीकरणमन्त्रः ॥

ॐ क्लीं अमुकीं खे खे स्वाहा ।

इमं मन्त्रं पूर्वमयुतं जुहुयात् तद्दशांशं न्यग्रोधसमिधो मधुयुक्ता हुनेत्, सहस्रमात्रहोमेन महाराजपत्नी वशगा भवति, अन्यलोकस्त्रीणां तु का कथा ।

अथ राज्ञीवशीकरण मन्त्र-"ॐ क्लीं""स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दश हजार हवन करें, उसका दशांश शहद से युक्त बरगद की समिधाओं से हवन करें, एक हजार के हवन से राजा की पत्नी वश में हो जाती है तो अन्य लोगों की स्त्रियों के विषय में कहना ही क्या? अर्थात् अन्य स्त्रियाँ तो वश्य होती ही हैं।

॥ अथ विविधकर्मसिद्धिमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं गोमुखि गोमुखि सहस्रसुताला भीमभोग-पिशितभूमौ आगच्छतु स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण रक्तकरवीरं क्षौद्रेण संयुक्तं हुनेत् वशकामो, लवणं हुनेत् स्त्रियमाकर्षयति । पूर्वसंयुक्तं प्रेमकामः सिन्दूरं हुनेत् पुरक्षोभो भवति, तुषकरटं हुनेदभिचारकर्म भवति, महामांसं घृतसंयुक्तं हुनेन्महाधनपतिर्भवेत् ।

अथ विविधकर्मसिद्धि मन्त्र—"ॐ द्रीं "स्वाहा" वशीकरण चाहने वाला साधक लाल कनेर के पुष्पों को शहद के साथ हवन करे, लवण (नमक) से हवन करे तो स्त्री को आकर्षित करता है। प्रेम की कामना करने वाला शहद से युक्त सिन्दूर का हवन करे तो इससे ग्राम क्षुब्ध हो जाता है, सभी उससे प्रेम करने लगते हैं। भूसी तथा कौए के पंखों से मधु सहित हवन करे तो अभिचार (मारण, उच्चाटन) कर्म सिद्ध होते हैं। यदि साधक इस मन्त्र से महिष का माँस घृत के साथ होमे तो महाधनपति हो जाता है।

॥ अथ विविधलाभमन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय हुं फट् स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण श्रीफलसंयुक्तं घृतं हुनेत्, शतहोमेन प्रज्ञा भवति, सहस्रेण गोलाभो भवति, लक्षेण ग्रामसहस्रलाभो भवति, सपादलक्षेण भ्रष्टराज्यं राजा प्राप्नोति ।

अथ विविधलाभ मन्त्र—"ॐ नमो "स्वाहा" इस मन्त्र के द्वारा श्रीफल (बेल) से युक्त घृत का हवन करे तो सौ बार हवन करने से बुद्धि की प्राप्ति होती है। सहस्र बार हवन करने से गायों का लाभ होता है। एक लाख हवन करने से मनुष्य एक हजार ग्रामों की प्राप्ति कर लेता है। भ्रष्टराज्य वाला राजा यदि सवा लाख हवन करे तो पुनः राज्य की प्राप्ति कर लेता है।

॥ अथोन्मत्तीकरण मन्त्रः ॥

ॐ ऐं द्रीं हुं फट् स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण काकमांसं कुक्कुटबीजं कटुतैलेन हुनेत् सहस्रैकेन द्रींकारान्तं नाम सञ्जप्य यस्य नाम्ना जपेत् स चोन्मत्तो भवति, सहस्रैकेन तण्डुलहोमेन स्वस्थो भवति ।

अथ उन्मत्तीकरण मन्त्र—"ॐ ऐं "स्वाहा" इस मन्त्र से कौए का मांस और मुर्ग के अण्डों में कडुवा तेल मिलाकर हजार बार हवन करे और मन्त्र में 'द्रीं' बीज के अनन्तर जिसका नाम ग्रहण करे तो वह उन्मत्त (पागल)हो जाता है। इसी मन्त्र के द्वारा यदि पूर्वोक्त प्रकारेण चावलों से एक हजार बार हवन करे तो वह उन्मत्त पुरुष स्वस्थ हो जाता है।

॥ अथ विविधकार्यसिद्धि मन्त्रः ॥

ॐ ऐं श्रीं क्षं क्लीं स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण जपः कार्यः सप्तवारजप्तेन देहशुद्धिर्भवति, शतजप्तेन सर्वतीर्थस्नानफलं भवति, सहस्रेण धीवृद्धिः, अयुतेन सहस्रग्रन्थकर्ता महान् कविर्भवति, एकलक्षेण श्रुतिधरो भवति, द्विलक्षेण समस्तशास्त्रज्ञो भवति, त्रिलक्षेणातीतानागतवर्तमानज्ञो भवति, चतुर्लक्षेण ग्रहपतिर्भवति, पञ्चलक्षेण वेदवेदान्तपुराणस्मृतिविशेषज्ञो भवति, षड्लक्षैर्वज्रतन्तुर्भवति, सप्तलक्षैर्नदीं शोषयति, हरिहरब्रह्मादिषु सख्यं भवति ।

अथ विविध-कार्यसिद्धि मन्त्र—"ॐ ऐं "स्वाहा" इस मन्त्र से जप करना चाहिए, सात बार जप करने से शरीर की शुद्धि होती है। सौ बार जप करने से सभी तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होता है।

हजार मन्त्र जपने से बुद्धि की वृद्धि, दश हजार जपने से सहस्र ग्रन्थों का निर्माता महान् कवि होता है। एक लक्ष जप से वेदों को कण्ठाग्र करने वाला श्रुतिधर होता है, दो लाख मन्त्र जपने से सभी शास्त्रों का ज्ञाता बन जाता है। तीन लाख जप करने से भूत, भविष्य, वर्तमान काल का ज्ञाता हो जाता है, चार लाख जप करने से ग्रह-पति हो जाता है, पाँच लाख जप करने से वेद, वेदान्त, पुराण-स्मृति का विशेष जानकार हो जाता है, छः लाख जप करने से शरीर के तन्तु वज्रमय हो जाते हैं। सात लाख जप करने से नदी को सुखा देने की शक्ति रखता है। ऐसे साधक की मित्रता विष्णु, शिव और ब्रह्मा आदि देवताओं से होती है।

नो चेत्, वज्रोक्तेन विधिना जपेत् तदा संस्कृतोऽयं दर्शकेन वा महर्षिणा शतेन समो भवति, सहस्रेण सन्तापरहितो भवति, पुनरप्ययुतेन पुरक्षोभको भवति, षड्गुणेन त्रैलोक्यं क्षोभयति, तृतीयेन सप्तपातालं क्षोभयति, चतुर्थेन स्वर्गं क्षोभयति, पञ्चमेनोर्ध्वगान् सप्तलोकान् क्षोभयति, षड्गुणेन त्रैलोक्यं क्षोभयति, सप्तमेन द्विपदचतुष्पदादिप्राणिमात्रं क्षोभयति, अष्टमेन स्थावरजङ्गममाकर्षयति, नवमेन स्वयमेव सर्वलोकेषु नारदवदनावृतगतिर्भवति, दशलक्षेण कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं क्षमो भवति।

इसके अतिरिक्त वज्रोक्त विधि (मांस, मद्य, मैथुनादि-मवा मार्गी विधि) द्वारा जप करे, तो मन्त्र से संस्कृत होता हुआ साधक सौ बार के जाप से ही महर्षि या त्रिकालदर्शी हो जाता है। सहस्र जप के द्वारा साधक सन्तापरहित हो जाता है। पुनः दश हजार के जपमात्र से साधक पुर को क्षुभित कर देता है। तीन लाख के जप से साधक

सप्त पातालों को क्षुब्ध कर देता है। चार लाख के जप से स्वर्ग को क्षुब्ध करता है। पाँच लाख के जप से ऊपर के सात लोकों को क्षुब्ध करने की शक्ति प्राप्ति होती है। छः लाख के जप से त्रैलोक्य को मोहित कर देता है। सात लाख के जप से दो पैरों वाले मनुष्यादि तथा चार पैरों वाले पशु आदि प्राणियों को क्षुब्ध कर देता है। आठ लाख के जप से साधक स्थावर और जङ्गम संसार को आकर्षित कर सकता है। नव लक्ष के जप से साधक सभी लोकों में नारद के समान अबाध गति से विचरण कर सकता है। दश लाख के जाप से साधक असाध्य कार्यों को करने न करने और विपरीत करने में समर्थ होता है।

पुनरप्यमृतक्षेपणविधिना जपेत्, सकृदपि नरः श्वेतकरवीरकुसुमत्रिमधुयुक्तामाहुतिं दद्यात् सर्वजनप्रियो भवति, अशोकपुष्पाणि सघृतं हुनेत्, शोकरहितो भवति, भ्रष्टराज्यप्राप्तिकामः श्रीफलहोमं कुर्याद् भ्रष्टराज्यं प्राप्नोति, आज्ययुक्तपद्मपुष्पाणि अथवा कुमुदिनीपुष्पाणि होमयेत्। निपातकामः कटुतैलयुक्तं मयूरमांसं हुनेत् कूटेन मरणं भवति। पूगीफल कटुतैलं लौहचूर्णं च हुनेत् समस्तदेहे विस्फोटका भवन्ति। क्षीरिपत्रबिल्वपत्रहोमेन शान्तिर्भवति। तिलसमिधः सकटुतैला हुनेत् तेन विद्वेषणं भवति। धत्तूरचूर्णं सास्थिचूर्णं सकटुतैललौहचूर्णं च हुते शीघ्रं शत्रुनाशो भवति। महामांसं सघृतं हुनेत् मनोऽभीष्टं सर्वं भवति।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डामरेश्वरमहातन्त्रे मन्त्रकोषनिरूपणं नाम

त्रयोदशः पटलः ॥१३॥

उपर्युक्त कथित मन्त्र को अमृतक्षेपणविधि से जप करे अर्थात् जप करने के उपरान्त तत्तद् विशिष्ट द्रव्यों से हवन करे तो यह अमृत-क्षेपण विधि कही जायगी। यदि मनुष्य इस मन्त्र से एक बार भी श्वेत कनेर के पुष्प, त्रिमधु (शहद, गुड़ तथा मदिरा) से युक्त करके हवन करे तो वह सर्वजन-प्रिय होता है। घृत के साथ अशोक के पुष्पों का हवन करे तो व्यक्ति शोकरहित हो जाता है। नष्टराज्य की प्राप्ति की इच्छा वाला मनुष्य यदि बेल के फलों से हवन करे तो भ्रष्टराज्य को प्राप्त कर लेता है। भ्रष्टराज्य की प्राप्ति के लिए घृतयुक्त कमल के पुष्पों से अथवा कुमुदिनी के पुष्पों से हवन करना चाहिए। शत्रु का निपातीकरण करने की इच्छा वाले साधक को कड़ुवे तेल से युक्त मोर के मांस का हवन करना चाहिए, कूठ और कड़ुवे तेल के हवन से शत्रु का मरण होता है। सुपारी, लौहचूर्ण और कड़ुवे तेल के हवन से शत्रु के सम्पूर्ण शरीर पर विस्फोटक हो जाते हैं। खिरनी के पत्र अथवा गूलर के पत्र और बेल-पत्र के हवन से शान्ति होती है। कड़ुवे तेल के साथ तिल की समिधाओं का हवन करे तो विद्वेषण होता है। कड़ुवे तेल के साथ लौहचूर्ण, धतूरे का चूर्ण तथा मनुष्य की हड्डियों के चूर्ण का हवन करने से शीघ्र ही शत्रु का नाश होता है। घृत के साथ महिष के मांस का हवन करे तो सम्पूर्ण मनोभिलाषाओं की प्राप्ति होती है॥

श्रीशिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत
उड्डामरेश्वरमहातन्त्र में मन्त्रकोषनिरूपण नामक
तेरहवाँ पटल समाप्त हुआ ॥१३॥

चतुर्दशः पटलः

॥ अथ योषिद्वशीकारमन्त्रः ॥

क्लीं कामातुरे काममेखले विषयिणि वररति भगवति अमुकं मे वशं कुरु वशं कुरु क्लीं नमः स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण भोजनकाले सप्तग्रासान् सप्तवाराभिमन्त्रितान् भुञ्जीत। सप्तमे दिवसे स्त्री वा पुरुषो वा वशीभवति स्वं च ददाति।

अथ स्त्रीवशीकरणमन्त्र—"क्लीं कामातुरे……क्लीं नमः स्वाहा।" भोजन के समय सात कवलों को इस मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित करके खायें और 'अमुक' के स्थान पर स्त्री या पुरुष का नाम लेना चाहिए तो सातवें दिन स्त्री अथवा पुरुष वश्य होता है और आत्मसमर्पण कर देता है। सात दिन तक उक्त कार्य को करना चाहिए।

॥ अथ शत्रुनाशमन्त्रः ॥

ॐ हुं स्वाहा।

इमं मन्त्रं त्रिसन्ध्यं जपेत्, शत्रुनाशो भवति।

अथ शत्रुनाशमन्त्र—"ॐ हुं स्वाहा" इस मन्त्र को तीनों सन्ध्याओं में जपे तो शत्रु का नाश होता है। जप करते समय शत्रु का ध्यान देवी के द्वारा त्रिशूल से मारते हुए करना चाहिए।

॥ अथ कङ्कालीवरदानमन्त्रः ॥

क्लीं कालि कालि महाकालि कोले किन्या स्वाहा।

इमं मन्त्रं पूर्वमयुतं जप्त्वा सन्ध्याकाले सहस्रैकं होमयेत्, ततः कङ्काली वरदा भवति, सुवर्णचतुष्टयं प्रत्यहं ददाति ।

अथ कङ्काली वरदानमन्त्र—"क्लीं कालि कालि""स्वाहा" इस मन्त्र को पहले दशहजार जप करे। तत्पश्चात् सन्ध्या के समय एक सहस्र हवन करे, तो कङ्काली (काली) वरदा होती हैं। देवी चार सुवर्ण की मुद्राएँ प्रतिदिन प्रदान करती हैं।

॥ अथाकर्षणमन्त्रः ॥

ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः हुं नमः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण पूर्वमेवायुतं जप्त्वा केवलमाज्यं हुनेत् अस्मादाकर्षणं भवति ।

अथ आकर्षणमन्त्र—"ॐ द्रां द्रीं""स्वाहा"इस मन्त्र को पहले दश हजार जपे। तत्पश्चात् केवल घृत का हवन करे तो इससे आकर्षण होता है। मन्त्र में 'हुं' के पूर्व आकर्षण वाले व्यक्ति का नाम ग्रहण करना चाहिए।

॥ अथापराकर्षणमन्त्रः ॥

ॐ द्रौं द्रौं द्रीं द्रीं हुं नमः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण पूर्वविधिना जप्त्वार्द्धमासादाकर्षणं भवति ।

अथ द्वितीय आकर्षण का मन्त्र—"ॐ द्रौं द्रौं""स्वाहा" इस मन्त्र को पूर्व विधि से जपे तो आधे महीने (१५ दिन) में इच्छित व्यक्ति का आकर्षण होता है।

॥ अथ खड्गभेदमन्त्रः ॥

ॐ हूं ॐ हूं हूं ह्रीं स्वाहा ।

इति पूर्वखड्गभेदः ।

अथ खड्गभेदमन्त्र—"ॐ हूं""स्वाहा" इस मन्त्र का सवा लाख जप करें और दशांश हवन करें। इस मन्त्र का जप करने से शत्रु की तलवार टूट जाती है।

॥ अथ सर्वसञ्जीविनीमन्त्रः ॥

ॐ हुं द्रीं द्रं द्रौं द्रः हुं हुं ।

अनेन मन्त्रेण सर्वज्वरनाशनं भवति ।

अथ सर्वसञ्जीविनीमन्त्र—"ॐ हुं द्रीं द्रं द्रौं द्रः हुं हुं" इस मन्त्र से दश हजार जप और दशांश हवन करना चाहिए। तत्पश्चात् जिसके नाम से इस मन्त्र का जप, हवन किया जायगा उस व्यक्ति के रोग और ज्वर नष्ट होंगे॥

॥ अथ सर्वजनवशीकरणमन्त्रः ॥

दीं हंसिनि स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण सर्वजनवशीकरणम् ।

अथ सर्वजनवशीकरणमन्त्र—'दीं हंसिनि स्वाहा" इस मंत्र का दश हजार जप और दशांश हवन करना चाहिए। तत्पश्चात् इस मंत्र से अभिमंत्रित ताम्बूल जिसे खिलायें, वह वशीभूत होता है।

॥ अथ विद्याधरत्वप्राप्तिमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं नमः ह्रीं फट् स्वाहा ।

इमं मन्त्रं साध्यनाम्नाऽयुतं जपेत् शवासनस्थितो हृदयं न प्रकाशयेत्...अमुकीं तां ... (नामनिर्देशपूर्वकं) सङ्गृह्य गुटिकां कृत्वा मुखे प्रक्षिप्य विद्याधरत्वं भवति ।

अथ विद्याधरत्वप्राप्तिमन्त्र—"ॐ ह्रीं नमः ह्रीं फट् स्वाहा" इस मंत्र को साध्य नाम से युक्त करके दश हजार जप करे, शवके आसन पर स्थित साधक हृदय को प्रकाशित न करे। अमुकी""(नाम)" उसको

सङ्ग्रहण करके गुटिका बनाकर मुख में डालकर मनुष्य विद्याधरत्व की प्राप्ति करता है। (यह मंत्र पाण्डुलिपि के कटी होने के कारण सन्दिग्ध है)।

॥ अथ पादुकासिद्धिमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं हुं नमः।

इमं मन्त्रं पूर्वविधिना जपेत् पादुकासिद्धिर्भवति।

अथ पादुकासिद्धिमंत्र—"ॐ ह्रीं हुं नमः" शवासन पर स्थित होकर उपर्युक्त मंत्र दश हजार रात्रि में जपे, तो पादुकासिद्धि होती है।

॥ अथ बेतालसिद्धिमन्त्रः ॥

ॐ क्षं क्षं ह्रीं हुं फट् स्वाहा।

इमं मन्त्रं पूर्वक्रमेण जपेद् वेतालसिद्धिर्भवति।

अथ वेतालसिद्धिमन्त्र—"ॐ क्षं क्षं ह्रीं हुं फट् स्वाहा" इस मंत्र को पूर्ववत् जपे तो वेताल की सिद्धि होती है।

॥ अथ अदृश्यकरणाञ्जनसिद्धिमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण नरकपालं गृहीत्वा तस्मिन्नरतैलं दत्त्वा तस्मिन् वायसचक्षुःसंवर्द्धिनीं वर्त्तिकां प्रज्वालयेत्, कृष्णपक्षामावास्यायां शनिवारेऽन्धकूपे श्मशाने वा शून्यायतने वा कज्जलं पातयितव्यम्, तावत्काले पूर्वोक्तं मन्त्रं जपेत् यावता कालेन वर्तिशेषं प्रज्वलति, अवसाने प्रभूतबलिदानं कर्त्तव्यं तत्र बलिस्तम्भमादाय तेन सिद्धाञ्जनेनाञ्जितनयनः सुरासुरैरपि न दृश्यतेऽन्यलोकस्य का कथा।

अथ अदृश्यकरण-अंजनसिद्धिमंत्र--"ॐ ह्रीं स्वाहा" इस मन्त्र से मनुष्य की खोपड़ी लेकर उसमें मनुष्य की चर्बी डालकर कौए के नेत्र को रूई में संवर्द्धित करके बत्ती जलायें। यह प्रयोग कृष्णपक्षीय अमावास्या में जब शनिवार हो, तब किसी अन्धे कुएँ, श्मशान या शून्य भवन में करना चाहिए। वहाँ इससे कज्जल बनाना चाहिए। जब तक शेष बत्ती न जल जाय, तब तक उपर्युक्त मन्त्र का जप करना चाहिए, समाप्ति में अत्यधिक बलिदान करना चाहिए। बलि के स्तम्भ के काष्ठ से शलाका बनाकर इस सिद्ध अंजन से नेत्रों को आंजने से वह साधक देवता और राक्षसों के द्वारा भी देखा नहीं जाता तो अन्य लोगों की क्या बात है? अर्थात् किसी के द्वारा दृष्टिगत नहीं होता।

॥ अथ शङ्खिनीविद्या ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रीं ह्रीं।

अथ शङ्खिनी विद्या--"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रीं ह्रीं" इस मन्त्र का दश हजार जप करें तथा दशांश हवन करना चाहिए। यह शङ्खिनी विद्या है। इस मन्त्र से कार्यों की सिद्धि होती है।

॥ अथ पुष्पाञ्जलिवेधमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं हुं।

अथ पुष्पांञ्जलिवेधमंत्र—"ॐ ह्रीं हुं" यह पुष्पाञ्जलि वेधमन्त्र है।

॥ अथ हुंकारवेधमन्त्रः ॥

हुं हुं।

अथ हुङ्कारवेधमन्त्र--"हुं हुं" यह हुङ्कारवेध मंत्र है।

॥ अथालयवेधमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं हुं।

अथ गृहवेधमन्त्र—"ॐ ह्रीं हुं" यह आलयबेध मन्त्र है।

॥ अथ शिवावेधमन्त्रः ॥

ह्रां ।

अथ शिवावेधमंत्र—"ह्रां" यह शिवावेध मंत्र है ।

॥ अथ भ्रमरावर्त्तसंघट्टवेधमन्त्रः ॥

ह्रीं ।

अथ भ्रमरावर्त्तसंघट्टवेधमंत्र--"ह्रीं" यह भ्रमरावर्त्तसंघट्टवेध मन्त्र है ।

॥ अथ मारणमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं हुं छः छः स्वाहा ।

लोहत्रिशूलं कृत्वा रुधिरेण विषं पिष्ट्वा तेन त्रिशूलं लिप्त्वाऽयुतेनाभिमन्त्रितं कृत्वा यस्य नाम्ना भूमौ निखनेत् तस्य शीघ्रं मृत्युर्भवति ।

अथ मारणमन्त्र--"ॐ ह्रीं हुं छः छः स्वाहा" लोहे का त्रिशूल बनाकर मनुष्य के रक्त से विष पीसकर, उससे त्रिशूल को लिप्त करके दश हजार उपर्युक्त मंत्र से अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से भूमि पर गाड़े, तो शीघ्र ही उसकी मृत्यु होती है ।

॥ अथ शत्रुवशङ्करी महाविद्या ॥

ॐ ह्रींकारि हूंकारि कपालसमावेधं बन्धुं नपुंसकं महाशयेऽभयङ्करि अमराख्यं कुरु कुरु ज्वरं हन हन आक्रोशात्कोलाहलं परां शक्त्याकर्षिणीं सर्वशक्तिप्रसङ्गिनीं शान्तिके हुं फट् स्वाहा ।

इमां महाविद्यां शत्रुवशङ्करीं मनसा स्मरेत् स सर्वत्र निर्भयो भवति ।

अथ शत्रुवशङ्करी महाविद्या--"ॐ ह्रींकारि "" शान्तिके हुं फट् स्वाहा" इस शत्रुवशङ्करी महाविद्या को मन से स्मरण करे तो वह सर्वत्र निर्भय हो जाता है ।

॥ अथ विषनाशनमन्त्रः ॥

ॐ ॐ ॐ हं हं हं हं सां सां सां सां ।

इमं मन्त्रं जपित्वा स्थावरजङ्गमविषनाशनं भवति ।

अथ विषनाशनमन्त्र—"ॐ ॐ ॐ हं हं हं हं सां सां सां सां" इस मन्त्र को दश हजार जप करे और तत्पश्चात् विष से पीड़ित व्यक्ति को अभिमन्त्रित करे तो स्थावरजंगम विष का नाश होता है ।

॥ अथोच्चाटनमन्त्रः ॥

ॐ अस्थि यस्थि विद्रा निद्रा सन्निविद्या रा टं टीं द्रीं समासं मटं टीं छं छं ।

अनेन मन्त्रेण काकपक्षं सहस्रकं हुनेद् यस्य नाम्ना तमुच्चाटयति ।

अथ उच्चाटनमन्त्र—"ॐ अस्थि यस्थि"" मटं टीं छं छं" इस मंत्र के द्वारा कौए के पंखों का एक हजार हवन जिसके नाम से किया जायगा, उसका उच्चाटन होता है ।

॥ अथ कवित्वप्राप्तिमन्त्रः ॥

स्त्रीं हं ।

अनेन मन्त्रेणायुते जप्ते सति कवित्वविद्या भवति, स्त्रीमणिशकुनविद्यां हि सञ्जपेत् झटिति कवित्वं करोति ।

अथ कवित्वप्राप्ति मंत्र—"स्त्रीं हं" इस मन्त्र का दश हजार जप करने पर कवित्व-विद्या की प्राप्ति होती है । यह स्त्रीमणिशकुनविद्या है, इसका जप करे तो शीघ्र कविता करने की बुद्धि प्राप्त होती है ।

॥ अथ कवित्वमन्त्रः ॥

हं ऐं हं हं ऐं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ।

इमं मन्त्रं सप्तवारं जप्त्वाधिकाधिकं कवित्वं च करोति ।

अथ कवित्वमन्त्र—"हं ऐं""वाग्वादिनि स्वाहा" इस मन्त्र को दश हजार जपे। तत्पश्चात् जब भी सात बार जप करें तो यह मन्त्र अधिकाधिक कवित्व-शक्ति देता है।

॥ अथ कवित्वप्रदोमन्त्रः ॥

ॐ हं छं छं छं ऐं नमः स्वाहा ।

सहस्रजपादधिकाधिकं कवित्वदोऽयं मन्त्रः ।

अथ कवित्वप्रदमन्त्र—"ॐ हं छं छं छं ऐं नमः स्वाहा" इस मन्त्र का सहस्र जप करने से अधिकाधिक कवित्वशक्ति प्राप्त होती है।

॥ अथ वाणीस्तम्भनमन्त्रः ॥

ॐ कं खं गं घं चं छं छं ।

अविलम्बं वक्तुः स्तम्भयति वाचम् आलोकनात् ।

अथ वाणीस्तम्भनमंत्र—"ॐ कं खं गं घं चं छं छं" इस मन्त्र का सवा लाख जप करे। तत्पश्चात् यदि वक्ता के सामने साधक इसका जप करे तो वह वक्ता की वाणी का शीघ्र ही स्तम्भन केवल देखने मात्र से ही कर देता है।

॥ अथ वाक्स्तम्भिनीविद्या ॥

हुं हुं हुं हुं खं खं खं खं छं छं ।

वाचां स्तम्भिनी वायुसञ्जीविनी विद्या ।

अथ वाक्स्तम्भिनी विद्या—"हुं हुं हुं हुं खं खं खं खं छं छं" यह वायुसञ्जीविनी तथा वाणी का स्तम्भन करने वाली विद्या है। इस विद्या का सवा लाख जप करने से सिद्धि होती है।

॥ अथालोकवेधमन्त्रः ॥

द्रीं ।

इत्यालोकवेधः परोक्षवेधः ।

अथ आलोकवेध मन्त्र—"द्रीं" यह आलोकवेध परोक्षवेध मन्त्र है।

॥ अथ सर्ववेधनमन्त्रः ॥

ह्लीं ।

अथ सर्ववेधनमन्त्र—"ह्लीं" यह सर्ववेधनमन्त्र है।

॥ अथ विस्फोटकसञ्जीविनी विद्या ॥

द्रं द्रौं द्रौं द्रौं द्रं अमुकं भेजि भेजि ह्लीं छं छं छं ।

इति विस्फोटक सञ्जीविनी अवलोकनात् कार्यसिद्धिकरी ।

अथ विस्फोटकसञ्जीविनी विद्या—"द्रं द्रौं द्रौं द्रौं द्रं अमुकं भेजि भेजि ह्लीं छं छं छं" यह विस्फोटक-सञ्जीविनी विद्या है। इस विद्या का दश हजार जप करना चाहिए, यह देखने मात्र से कार्य साधने वाली विद्या है।

॥ अथ सर्वभूतमारणमन्त्रः ॥

ॐ द्रां द्रीं पूर्वराक्षसान्नाशय सर्वाणि भञ्जय सन्तुष्टा मोहय महास्वने हुं हुं फट् स्वाहा ।

अथ सर्वभूतमारणमन्त्र—"ॐ द्रां द्रीं""हुं हुं फट् स्वाहा" इस मंत्र का पाँच हजार जप करना चाहिए। तत्पश्चात् भूतादिकों से पीड़ित व्यक्ति को अभिमन्त्रित करने से भूतादि का मारण होता है।

॥ अथ सर्वशान्तिकरी विद्या ॥

ॐ ह्रीं सः द्रां छः छः छः ।

दूर्वाक्षीरहोमेन सर्वशान्तिकरी विद्या ।

अथ सर्वशान्तिकरी विद्या—"ॐ ह्रीं सः द्रां छः छः छः" इस मंत्र के द्वारा दूब और दूध या खीर का सहस्र बार हवन करने से दोषादि की शान्ति होती है ।

॥ अथ कूटोत्सादमन्त्रः ॥

हुं पञ्चाण्डं चाण्डं द्रीं फट् स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण मनुष्यास्थिकीलकं सप्ताङ्गुलं सहस्रधाभिमन्त्रितं यस्य गेहे निखनेत् तस्य कूटमुत्सादितं भवति, उद्धृते सति पुनः स्वास्थ्यं भवति ॥

अथ कूटोत्सादमंत्र—इस मंत्र से मनुष्य की हड्डी की सात अंगुल कील को एक हजार बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़े तो उसका समूह (परिवार) उद्विग्न हो जाता है, उखाड़ने पर पुनः ठीक हो जाता है ।

॥ अथ शत्रुनिपातीकरणमन्त्रः ॥

हुं क्षां अमुकं फट् स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण पेचकपक्षिमांसं कटुतैलेन संयुतं होमयेत्, सहस्रहोमेन शत्रुं निपातयति ।

अथ शत्रुनिपातीकरणमन्त्र—'हुं क्षं अमुकं फट् स्वाहा" इस मंत्र से उल्लू पक्षी के मांस को कड़ुवे तेल के साथ हजार बार हवन करें तो शत्रु का निपातीकरण होता है । 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम लेना चाहिए ।

॥ अथ त्रैलोक्यविजया विद्या ॥

ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं धुं धुं हं हः स्वाहा ।

इयं हि त्रैलोक्यविजयानाम्नी विद्या । मनसा स्मरेत्सर्वकामप्रदोऽयं मन्त्रः ।

अथ त्रैलोक्यविजया विद्या—"ॐ श्रीं श्रीं"" हं हः स्वाहा" यह त्रैलोक्यविजया विद्या है । यह मन से स्मरण करने मात्र से सर्वकामप्रदा है ।

॥ अथ कर्णपिशाचिनीमन्त्रः ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं विश्वरूपिणि पिशाचिनि भूतभविष्यादिकं वद वद मे कर्णे कथय कथय हुं फट् स्वाहा ।

इमं मन्त्रं शुक्लप्रतिपदमारभ्य पूर्णिमापर्यन्तं सहस्रैकं त्रिसन्ध्यं जपेत्, प्रत्यहं पूतं जलं सघृतं भक्तपिण्डं हर्म्योपरि रात्रौ दद्यात्, त्रैलोक्ये यादृशी तादृशी वार्ता साधकस्य कर्णे भूतभविष्यादिकं च कथयति ।

अथ कर्णपिशाचिनीमन्त्र—"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हुं फट् स्वाहा" इस मंत्र को शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके पूर्णिमा तक तीनों सन्ध्याओं में एक-एक हजार जप करे, प्रत्येक दिन पवित्र जल, घी से युक्त भात के पिण्डों की बलि रात्रि में गृह के ऊपर देनी चाहिए तो कर्णपिशाचिनी त्रैलोक्य में होने वाली वार्ता (समाचार) साधक के कान में कहती है, भूत-भविष्य आदि की वार्ता भी साधक के कर्णविवर में आ जाती है ।

॥ अथ समस्तविषनाशनमन्त्रः ॥

ॐ रं रां सं सां लं लां हं हः सां सः खां खः तां तः धां सं स्फुं स्फः ह्रीं हुं हुं हुं क्षीं क्षीं क्षौं सौं सः छं छः धं सः

स्फुं स्फः ह्लीं हुं हुं हुं क्षीं क्षीं क्षौं सं फं फः हुं फट् स्वाहा ।

अयं समस्तविषनाशनमन्त्रः ।

अथ समस्तविषनाशनमन्त्र—"ॐ रं रां सं सां ... हुं फट् स्वाहा" इस मन्त्र को हजार बार जपे और दशांश हवन करे तो सिद्ध होता है। विषपीड़ित व्यक्ति को अभिमन्त्रित जल पिलाने से वह विष से मुक्त होता है।

॥ अथाकर्षणमन्त्रः ॥

सचराचरे ॐ सचराचरे ॐ हुं हुं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं क्ष क्ष क्षः ह सः ॐ सं हुं ह्लीं सर्वेश विष्णुबलेन शंकरदर्पेण वायुवेगेन रवितेजसा चन्द्रकान्त्या वैरं बाणशूर्पणं सर्वं विषहरं वद सर्वरक्षांसि हि नाशय नाशय भञ्जय भञ्जय सर्वदुष्टान् मोहय मोहय देव हुं फट् स्वाहा हुं फट् स्वाहा ।

इमं मन्त्रमष्टोत्तरसहस्रं शतं वा जप्त्वा सप्तमे दिवसे सिद्धिः समाकर्षणं भवति ।

अथ आकर्षणमन्त्र—"सचराचरे ॐ सचराचरे ... हुं फट् स्वाहा" इस मन्त्र को १००८ बार अथवा १०८ बार जपे तो सातवें दिन सिद्धि और आकर्षण होता है।

॥ अथ कूटोत्सादनमन्त्रः ॥

ॐ ह्लीं अमुकं छः छः ।

अनेन मन्त्रेण मानुष्यास्थिमयं कीलकमेकादशांगुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य गृहे निखनेत् तस्य कूटं चोत्सादितं भवति, उद्धृते पुनः स्वास्थ्यं भवति ।

अथ कूटोत्सादनमन्त्र—"ॐ ह्लीं अमुकं छः छः" इस मन्त्र के द्वारा मनुष्य के अस्थि की ग्यारह अंगुल कील सहस्र बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ें तो उसका परिवार उद्विग्न हो जाता है तथा खोद लेने पर पुनः ठीक हो जाता है।

॥ अथ देहनिपातनमन्त्रः ॥

ॐ ह्लीं काल कङ्काल महाकाल करालवदन अमुकं गृह्ण त्रिशूलेन भिन्द्धि भिन्द्धि खड्गेन छिन्द्धि छिन्द्धि हुं फट् छः छः स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण विभीतककाष्ठकीलकमेकविंशत्यङ्गुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य गृहद्वारे निखन्यते तस्य सद्यो देहनिपातनं भवति ।

अथ देहनिपातनमन्त्र—"ॐ ह्लीं काल ... हुं फट् छः छः स्वाहा" इस मन्त्र से बहेड़े की इक्कीस अंगुल कील सहस्र बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर के द्वार पर गाड़ी जाती है, शीघ्र ही उसके शरीर का निपातन हो जाता है।

॥ अथ वशीकरणमन्त्रः ॥

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं हुं अमुकं छः छः ।

अनेन मन्त्रेण सिद्धिकाष्ठमयं कीलकं नवाङ्गुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य गृहे निखन्यते स वश्यो भवति ॥

अथ वशीकरणमन्त्र—"ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं हुं अमुकं छः छः" इस मन्त्र से सिद्धि की लकड़ी की नव अंगुल कील सहस्र मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ें, तो वह वश्य होता है।

॥ अथ वशीकाराकर्षणमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मातङ्गिनि ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण राजिकां लवणघृतमिश्रितां यस्य नाम्ना सहस्रैकं होमयेत् तां स्त्रियं पुरुषं वा वशयत्याकर्षणं च करोति ।

अथ वशीकरण तथा आकर्षण मन्त्र--ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं · स्वाहा" इस मन्त्र के द्वारा राई-नमक-घी से मिश्रित करके जिसके नाम से एक हजार बार हवन करे, वह स्त्री या पुरुष वश में हो जाता है और उसका आकर्षण होता है।

॥ अथान्धीकरणमन्त्रः ॥

ॐ ह्री हूं छः छः ।

अनेन मन्त्रेण वाडवकाष्ठमयं कीलकं त्रयोदशाङ्गुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य गृहे निखनेत् स चक्षुर्भ्यामन्धो भवति ।

अथ अन्धीकरणमन्त्र--"ॐ ह्रीं हूं छः छः" इस मन्त्र के द्वारा वाडव काष्ठ की तेरह अंगुल कील सहस्र बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़े वह दोनों नेत्रों से अन्धा हो जाता है।

॥ अथ प्रेतकरणमन्त्रः ॥

ॐ छः ॐ छः छः ।

अनेन मन्त्रेण बिल्वकाष्ठस्य कीलकं दशाङ्गुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य गृहे निखनेत् सपरिवारस्य तस्य प्रेतत्वं भवति ।

अथ प्रेतकरणमन्त्र--"ॐ छः ॐ छः छः" इस मन्त्र से बेल की लकड़ी की दश अंगुल कील को सहस्र बार अभिमन्त्रित करके

जिसके घर में गाड़े तो परिवार सहित वह व्यक्ति प्रेत से ग्रस्त हो जाता है।

॥ अथ कन्यालाभमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं अमुकीं मे प्रयच्छ स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण पाटलाकाष्ठमयं पञ्चाङ्गुलं कीलकं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य नाम्ना देवतायतने निखनेत् स शीघ्रं कन्या लभते ।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते उड्डाम-
रेश्वरमहातन्त्रे मन्त्रकोषकथनं नाम
चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

अथ कन्यालाभमन्त्र--"ॐ ह्रीं अमुकीं मे प्रयच्छ स्वाहा" इस मन्त्र के द्वारा पाढर की लकड़ी की पाँच अंगुल कील सहस्र बार अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से देवी के मन्दिर में गाड़ दे, वह शीघ्र अपनी कन्या का विवाह साधक से कर देता है। मन्त्र में 'अमुकी' के स्थान पर अभीष्ट कन्या का नाम लेना चाहिए।

श्रीशिव-पार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत उड्डाम-
रेश्वरमहातन्त्र में मन्त्रकोषकथन नामक चतुर्दश
पटल समाप्त हुआ ॥१४॥

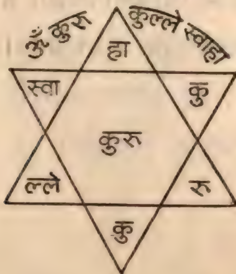
पञ्चदशः पटलः

॥ अथ सर्पोच्चाटनयन्त्रम् ॥

षट्कोणं यन्त्रं लिखित्वा तत्र षट्कोणे "ॐ कुरुकुल्ले स्वाहा।" इति मन्त्रं पूर्वकोणे लिखेत्। 'कुरु' इत्यक्षरद्वयमपरकोणे लिखेत्। अक्षरैकं पूर्वावर्त्तक्रमेण लेखितव्यम्। ततो भूर्जपत्रे इमं मन्त्रं लिखित्वा गृहद्वारे देहल्या एकदेशे धृते सति गृहसर्पमुच्चाटयति, विवरद्वारि धृते विवरस्थो नश्यत्येव।

अथ सर्पोच्चाटन यन्त्र—षट्कोण यन्त्र लिखकर वहाँ षट्कोण में "ॐ कुरुकुल्ले स्वाहा" यह मन्त्र पूर्व कोण में लिखे। 'कुरु' ये दो अक्षर दूसरे कोण में लिखें। तत्पश्चात् मन्त्र के एक-एक अक्षर पूर्वावर्त्त क्रम से लिखना चाहिए। इसके बाद भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखकर घर के द्वार की देहली के एक स्थान पर बाँध दे तो घर से सर्प उच्चाटित हो जाते हैं। सर्प की बिल के द्वार पर रखने से सर्प बिल में ही नष्ट हो जाते हैं।

॥ अथ सर्पोच्चाटबयन्त्र-चित्र ॥



॥ अथ शुभ्रीकरणयोगः ॥

रक्तकरवीरपुष्पमाम्रपत्रभस्मना लिप्तं तत्क्षणादेव शुभ्रं भवति तथा गन्धकधूपेनापि भावितेन शुक्तिर्भवति। लोके हयमार इत्याख्यस्य रक्तकरवीरस्य पुष्पं तूलवर्तिकागन्धकेन सह संयोज्य तत्क्षणादेव ज्वलति तथा टङ्कणहरिद्राभ्यां कृते लेपे कुङ्कुमकान्तिर्भवति।

अथ शुभ्रीकरणयोग—लाल कनेर (Red Nerium Odorum) के पुष्प, को आम (Mango) के पत्तों की राख के साथ लेपन करने से शरीर तत्क्षण शुभ्र वर्ण का हो जाता है। यदि उक्त लेपन के साथ गन्धक के धूप से शरीरादि को धूपित करे तो सीपी जैसी कान्ति होती है। संसार में 'हयमार' (घोड़ों को मारने वाला) इस नाम से प्रसिद्ध लाल कनेर (Red Nerium Odorum) के पुष्प को रूई की बत्ती और गन्धक के साथ मिलाकर जलाने से तत्क्षण जलने लगता है तथा लाल कनेर के पुष्प को टङ्कण तथा हल्दी के साथ लेप करने पर केशर के समान कान्ति होती है।

॥ अथ करवीरोत्पत्तियोगः ॥

पुराणशुष्कगोमयं यदा जले पातयेत्तदा भीमोष्मणा बुद्बुदमुत्पद्यते एवं गौरं तु भूम्युपरि भूतलं स्पृष्ट्वा रक्तकरवीरवृक्षो जायते इति। रूपके ताम्रे भ्रमर इव कुम्भे समर्पयेत् किञ्चिदनुयोगित्वेन मनोऽनुरागो भवति ताम्बूलरागतः, नश्यति हरिद्रारागो रविकिरणात्।

अथ करवीरोत्पत्तियोग—पुराना सूखा गोबर जब जल में गिराया जाता है तो भयङ्कर उष्मा से उसमें बुलबुले निकलते हैं, इसी प्रकार

भूमि पर विशुद्ध भूमि का स्पर्श करके रक्तकनेर का वृक्ष उत्पन्न होता है। भ्रमर के समान बने हुए चाँदी, ताम्र के घड़े में रक्तकनेर के पुष्पों को रखे तत्पश्चात् ताम्बूल (पान) के राग (रस) अथवा पान के साथ किञ्चित् प्रयोग करने से मन को प्रसन्नता होती है. मन में प्रेम की वृद्धि होती है। हल्दी का रंग सूर्य की किरणों के सम्पर्क से नष्ट हो जाता है।

॥ अथ क्षीरसम्पादनयोगः ॥

ॐ हुं सति कुरुहपक्षिशब्दतः (कुरलकुङ्कुमेन इति प्रसिद्धिः) क्रोञ्च इत्यपि तस्य नाम जिह्वाङ्कीकृतं, वामकरतलमध्यलग्नपरिलेपं दर्शयित्वा उदितविश्वधाराभस्मना पुनरपि करतललग्नात् प्रदर्श्य गत्याश्चर्यमते शिशुदुग्धभावितात् शोधयित्वा गवादिदुग्धं चोष्णं कांस्यपात्रे कृत्वा तीक्ष्णतरं धृत्वा तण्डुलनिक्षेपणेन क्षीरं भवति।

अक्ष क्षीर (खीर) सम्पादन योग—"ॐ हुं" इस प्रकार कुरर पक्षी के शब्द के समान मन्त्र को पढ़ते हुए ('कुरर' का नाम कुरल कुङ्कुम भी है तथा क्रौञ्च भी उसी पक्षी का नाम है) कुङ्कुम तथा क्रौंच के बीज पीस कर बायें करतल पर लेप करें, उस लेपित करतल को दिखाते हुए 'क्रीं' बीज का उच्चारण जिह्वा से करते रहें, पुनः उगी हुई विधारा की भस्म का उसी करतल पर लेप करे, वेग में आश्चर्य उत्पन्न करने वाले शिशुमार के दूध से करतल के लेप को भावित करके, उस हाथ से गाय आदि के गर्म दुग्ध को शोधित करे तत्पश्चात् काँसे के पात्र में दूध रखकर चलाते हुए चावलों के प्रक्षेपण से खीर सम्पादित हो जाता है।

॥ वार्ताकपाकयोगः ॥

भूर्जपत्रपुटकं तिलतैलेन दीपयित्वा विविधभक्ष्यान्नं

साधयेत् यथा लौहभाजने साध्यते। वार्ताकरञ्जिकापलमिति तत् सूत्रेण वेष्टयित्वा दीपयित्वा च ज्वालयेत् तेनापि सूत्रेण वेष्टिते च सूत्रं सन्दह्यते वार्ताकश्च पच्यते।

अथ बैंगनपाकयोग—भोजपत्र के दोने को तिल के तेल से भावित करके तिल के तेल की ज्वाला में सेंक दें। तत्पश्चात् जैसे लौह के पात्र में भक्ष्यान्न बनाये जाते हैं वैसे ही भोजपत्र के पुटक में उक्त वस्तुएँ बनायी जा सकती हैं। बैंगन को भोजपत्र के पुटक में लपेट कर सब ओर से घने सूत्र लगा दें, तत्पश्चात् दीपित करके जला दें। सूत्रों के द्वारा वेष्टित बैंगन पक जाता है तथा सूत्रादि जल जाते हैं।

॥ अथ चौरज्ञानयोगः ॥

आदिपङ्क्तौ सप्तस्वरान् संलिख्य तदधःपङ्क्तौ कादिसप्तवर्गान् संलिख्य, तदधःपङ्क्तौ हरिद्रादिक्रमेणालेखनीया, तत्र स्वरवर्णयोजनेन सङ्कोचनादक्षरकोष्ठादिसंस्पर्शनात् सञ्जायते। बहुषु मध्येषु दत्तसञ्ज्ञाकृतसङ्केतश्चौरः स्वदृष्टिमपि सप्तसप्तस्वरादौ जानाति। व्यापारमध्ये क्षणरसिकश्चौरो ज्ञायते कुतो भद्रद्रव्ये।

अथ चौरज्ञानयोग—आदि पंक्ति में सात स्वरों को लिखकर, उसके नीचे की पंक्ति में कवर्गादि सात वर्गों को लिखें। तत्पश्चात् उसके नीचे की कतार में हरिद्रादि क्रम से चोर का नाम लिखना चाहिए, वहाँ स्वरवर्ण के संयोजन, सङ्कोचन तथा अक्षरों के कोष्ठकादि के स्पर्श से चोर का ज्ञान करना चाहिए। बहुत-से चौर-नामों के मध्य में दिये गये नाम से किये गये संकेत वाला चोर अपनी दृष्टि को भी सात-सात स्वरादि में जानता है। व्यापार के मध्य में क्षणरसिक चोर ज्ञात हो जाता है, भद्रद्रव्य में वह कहाँ ज्ञात होगा?

कुत्रापि धत्तूरकबीजं क्षिप्त्वा तद्वा भक्षति तद्गुणादिफलं लभ्यते "असौ चौरः" इति। स्वल्पचर चौरास्तु वस्तुलाभे प्रदातारः। क्षीर्यर्कादिवृक्षदुग्धेन संलिखितं चौरनामाक्षरं करतलेऽपि लिखितमनन्तरं भूर्जपत्रे कृतमपि मर्दने स्पर्शयित्वा भक्षितुं ततो ददाति, अपर लिखितं चौरनाम पत्रयुक्तां चारिगृहगर्भमृत्तिका काण्डकं भवति। जले साधुनाम, पत्रयुक्तमृत्तिका च जले मज्जति ततः स्पृष्ट्वा क्रियते "असौ चौरः" इति। क्षीरितरुदुग्धलिखितक्षुद्रलेखेऽङ्गार चूर्णेन मर्दिताः स्पष्टा भवन्ति।

कहीं पर (अन्य आचार्यों के मत से) धत्तूर के बीज डालकर चोरों को भक्षण कराये, तो उसके गुणानुरूप फल की प्राप्ति होती है अर्थात् चोर स्वयं "यह चोर मैं हूँ" ऐसा कहने लगता है। स्वल्प चर संज्ञक चोर वस्तु के लाभ को प्रदान करने वाले होते हैं। दुग्ध वाले मदार आदि वृक्षों के दूध से चोर का नाम करतल पर लिखे और उसी नाम को भोजपत्र पर भी लिखे। करतल पर लिखे चौर-नाम का मर्दन करके चावलादि द्रव्य चोरों को भक्षण करने के लिए देना चाहिए। भोजपत्र पर लिखे चोर के नाम को पक्षियों के घोंसले के अन्दर की मिट्टी से संवेष्टित करे, फिर जल में डाले। यदि जल में उतरावे तो वह साधु नाम है, यदि जल में मृत्तिका सहित पत्रा डूब जाय तो उसका स्पर्श करके 'यह चोर है' ऐसा जान ले। दूध वाले वृक्षों के दूध से लिखित अङ्गार के चूर्ण से मर्दित करने पर वे स्पष्ट हो जाते हैं।

॥ अथ मसीकरणयोगः ॥

कूटोऽपि विपरीतलिखितवर्ण आदर्शादौ प्रतिकृतिभावापन्नो वर्णवैपरीत्यात् प्रतिविवर्द्धितन्यासोऽतिदृढा मसी

भवति। निम्बतालके समताम्रभाजने याममात्रमर्दितेन विधिरस्तु समभागता यथा आमलकीहरीतकीविभीतकनिम्बखादिराणां नीराख्याराज - करवीररसैः समस्त रसकज्जलमुक्तमर्दनप्रकारेण याममात्रेण प्रत्येकं येन प्रकारेण मसिद्रव्यं जायते।

अथ मसीकरण योग—उलटे लिखे हुए वर्णों वाला लोह दर्पण आदि में प्रतिबिम्ब के भाव को प्राप्त होने पर विपरीतता से प्रतिविवर्द्धित न्यास (सीधे) वाले वर्ण अति दृढ़ स्याही बनाते हैं। नीम का रस और हरताल समान भाग में लेकर ताँबे के पात्र में एक प्रहर मात्र मर्दन करे। समभागत्व वाली इसकी विधि यह है कि आँवला, हरड़ और बहेड़ा, नीम और खदिर का जल (रस) कनेर के रस के साथ मर्दन करे और उसमें हरताल डालें। एक प्रहर (३ घण्टे) तक सब मर्दित करके कज्जल बना लें, इस प्रकार मसि (स्याही) निर्मित होती है।

॥ अथ विविधकौतुकयोगाः ॥

शिरीषवृक्षत्वक्चूर्णं खदिरं बिना ताम्बूलरागं जनयति। तिर्यग्भूमौ नारिकेलफलमस्थिसहितं मुखेन कर्णिकायामेकेन प्रहारेण द्विधा भवति। लघुकाष्ठसूक्ष्मरचितपादुकां बिना पादैकं वा भ्रमति। गुञ्जाफलास्थिलिप्तां स्तम्भितां तदुत्तरपादं प्रयोज्य प्रपदात्यन्तं भ्रमति, तदा पादतले तालकारलग्नोत्तिष्ठति। एवं लघुकाष्ठनिर्मितासमकः पापपुरहासार्थं दत्तमुखवेष्टं किञ्चित् यस्तेन सितवस्त्रादौ कट्यां लग्नमुपतिष्ठमानस्तिष्ठति।

अथ विविधकौतुक योग--सिरस (Acacia Sirissa) के वृक्ष की छाल कत्थे (Acacia Catechu) के बिना ताम्बूल में लालिमा को उत्पन्न करता है। छाल सहित नारियल के फल को पृथ्वी पर तिरछा रखकर मुख के द्वारा कर्णिका (मध्य भाग) पर एक ही प्रहार करने से दो टुकड़ों में हो जाता है। हल्की लकड़ी से सूक्ष्म बनाये गये पादुका के द्वारा एक पैर के बिना भी मनुष्य चल सकता है, उसकी विधि यह है कि सफेद घुंघची (White Abrus Precatorius) के फलों को छिलके सहित पीसकर पादुका के ऊपर लेप कर दें, फिर छाया में सुखाकर उसके ऊपर पैर को रखकर चले और अन्त में भ्रमण करें तो पादुका पैर के तलुवे से लग्न होकर ही उठती है। इस प्रकार लघु काष्ठ से निर्मित मदनध्वज को स्मरमन्दिर के विकास हेतु मुख पर वेष्टन करके श्वेत वस्त्रादि से कटि में लगाने से उत्थित रहता है। (यहाँ भी पूर्वोक्त गुञ्जा (घुँघुची का प्रयोग करना चाहिए।)

एवं निविडाम्बरविहितजम्बादौ अधोमुखकांस्यभाजननिहितमङ्गारं न दहति वस्त्रं, दहति चापि शिशिरजलमिश्रितमपि आनतफलचूर्णभावितकलशस्तीक्ष्णश्च कांस्यभाजननिहितगुरु(ड्डना)प्यशक्तं न भवति। तदानीं तिक्तं याति यच्छुक्तं मिष्टमेति, कज्जलचविकाचूर्णाभ्यां क्रमसंलिखितपुस्तकमध्यकारणेऽपि यथेष्टया पच्यते—यथा कटाहे रम्यतरे मधुनाग्निप्रज्वलिते सकुण्डादौ जलपूर्णेऽधोमुखे उज्ज्वलं स्वयमेति, धूमाभ्यां स्वयमुद्गिरति वर्त्तिद्वये शशविष्ठापूर्णगर्भे कमठैरधोवर्त्तिविष्ठायितापि उपरि ज्वलज्ज्वालाज्वलितवर्त्तिज्वालामपि ज्वलितधूममङ्गारतीक्ष्णशिखया नाडिकादौ। बालिवातेऽयं प्रयोगः कार्यः।

इसी प्रकार गाढ़े वस्त्र में घुंघुची का लेप कर देने से अधोमुख काँसे के पात्र में रखे हुए अङ्गार (अग्नि) उस वस्त्र को नहीं जलाते हैं। शिशिर (ठंडे) जल से मिश्रित वस्त्र को अनन्तफल के चूर्ण से भावित कलश तीक्ष्ण काँसे के पात्र में रखा हुआ गेंडुआ वस्त्र को जलाने में असमर्थ नहीं होता है।

उस समय तिक्त हो जाता है, जो खट्टा है वह मीठा हो जाता है। कज्जल तथा चबिका (चव्य) के चूर्ण से क्रमशः लिखी गई पुस्तक का मध्य भाग बनाने में भी यथेष्ट पाक किया जाता है""जैसे सुन्दर कड़ाही (कटाह) में मधु से अग्नि प्रज्वलित करने पर अधोमुख जल से पूर्ण घड़े में धुएँ से उज्ज्वलत्व स्वयं ही आ जाता है। खरगोश के विष्ठा से भरी हुई दो बत्तियों में कच्छपों के द्वारा नीचे की बत्ती विष्ठा स्वयं ही उगलती है। ऊपर जलती हुई अग्नि की प्रज्वलित बत्ती की ज्वाला (लव) (जलते हुए धूम वाली उस ज्वाला) को अंगार की तीक्ष्ण शिखानाड़ी आदि में उसे उगल देती है। यह प्रयोग बालिवात में करना चाहिए।

वामकराङ्गुलिपर्यन्तं गोपितं सूत्रचिह्नमप्यचिह्नं च दृश्यते जनस्य विषमसमाक्षरेण वीक्षिते कालः असममपि पुरुषं जानीयात्। पञ्चदाडिमे शिखरे मसिगुणिते यद्वि भवति तावद् गुटिके विजानीयात्। अकालवक्रे सति कालमथफलचूर्णेन मिलित्वा भस्मना सह घृतेन काकञ्जिका सहसा भवति।

वाम हस्त की अंगुलियों तक गोपित सूत्रचिह्न भी चिह्नरहित देखा जाता है, लोगों के विषम और सम अक्षरों से देखने पर काल को असम (विषम) पुरुष का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। पाँच अनार के फलों पर स्याही के जितने निशान हों उनसे गुणा करने पर जो संख्या हो, तो वही गुटिकाओं (दानों) की संख्या जाननी चाहिए। अकाल में

इन्द्रिय के वक्र होने पर कालमथ-फल के चूर्ण के साथ मिलाकर भस्म और घृत से लेप करे तो सरल और बलयुक्त हो जाता है।

अगाधस्थिरजले धूमचूर्णेन लिखितचित्रादि भीतवद् भाषते न निमज्जतीति। समदशघृतजधृतसमावेशार्धं धृत-मूषलं तिष्ठति।

गहरे स्थिर जल में धूमचूर्ण से बनाये गये चित्रादि डरे हुए के समान बोलते हैं, डूबते नहीं हैं। समानरूपेण दश बार धोये हुए घृत से उत्पन्न मक्खन को इन्द्रिय पर समावेश (मालिश) करने पर मूसल के समान इन्द्रिय स्थिर होती है। अग्र भाग को छोड़कर अर्द्ध इन्द्रिय पर मालिश करनी चाहिए।

॥ अथ लक्ष्यवेधयोगः ॥

पुष्पनक्षत्रे कुङ्कुमावर्त्तितेन बाणेन दूरस्थमपि लक्ष्यं बालोऽपि विध्यते। षण्डं गोमयानां वर्त्तिदीपकान्त्या दग्धं मध्ये हतशशरुधिरं दृश्यते तत्रापि तैलं यत्किञ्चिदिति।

अथ लक्ष्यवेधयोग--पुष्य नक्षत्र में कुङ्कुम से लिप्त बाण से दूर स्थित लक्ष्य को बालक अथवा अनभ्यासी मूर्ख व्यक्ति भी बेध सकता है। गोबर की कण्डी को दीप की बत्ती बनाकर जलावें तो दीप में जो कुल तैल है, वह मारे गये खरगोश के रक्त के समान दिखाई पड़ता है।

॥ अथ सर्पदर्शनयोगः ॥

श्वेतार्कफले तूलकं सर्षपसमं तैलेनैकीकृतवर्त्तिकादीप ज्वालायां गृहोपरि वंशादिदारु सर्वं सर्प इव दृश्यते।

अथ सर्पदर्शनयोग--सफेद मदार के फल में सरसों का तेल डालकर सफेद मदार की रूई की बत्ती की ज्वाला में घर के ऊपर की बाँस आदि लकड़ी सब सर्प जैसी दृष्टिगत होती है।

॥ अथ जलज्वलनयोगः ॥

भुजगतैले सच्छिद्रभाण्डे भुजङ्गं क्षिप्त्वाऽच्छिद्र-भाण्डान्तरे व्यवस्थितमग्निपातेन जलं ज्वलति। तदैव तैलं पूर्वप्रकारेण कृष्णाष्टम्यां मण्डूकतैलाङ्कितेन सर्ववंशादि सर्पं भवति।

अथ जल ज्वलनयोग--सर्प की चर्बी को छिद्रयुक्त बर्तन में रखकर उसमें सर्प की ही बत्ती बनाकर डालें और छिद्ररहित दूसरे बर्तन में रखकर पानी भर दें तथा आग लगाकर जला दें, तो जल भी जलने लगता है। यदि कृष्णपक्ष की अष्टमी में वही सर्प का तेल (चर्बी) पूर्वोक्त प्रकार से मेढ़क की चर्बी से युक्त करके जलावें, तो घर के बाँस आदि सर्प-जैसे दिखायी पड़ने लगते हैं।

॥ अथ कलशरिक्तीकरणयोगः ॥

दीपकान्त्या दीपयित्वा यत्किञ्चिच्च कुक्कुटपक्षि-चञ्च्वादि विदग्धनाललक्षिता सती हृता लेखा यदायाति हरिकपालं धृत्वा भवति तदा तज्जलपूर्णं च कलशं रिक्तकं भवति।

अथ कलशरिक्तीकरण योग--एक घड़े में पानी भर कर मुर्गे की चोंच के आदि भाग से बनी नाल से दूसरा खाली घड़ा जोड़ दें। खाली घड़े में केकड़े को लाकर रखें और एक दीपक जलावें तो जल से युक्त घड़ा रिक्त हो जाता है।

॥ अथ नमेरुफलोत्पत्तियोगः ॥

गर्दभाचाररजस्तथा मरिचशुण्ठी पिप्पलीचूर्णेनोभाभ्यां वामचरणतलं लिप्त्वा तेनाहतो वृक्षः कल्पवृक्षश्च नमेरुफलं प्रसूयते।

अथ नमेरुफलोत्पत्ति योग—गधे के पैरों की धूलि, कालीमिर्च (Piper Nigrum), सोंठ (The Dry ginger) तथा पीपली (Piper Longum) को पीस कर बायें पैर के तलुवे में लेप करके वृक्ष और कल्पवृक्ष पर प्रहार करने से नमेरु (Elaeocarpus Granitrus) के फल उत्पन्न होते हैं।

॥ अथादृष्टिकरणयोगः ॥

कृष्णा गौः प्रसवकाले तद्वत्समानवर्णं जरायुरागतत्वेन प्रजारेण्डका फलं दृष्ट्वा मुष्टिगृहीते उच्चैस्तमसि फलं प्रायेण कृत्वा प्रदास्यति तथा कालायितमुद्रिका वरगोस्तनी स्यादापतिता गृहीता निक्षिप्ता तु अष्टौ पूर्वफलानि जनयति। समुस्ताहरितालमनःशिलाभ्यां नवनीतादियोगेन कारिताञ्जने मयूरस्य विष्ठया कृत्वा हस्तं लिम्पेत्, तत्र स्थितं द्रव्यं ब्रह्मापि न पश्यति।

अथ अदृष्टीकरण योग-काली गाय के प्रसव के समय उसी के समान वर्ण वाले जरायु में स्थित सन्तान के फल को देखकर मुट्ठी से पकड़ कर उच्च अन्धकार में उस बछड़े को ले जाये और गाय को लोहे की मुद्रिका पहना दे, तो गाय श्रेष्ठ स्तनों वाली हो जाती है, सन्तान (बछड़े) को पकड़ कर पुनः गाय के पास छोड़ें तो आठ पूर्ण फलों की सृष्टि करती है। नागरमोथा (Cyperus Rotundus), हरताल और मैनशिल के साथ मक्खन आदि के योग से बने हुए अञ्जन को लगाकर हाथ को मयूर की विष्ठा के द्वारा लिप्त करके मनुष्य जो वस्तु हाथ पर रखेगा, उस वस्तु को ब्रह्मा भी नहीं देख सकते हैं।

॥ अथ कीटोत्पत्तियोगः ॥

समुखं फलचूर्णं मिश्रोद्वर्तनकाजले क्षिप्त्वाक्रिमिसहस्रतुल्यं दृश्यते।

अथ कीटोत्पत्ति योग—समुद्रफल का चूर्ण मिलाकर उबटन के कज्जल में डाले तो हजारों कीड़ों-जैसा दृष्टिगत होता है।

॥ अथ कृषिनाशनयोगः ॥

हयकालीयकस्य शोषितस्य चूर्णं यवशीर्षकेण समुद्वर्त्तनेन तात्कालिकं सूक्ष्मजले निःक्षिप्य सबीजं कृषिरुच्चलति।

अथ कृषिनाशन योग—सुखाये हुए हयकालीयक का चूर्ण और जौ का आटा मिलाकर उबटन लगायें, और उबटन को ताजे जल में डाल दें, यदि वह जल कृषियुक्त खेत में डाला जाय तो बीज सहित कृषि नष्ट हो जाती है।

॥ अथ विविधकुतूहलयोगाः ॥

अधःपटेनाशस्यावश्यादि दृष्ट्वा पादाग्रस्थितं द्रव्यं दृश्यते। जपाकुसुमोद्वर्तिताङ्गं छुरिकादौ कणाचितैककोटकाफलाख्यायन्त्रिते रुधिरवज्जडितं, क्षीरिवृक्षत्वगवभाविता तैलाक्ता बस्त्रवर्त्तिजलैर्ज्वलति। एवं समुद्रतैलयुक्तापि वर्त्तिका ज्वलति।

अथ विविध कुतूहल योग—अधोवस्त्र के द्वारा फसल पर स्थित ओस को पैरों के अग्र भाग पर लगायें और पुनः अवलोकन करें तो द्रव्य दिखायी पड़ता है, वो ओस की बूंदें मोती के समान दृष्टिगत होती हैं। गुड़हल (The China rose) पुष्पों से उद्वर्त्तित छुरी आदि पीपरी (Piper Longum) के लेप से लिप्त करके कटहल के फल को काटें तो रक्त जैसा जम जाता है। खिरनी के वृक्ष की छाल से भावित वस्त्र की बत्ती तेल से युक्त करके दीपक में रखे और उसमें जल भर दे तो वह बत्ती जल के द्वारा भी प्रज्वलित होती है। इसी प्रकार समुद्र (Leea Macrophylla) के तेल से युक्त बत्ती भी जल में प्रज्वलित होती है।

द्रोणकपुष्पादीनि क्षुद्रपुष्पाणि चूर्णाग्रे विनिःक्षिप्य धत्तूरबीजानि जलसिक्तानि सजीववत् फलन्ति। इक्षुः कुक्कुटीबीजचूर्णे सुदर्शनपत्रमिव तत्क्षणात् जायते। मसृण-कर्पटं निर्मलकांस्यभाजनेऽर्कसम्मुखं स्थापनेन वर्तुलकयो-गादग्निरुत्तरति।

इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृते
उड्डामरेश्वरमहातन्त्रे पञ्चदशः पटलः ॥१५॥

गूमे आदि के पेड़ में ही सूखे हुए पुष्पों का चूर्ण धतूरे के बीजों पर छोड़कर जल से सींच दे तो वे बीज सजीववत् हो जाते हैं अर्थात् तुरन्त जमने लगते हैं। गन्ने को कुक्कुटी के बीज के चूर्ण में रखकर जल से सींचने पर गन्ने में सुदर्शनवृक्ष के समान तत्क्षण पत्तियाँ आ जाती हैं। चिकने कपड़े को स्वच्छ कांसे के बर्तन में रखकर सूर्य के सम्मुख स्थापित करके गोल आतशी शीशे से प्रकाश करने पर अग्नि उत्पन्न होती है।

श्री शिवपार्वतीसंवादात्मक वीरभद्रेश्वरतन्त्रोद्धृत
उड्डामरेश्वरमहातन्त्र में पन्द्रहवाँ पटल
समाप्त हुआ ॥१५॥

विशेष :—उड्डामरेश्वर तन्त्र के प्रस्तुत पन्द्रहवें पटल में भाषा की अस्त-व्यस्तता और प्रयोगों की अपूर्णता से यह पटल नितान्त अस्पष्ट और भ्रामक है, लेखक इसकी व्याख्या से स्वयं सन्तुष्ट नहीं है, तथापि विविध तन्त्र-ग्रन्थों के अवलोकन और बुद्धि से यत्किञ्चित् लेखक के द्वारा लिखा गया है। सुधीजन त्रुटियों को क्षमा करेंगे और आशा है कि वे इस सन्दर्भ में मेरा मार्ग आलोकित करके त्रुटियों के सर्वथा परिमार्जन से अपने गौरव की वृद्धि तथा मेरी सेवा को प्रोत्साहित करेंगे।

॥ इत्युड्डामरेश्वरतन्त्रं समाप्तम् ॥

—०—

श्लोकानुक्रमणिका

श्लोकानुक्रमणिका

॥ इत्युड्डामरेश्वरतन्त्रश्लोकानुक्रमणी ॥

